E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

RNINO.UPHIN/2015/63398

11 YEARS ANNIVERSARY

वर्ष -11 अंक -284 | प्रयागराज, गुरुवार 19 फरवरी, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

चीनी रोबोट को अपना बताने पर गलगोटिया यूनिवर्सिटी विवाद में,दावा- सरकार ने एआई समिट कैम्पस खाली करने को कहा

नई दिल्ली। सरकार ने गलगोटिया यूनिवर्सिटी को नई दिल्ली में चल रही एआई समिट के एक्सपो एरिया से बाहर कर दिया गया है। न्यूज एजेंसी ने सरकारी सूत्रों के हवाले से यह जानकारी दी है। यह कार्रवाई उस वीडियो के वायरल होने के बाद हुई है, जिसमें यूनिवर्सिटी ने एक चाइनीज रोबोटिक डॉग को अपनी खुद की खोज बताया था। हालांकि, यूनिवर्सिटी की एक प्रोफेसर ने कहा कि उन्हें सरकार की इस कार्रवाई के बारे में जानकारी नहीं है। वे अभी भी समिट में हैं। वीडियो में यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर नेहा सिंह कह रही हैं कि इस रोबोटिक डॉग का नाम 'ओरियन' है। इसे गलगोटिया यूनिवर्सिटी के 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' ने तैयार किया है। उन्होंने ये भी कहा कि यूनिवर्सिटी एआई के क्षेत्र में 350 करोड़ रुपए का निवेश कर रही है। इस वीडियो के सामने आने के बाद कई टेक एक्सपर्ट्स और यूजर्स ने दावा किया कि यह असल में चीनी कंपनी 'यूनिट्री' का 'उद2' मॉडल है, जो बाजार में 2-3 लाख रुपए में उपलब्ध है। वीडियो वायरल होने के बाद गलगोटिया यूनिवर्सिटी ने कहा- हमने लगातार कैंपस में बेहतरीन टेक्नोलॉजी लाने की कोशिश की है। क्यों? क्योंकि जब छात्र नई चीजें देखते हैं, तभी उनकी सोच विकसित होती है। और यही सोच नए रचनाकारों को जन्म देती है। हाल ही में यूनिट्री से लिया गया रोबोटिक डॉग इसी सफर का एक हिस्सा है। यह सिर्फ दिखाने के लिए रखी गई कोई मशीन नहीं है, यह एक चलता-फिरता क्लासरूम है। हमारे छात्र इस पर प्रयोग कर रहे हैं, इसकी क्षमताओं को परख रहे हैं और इस प्रक्रिया में अपना ज्ञान बढ़ा रहे हैं। हम यह साफ कर देना चाहते हैं कि गलगोटिया ने यह रोबोटिक डॉग नहीं बनाया है और न ही हमने कभी ऐसा दावा किया है।

लेकिन हम ऐसे दिमाग तैयार कर रहे हैं जो जल्द ही भारत में ऐसी ही टेक्नोलॉजी को डिजाइन करेंगे, उनकी इंजीनियरिंग करेंगे और उन्हें यहीं बनाएंगे। इनोवेशन की कोई सीमा नहीं होती। सीखने की भी नहीं होनी चाहिए। हम दुनियाभर से बेहतरीन टेक्नोलॉजी लाना जारी रखेंगे ताकि हमारे छात्र उनका अध्ययन कर सकें, उन्हें चुनौती दे सकें और उनमें सुधार कर सकें और अंत में वर्ल्ड-क्लास समाधान तैयार कर सकें। प्रोफेसर नेहा सिंह ने कहा कि यह विवाद इसलिए हुआ क्योंकि शायद बातें साफ तौर पर नहीं रखी गईं। मैं इसकी जिम्मेदारी लेती हूं। यह सब बहुत जोश और उत्साह में बहुत जल्दी-जल्दी हुआ। सरकार द्वारा एक्सपो एरिया खाली करने के सवाल पर उन्होंने कहा- मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है। मुझे बस इतना पता है कि आज हम सब यहां मौजूद हैं। यूनिवर्सिटी के स्पष्टीकरण के बाद सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स ने इस पोस्ट पर एक 'कम्युनिटी नोट' जोड़ दिया। इसमें कहा गया कि यूनिवर्सिटी का यह दावा कि उन्होंने इसे अपना नहीं बताया, भ्रामक है। एक्स का कम्युनिटी नोट एक ऐसा फीचर है, जिसमें आम यूजर्स ही किसी भ्रामक पोस्ट पर सही जानकारी और संदर्भ जोड़कर उसे फैक्ट-चेक करते हैं। कांग्रेस बोली- मोदी सरकार ने दुनिया में देश का मजाक बनवाया- कांग्रेस ने इस मामले पर कहा कि मोदी सरकार ने एआई के मामले में दुनिया भर में भारत का मजाक बनवाया है। एआई समिट में चीन के रोबोट्स को हमारा बताकर दिखाया जा रहा है। चीनी मीडिया ने हमारा मजाक उड़ाया है। यह भारत के लिए वाकई शर्मिंदगी की बात है। इससे भी ज्यादा शर्मनाक बात यह है कि मोदी के मंत्री अश्विनी वैष्णव भी इसी झूठ में शामिल हैं और भारतीय समिट में चीन के रोबोट्स को प्रमोट कर रहे हैं। मोदी सरकार ने देश की छवि को ऐसा नुकसान पहुंचाया है जिसकी भरपाई नहीं हो सकती। वहीं राहुल गांधी ने कहा कि भारत के टैलेंट और डेटा का सही इस्तेमाल करने के बजाय, यह एआई समिट एक बिखरा हुआ पीआर तमाशा बनकर रह गया है - जहां भारत का डेटा बिकने के लिए रखा है और चीन के प्रोडक्ट्स का दिखावा किया जा रहा है.

राज्यसभा की 37 सीटों पर 16 मार्च को चुनाव,इनमें 25 सीटें विपक्ष एनडीए की 12, पवार, सिंघवी का कार्यकाल अप्रैल में खत्म हो रहा

नई दिल्ली। चुनाव आयोग ने बुधवार को 10 राज्यों की 37 राज्यसभा सीटों पर चुनाव की तारीखों का ऐलान कर दिया। 37 सीटों के लिए 16 मार्च को चुनाव कराया जाएगा। जो सीटें खाली हो रही हैं उनमें 12 एनडीए के पास हैं, 25 पर विपक्ष का कब्जा है। सबसे ज्यादा महाराष्ट्र की 7, तमिलनाडु की 6 और पश्चिम बंगाल-बिहार की 5-5 सीटों पर चुनाव कराया जाएगा। शरद पवार, रामदास अठावले, कणिमोझी, तिरुचि शिवा, राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश का कार्यकाल 2 अप्रैल को समाप्त हो रहा है। 16 मार्च को सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे के बीच वोटिंग होगी और उसी दिन शाम 5 बजे वोटों की गिनती की जाएगी। राज्यसभा सांसदों के लिए चुनाव की प्रक्रिया अन्य चुनावों से काफी अलग है। राज्यसभा के सदस्य अप्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं यानी जनता नहीं बल्कि विधायक इन्हें चुनते हैं। चुनाव हर दो साल में होते हैं, क्योंकि राज्यसभा एक स्थायी सदन है और इसके एक-तिहाई सदस्य हर दो साल में रिटायर होते हैं। राज्यसभा सीटों की कुल संख्या 245 हैं। इनमें से 233 सीटों पर अप्रत्यक्ष रूप से चुनाव होते हैं और 12 सदस्यों को राष्ट्रपति मनोनीत करते हैं। राज्यसभा चुनाव में जीत के लिए कितने वोटों की जरूरत होती है, ये पहले से ही तय होता है। वोटों की संख्या का कैलकुलेशन कुल विधायकों की संख्या और राज्यसभा सीटों की संख्या के आधार पर होता है। इसमें एक विधायक की वोट की वैल्यू 100 होती है। महाराष्ट्र की 7 सीटों के उदाहरण से फॉर्मूला समझते हैं.राज्यसभा चुनाव में, किसी भी उम्मीदवार को जीतने के लिए एक निश्चित संख्या में मतों की आवश्यकता होती है, जिसे जीतने का कोटा कहा जाता है। महाराष्ट्र विधानसभा में कुल 288 विधायक हैं। खाली हो रही सीटें 7 हैं। राज्यसभा चुनाव के लिए फॉर्मूला- कुल विधायकों की संख्य x100/(राज्यसभा की सीट+1)= +1 288X100/(7+1)= +1 28800/8= +1 3600= +1 3601 चूंकि एक विधायक के वोट की वैल्यू 100 होती है। इसलिए महाराष्ट्र में अभी एक राज्यसभा सीट पर जीत के लिए कम से कम 36 विधायकों की जरूरत होगी। बैलेट पेपर पर खास पेन से होगी वोटिंग-चुनाव आयोग ने कहा है कि वोट डालते समय केवल रिटर्निंग ऑफिसर की ओर से दिए गए तय मानक का वॉयलेट रंग का स्केच पेन ही इस्तेमाल होगा। किसी अन्य पेन का उपयोग मान्य नहीं होगा।आयोग ने कहा है कि चुनाव शांतिपूर्ण और निष्पक्ष तरीके से कराने के लिए पर्यवेक्षक नियुक्त किए जाएंगे। चुनाव आयोग ने असम, केरल, पुडुचेरी, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में ईवीएम और वीवीपैट को लेकर जागरूकता अभियान भी शुरू किया है।आयोग के मुताबिक 5 राज्यों और एक केंद्रशासित प्रदेश में 1.20 लाख से ज्यादा लोगों ने डेमो कैंप में हिस्सा लिया। 1.16 लाख से ज्यादा लोगों ने मॉक वोट डाले। 10 फरवरी तक 29 हजार से ज्यादा पोलिंग स्टेशन लोकेशन मोबाइल डेमो वैन से कवर किए जा चुके हैं। यह अभियान ईवीएम डेमो सेंटर और मोबाइल वैन के जरिए चलाया जा रहा है।

चांदी आज रु4 हजार बढ़कर रु2.37 लाख पर पहुंची:सोना रु98 महंगा होकर रु1.52 लाख हुआ, देखें अपने शहर में सोने के दाम

नयी दिल्ली। सोने-चांदी की कीमत में आज यानी 18 फरवरी को बढ़त है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के अनुसार, एक किलो चांदी 4 हजार रुपए बढ़कर 2.37 लाख रुपए पर पहुंच

गई है। इससे पहले कल ये 2.33 लाख रुपए पर थी। वहीं 10 ग्राम 24 कैरेट सोना 98 रुपए महंगा होकर 1.52 लाख रुपए पर पहुंच गया है। सर्राफा बाजार में 29 जनवरी को सोने ने 1.76 लाख रुपए और चांदी ने 3.86 लाख रुपए का ऑल टाइम हाई बनाया था। 2025 में सोना रु57 हजार (75फीसदी) बढ़ा है। 31 दिसंबर 2024 को 10 ग्राम 24 कैरेट सोना रु76 हजार का था, जो 31 दिसंबर 2025 को रु1.33 लाख रुपए हो गया।चांदी इस दौरान रु1.44 लाख (167फीसदी) बढ़ी। 31 दिसंबर 2024 को एक किलो चांदी रु86 हजार की थी, जो साल के आखिरी दिन रु2.30 लाख प्रति किलो हो गई।

इक्विनॉमिक्स रिसर्च के फाउंडर और एमडी जी. चोक्कालिंगम ने कहा कि सोने-चांदी के साथ ही कॉपर जैसे इंडस्ट्रियल मेटल्स अत्यधिक अस्थिर रहेंगे। अगले 6 महीनों में इनके दाम कम से कम 10फीसदी और घट सकते हैं। वैश्विक आर्थिक विकास में मंदी, क्रिप्टोकरेंसी और टेक्नोलॉजी शेयरों में भारी गिरावट जैसे जोखिम कमोडिटी की कीमतों पर असर डाल सकते हैं। सोना खरीदते समय इन 2 बातों का रखें ध्यान-1. सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें: हमेशा ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड का हॉलमार्क लगा हुआ सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें। ये नंबर अल्फान्यूमेरिक यानी कुछ इस तरह से हो सकता है- 4524। हॉलमार्किंग से पता चलता है कि सोना कितने कैरेट का है। 2. कीमत क्रॉस चेक करें: सोने का सही वजन और खरीदने के दिन उसकी कीमत कई सोर्सेज (जैसे इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट) से क्रॉस चेक करें। सोने का भाव 24 कैरेट, 22 कैरेट और 18 कैरेट के हिसाब से अलग-अलग होता है।

रिजिजू बोले- राहुल देश की सुरक्षा के लिए खतरा,उनके नक्सलियों से रिश्ते; संसद में उनका बर्ताव बचकाना, ऐसा अपोजिशन लीडर इतिहास में नहीं देखा

नयी दिल्ली। केंद्रीय संसदीय मामलों के मंत्री किरेन रिजिजू ने बुधवार को कहा कि राहुल गांधी भारत की सुरक्षा के लिए सबसे खतरनाक इंसान बन गए हैं। वे भारत विरोधी ताकतों से जुड़े हैं। वे नक्सलियों, उग्रवादियों और जॉर्ज सोरोस जैसे लोगों से मिलते हैं। रिजिजू ने ये बातें न्यूज एजेंसी को दिए इंटरव्यू में कहीं।रिजिजू ने आगे कहा कि संसद में राहुल का बर्ताव बचकाना और गैर-जिम्मेदाराना है। एक लीडर ऑफ अपोजिशन पूरे विपक्ष को रिप्रेजेंट करता है। संसद के बाहर जाकर लोगों को देशद्रोही कहना, ड्रामा वाले सिट-इन करना और एक अनपब्लिश्ड किताब

लहराना। यह सब बच्चों जैसा बर्ताव है। हमने भारत के इतिहास में ऐसा लीडर ऑफ अपोजिशन कभी नहीं देखा।उन्होंने कहा कि कांग्रेस का काम सिर्फ संसद में हंगामा करना है। कांग्रेस कहती है कि हम उन्हें बोलने नहीं देते। लेकिन जैसे ही वे (राहुल) अंदर आते हैं। हंगामा, बैनर और नारेबाजी शुरू हो जाती है। कांग्रेस के सीनियर लीडर मणिशंकर अय्यर के इस बयान पर कि 'मैं गांधीवादी, नेहरूवादी, राजीववादी हूं, लेकिन राहुलवादी नहीं हूं।' इस पर रिजिजू ने कहा कांग्रेस के पास कभी मजबूत लीडर हुआ करते थे, जिनकी बातों और काम में मैच्योरिटी थी। धीरे-धीरे कांग्रेस राहुल गांधी जैसी हो गई है और उनके आस-पास रहने वाले लोग भी उनके जैसे हो गए हैं।

13 जिलों में बारिश-ओले का अलर्ट, उप्र में बिगड़ेगा मौसम,चलेंगी हवाएं

लखनऊ। यूपी में ठंड धीरे-धीरे कम हो रही है। सिर्फ सुबह

और रात में ही हल्की ठंड पड़ रही है। दिन में कड़ी धूप निकल रही है। हालांकि, प्रदेश में फिर से मौसम बिगड़ने का अनुमान है। मौसम विभाग ने प्रदेश में आज यानी 18 और 19 फरवरी को बारिश-ओले का अलर्ट जारी किया है।मौसम विभाग के अनुसार, बुधवार को पश्चिमी यूपी के 13 जिलों में बारिश हो सकती है। इस दौरान 30 से 40 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं भी चल सकती हैं। कुछ जगहों पर आकाशीय बिजली कड़कने और ओले गिरने की भी संभावना है।मंगलवार की बात करें तो 31.6 डिग्री के साथ बांदा सबसे गर्म जिला रहा। 31.2 डिग्री के साथ हमीरपुर दूसरे और 31 डिग्री के साथ प्रयागराज तीसरे नंबर पर रहा। सबसे कम न्यूनतम तापमान 15.4 डिग्री इटावा में रिकॉर्ड किया गया। मौसम वैज्ञानिक अतुल जी ने बताया-अगले 24 घंटों के दौरान अधिकतम तापमान में कोई बड़ा बदलाव नहीं होने की संभावना है। न्यूनतम तापमान में 1 से 2 डिग्री की बढ़ोतरी हो सकती है। इसके बाद न्यूनतम तापमान में धीरे-धीरे 2 से 3 डिग्री तक की गिरावट दर्ज की जा सकती है। अगर तेज हवा के साथ बारिश हुई तो गेहूं और सरसों की फसल गिर सकती है। इससे दाने कमजोर हो जाएंगे और पैदावार पर असर पड़ेगा। इसलिए मौसम विभाग ने किसानों को अलर्ट रहने को कहा है और खुले स्थानों पर कटी हुई फसलों को रखने से मना किया है।बुधवार को कानपुर, मेरठ समेत कई शहरों में सुबह हल्के बादल छाए रहे। वेस्टर्न डिस्टर्बेंस के कारण राजस्थान का मौसम बदल गया है। जयपुर, अलवर, टोंक सहित कई जिलों में बुधवार सुबह बरसात हुई। जयपुर शहर के आसपास के इलाकों में ओले भी गिरे। तापमान में गिरावट के साथ हवा में भी ठंडक बढ़ गई है। वहीं, उत्तराखंड में भी आज, 18 फरवरी को 5 जिलों में बारिश और बर्फबारी की संभावना है। इनमें उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, चमोली, बागेश्वर और पिथौरागढ़ के ऊंचाई वाले इलाके शामिल हैं। मौसम विज्ञान केंद्र, देहरादून के अनुसार 3300 मीटर और उससे अधिक ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी हो सकती है। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक, राजस्थान में हो रही बारिश का असर शाम या दोपहर तक यूपी के कुछ इलाकों में भी हो सकता है।

भाजयुमो के पूर्व उपाध्यक्ष पर चाकू से हमला, कानपुर में पीठ में मारी गोली; बजरंगदल का नेता अरेस्ट

कानपुर। कानपुर में भाजयुमों के पूर्व जिला उपाध्यक्ष पर चाकू से ताबड़तोड़ 7 से अधिक वार किए। इसके बाद गोली मार दी गई। मरा

समझकर सभी आरोपी भाग गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने हैलेट में भर्ती कराया गया। जहां हालत गंभीर बनी है। घटना का सीसीटीवी सामने आने के बाद मंगलवार देर रात पुलिस ने आरोपी बजरंग दल के पूर्व नगर संयोजक को गिरफ्तार कर लिया है। भाजपा युवा मोर्चा के पूर्व जिला उपाध्यक्ष सोनू राठौर नवाबगंज के शिवराज सिग्नेचर सिटी में रहते है। छपेड़ा पुलिया पर उनकी पूजन सामग्री की दुकान है। मंगलवार की रात वह रावतपुर में एक शादी समारोह में शामिल होने के लिए गए थे। वहां से करीब 12 बजे छपेड़ा पुलिया स्थित दुकान के पास से लौट रहे. इसी बीच बजरंग दल के पूर्व नगर संयोजक अभिषेक विश्वकर्मा, साजन उर्फ रोहित, बाबा लाइट ने अपने साथियों के साथ मिलकर उस पर मारपीट शुरू कर दी।परिवार के लोगों ने बताया-मारपीट के दौरान आरोपियों ने सोनू पर चाकू से एक के बाद एक करीब 7 से 8 वार किए। इसके साथ ही उसे पीठ पर गोली भी मार दी। घटना की जानकारी पर भाजयुमो के जिलाध्यक्ष शिवांग मिश्रा मौके पर पहुंचे। डीसीपी एसएम कासिम आबिदी ने बताया-'दोनों पक्षों के बीच दुकान को लेकर के लंबे समय से विवाद चल रहा है। इसी के चलते मंगलवार की देर रात सोनू को अकेला पाकर अभिषेक, साजन ने अपने साथियों के साथ मिलकर उसे पर हमला कर दिया और उसे मरा समझ कर छोड़कर भाग गए।' डीसीपी ने बताया- आरोपी अभिषेक विश्वकर्मा को उसके घर से गिरफ्तार कर लिया गया है। डॉक्टरों ने सोनू राठौर को खतरे से बाहर बताया है। घटना से जुड़ा सीसीटीवी फुटेज सामने आया है, जिसके आधार पर अन्य आरोपियों की तलाश की जा रही है। पुलिस पूछताछ में आरोपी अभिषेक ने बताया- मैं अपने घर के बाहर रात में खड़ा था। तभी सोनू राठौर अपनी दुकान से लौटते समय मेरे सिर मारा। मैंने मना किया तो बोले कि अभी तुम्हें मारा है। तुम्हारे बाप को भी मारूंगा। इसी के बाद हम लोगों को गुस्सा आ गया।

शंकराचार्य के खिलाफ कैराना कोर्ट पहुंचे आशुतोष महाराज

प्रयागराज। शंकराचार्य अवि मुक्तेश्वरानंद और श्रीकृष्ण जन्मभूमि के मुख्यवादी व पक्षकार आशुतोष महाराज के बीच विवाद बढ़ता जा रहा है। अविमुक्तेश्वरानंद के खिलाफ प्रयागराज की अदालत में यौन शोषण

का वाद दाखिल करने के बाद से दोनों के बीच जुबानी जंग जारी है। इसी बीच अब जगद्गुरु रामभद्राचार्य के शिष्य आशुतोष ब्रह्मचारी ने अविमुक्तेश्वरानंद के खिलाफ मानहानिकारक बयान और डिजिटल दुष्प्रचार का आरोप लगाते हुए कैराना की कोर्ट में सोमवार को परिवाद दायर किया है। यह वाद अपर न्यायिक मजिस्ट्रेट शामली के समक्ष विधिक परिवाद के रूप में दायर किया गया है।

अब 9 मार्च को सुनवाई होगी। आशुतोष महाराज ने कहा- हाल के दिनों में सोशल मीडिया एवं राष्ट्रीय मीडिया मंचों पर भ्रामक एवं मानहानिकारक प्रचार किया गया है। विशेष रूप से अविमुक्तेश्वरानंद ने वीडियो बयान में मुझे 'पेशेवर अपराधी', 'पेशेवर हिस्ट्रीशीटर', 'जेल काटने वाला पेशेवर अपराधी' एवं 'बदमाश' जैसे शब्दों से संबोधित किया गया। जबकि कोर्ट ने उन्हें इस प्रकार दोषसिद्ध घोषित नहीं किया गया है। जबकि ऐसे बयान वायरल करके मेरी धार्मिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा को क्षति पहुंचाने का प्रयास किया गया है। श्रीकृष्ण जन्मभूमि के मुख्यवादी व पक्षकार आशुतोष महाराज ने 13 फरवरी को पॉक्सो कोर्ट में नाबालिगों के बयान दर्ज कराए। इस दौरान उन्होंने रील भी बनाई। इस रील में आशुतोष महाराज फाइल लेकर प्रयागराज की जिला अदालत में पहुंच रहे हैं। इसमें बैकग्राउंड में डायलाग है- एक सलाह देता हूं, आप उसके खिलाफ जाने की जुर्रत मत करना। एक और रील है। इसमें गाना बजता है- हमें साथ चाहिए, हम चैन से नहीं रहेंगे हमें इंसाफ चाहिए। भगवा वस्त्र में आशुतोष महाराज समर्थकों और वकीलों के बीच में चल रहे हैं। इसके अलावा कोर्ट में बयान दर्ज कराने के बाद आशुतोष महाराज का रोते हुए वीडियो सामने आया है। प्रयागराज में माघ मेले में मौनी अमावस्या पर शंकराचार्य अवि मुक्तेश्वरानंद और प्रशासन के बीच विवाद हुआ। जगद्गुरु रामभद्राचार्य के शिष्य आशुतोष ब्रह्मचारी महाराज ने अविमुक्तेश्वरानंद का विरोध किया। फिर उनके खिलाफ प्रयागराज कमिश्नर थाने में तहरीर दे डाली। इसके बाद आशुतोष महाराज ने प्रयागराज के अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश (रेप एवं पाक्सो विशेष न्यायालय) में वाद दाखिल कर यौन शोषण समेत अन्य गंभीर आरोप लगा दिए। पॉक्सो कोर्ट ने आशुतोष महाराज के वाद पर फैसला सुरक्षित कर लिया। 21 फरवरी को आदेश जारी होगा। देशभर की निगाहें इस मामले पर टिकी हैं। तय होगा कि शंकराचार्य के खिलाफ ईंं होगी या केस डिसमिस हो जाएगा। बता दें कि जगद्गुरु रामभद्राचार्य के शिष्य आशुतोष ब्रह्मचारी महाराज ने शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद के शिविर में बच्चों के यौन शोषण का आरोप लगाया है। उन्होंने 8 फरवरी को प्रयागराज की स्पेशल पॉक्सो कोर्ट में वाद (शिकायत) दायर करके कहा- गुरुकुल की आड़ में वह बाल उत्पीड़न करते हैं। आशुतोष महाराज ने कहा- 'अविमुक्तेश्वरानंद अवैध गतिविधियों में शामिल हैं। उनके पास आय से अधिक संपत्ति है। इसकी निष्पक्ष जांच कराई जाए।'

डिवाइडर और मंदिर तोड़कर मकान में घुसा ट्रेलर,ड्राइवर को नींद आने से हुआ हादसा,एक बुजुर्ग घायल

प्रयागराज। मांडा थाना इलाके में मंगलवार देर रात बेकाबू ट्रेलर अनियंत्रित होकर सड़क की दूसरी लेन में घुस गया। ट्रेलर की स्पीड अधिक थी ऐसे में डिवाइडर पूरी तरह टूट गया। इसके बाद ट्रेलर सड़क की दूसरी लेन से होता हुआ एक मंदिर से टकराया। मंदिर पूरी तरह टूट गई। इसके बाद एक मकान में जा घुसा। मकान का आगे का हिस्सा पूरी तरह ध्वस्त हो गया। ट्रेलर के मकान से टकराने के बाद मलबा गिरा जिससे एक बुजुर्ग गंभीर रूप से जख्मी हो गया। हादसे से अफरातफरी मच गई। स्थानीय लोगों ने ट्रेलर चालक को दौड़ाकर पकड़ लिया। उसकी जमकर पिटाई की गई। बाद में

उसे मांडा थाने की पुलिस को सौंप दिया गया। हादसे का सीसीटीवी फुटेज सामने आया है। हादसा प्रयागराज मिर्जापुर राजमार्ग पर मांडा थाना क्षेत्र के डिघिया के पास हुआ। सड़क किनारे ही राम आसरे यादव का मकान है। उसी मकान में सक्सेज प्वाइंट कोचिंग सेंटर भी चलता है। मंगलवार की देर रात जौनपुर से कानपुर जा रहा ट्रेलर चालक को नींद आने की वजह से बेकाबू हो गया। ट्रेलर अनियंत्रित होकर डिवाइडर को तोड़ता सड़क की दूसरी लेन में जा घुसा।

इसके बाद मंदिर को तोड़ता मकान में घुस गया। हादसे के बाद चालक भागने लगा तो ग्रामीणों ने उसे पकड़ लिया और पिटाई शुरू कर दी। फिर पुलिस के हवाले किया गया। चालक कानपुर के पनकी दुबग्गा का रहने वाला विमल कुमार है। हादसे में घर में सो रहे बुजुर्ग राज कर्ण यादव को गंभीर चोट आई है। उसे अस्पताल में भर्ती किया गया है। क्रेन की मदद से ट्रेलर को निकाला गया है।

करोड़ों की ठगी के वांटेड पर एक और एफआईआर,प्रयागराज में 16 महीने बाद भी फरार

प्रयागराज। रकम दोगुना करने का झांसा देकर शहर के हजारों लोगों से करोड़ों रुपये की ठगी करने के चर्चित मामले में नामजद आरोपी आदिल वसी 16 महीने बाद भी पुलिस गिरफ्त से बाहर है। कोर्ट के आदेश के चार महीने बीत जाने के बावजूद उसने सरेंडर नहीं किया। अब उसके खिलाफ शाहगंज थाने में कोर्ट के आदेश की अवमानना (कंटेम्प्ट) से जुड़ा एक और मुकदमा दर्ज किया गया है। 2024 में खुला था हाई प्रोफाइल ठगी का मामला यह हाई प्रोफाइल ठगी का मामला साल 2024 में सामने आया था। अक्टूबर 2024 में करेली निवासी अब्दुल शाहिद की ओर से शाहगंज थाने में एफआईआर दर्ज कराई गई थी। शिकायत में आरोप लगाया गया कि शाहगंज निवासी दो भाई मोहम्मद काशिफ और मोहम्मद आसिफ ने अपने संरक्षक, शहर के मशहूर पटाखा कारोबारी कादिर के साथ मिलकर एक कंपनी बनाकर लोगों को रकम दोगुना करने का लालच दिया। आरोप है कि हजारों लोगों से करोड़ों रुपये जमा कराए गए और बाद में कंपनी के कार्यालय पर ताला लगाकर आरोपी फरार हो गए। आदिल वसी की भूमिका क्या रही? एफआईआर में शाहगंज की हम्माम गली निवासी आदिल वसी को भी नामजद किया गया था। पीड़ितों का आरोप है कि ठगी के इस पूरे खेल में काशिफ, आसिफ और कादिर के साथ आदिल वसी ने सक्रिय सहयोग किया। उसने लोगों को कंपनी में मोटी रकम निवेश कराने के लिए प्रेरित किया और बाद में खुद भी गायब हो गया। पुलिस के मुताबिक लगातार तलाश के बावजूद उसका कोई सुराग नहीं मिला। इसके बाद 9 अक्टूबर को पुलिस ने उसके घर पर कुर्की का नोटिस चस्पा किया और मुनादी कराई कि तय अवधि में कोर्ट में पेश न होने पर संपत्ति कुर्क की जाएगी। शाहगंज थाने में तैनात दरोगा आजाद कुमार की तहरीर पर आदिल वसी के खिलाफ एक और मुकदमा दर्ज किया गया है। आरोप है कि कोर्ट के आदेश के बावजूद आरोपी ने हाजिरी नहीं दी, जो न्यायालय की अवमानना की श्रेणी में आता है। थानाध्यक्ष कपिल कुमार ने बताया कि आरोपी के खिलाफ नया मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और जल्द ही कुर्की की कार्रवाई के लिए कोर्ट से अनुमति ली जाएगी।

शिक्षा मंत्री ने बच्चों को तिलक लगाया, मिठाई खिलाई,यूपी बोर्ड परीक्षा में 53 लाख स्टूडेंट्स देंगे एग्जाम

प्रयागराज। देश की सबसे बड़ी यूपी बोर्ड की 10वीं और 12वीं की परीक्षा आज से शुरू हो गई है। लखनऊ में माध्यमिक शिक्षा मंत्री गुलाबो देवी ने स्कूली बच्चियों का वेलकम किया। उन्हें तिलक लगाया, गुलाब का फूल देकर मिठाई खिलाई। वाराणसी के हरिश्चंद्र बालिका इंटर कॉलेज में शिक्षकों ने छात्राओं पर पुष्पवर्षा की। बच्चों ने स्कूल के शिक्षकों के पैर झुककर आशीर्वाद लिया। आज हिंदी का पेपर है। पहली पाली की परीक्षा सुबह 8:30 से 11:45 बजे और दूसरी पाली दोपहर 2:00 से 5:15 बजे तक चलेगी। इस बार नकल को रोकने के लिए सीसीटीवी से निगरानी की जाएगी। रंग बिरंगी कॉपी का इस्तेमाल किया जा रहा है। हाईस्कूल की कॉपी का रंग पिंक और 12वीं की कॉपी का रंग भूरा है। लखीमपुर खीरी के एक इंटर कॉलेज में फीस न जमा होने पर

बच्चों को प्रवेश पत्र नहीं दिए। इसके चलते बच्चों ने हंगामा कर दिया। हालांकि, बाद में प्रवेश पत्र दे दिया।प्रदेशभर के 8 हजार से ज्यादा केंद्र बनाए हैं। इस बार 5337778 परीक्षार्थी एग्जाम देंगे। इसमें हाईस्कूल में 27 लाख और इंटरमीडिएट में 25 लाख परीक्षार्थी हैं।पिछले साल 5437174 परीक्षार्थियों ने एग्जाम दिाय था।

यानी इस बार 2 लाख की कमी आई है। 10वीं की परीक्षा 12 मार्च यानी 15 दिन तक चलेगी। वहीं, 12वीं की परीक्षा 11 मार्च तक होगी। यानी सिर्फ 14 दिनों में एग्जाम खत्म होगा। वहीं लखीमपुर के बिजुआ के जानकी देवी इंटर कॉलेज में पूर्व विधायक के कॉलेज में फीस न जमा होने पर बच्चों को प्रवेश पत्र नहीं दिए गए। देर रात तक बच्चों ने हंगामा किया। प्रधानाचार्य अमित राज ने बताया- हम किसी कार्य से डीआईओएस ऑफिस गए थे तो यहां लिपिक ने बच्चों का प्रवेश पत्र फीस की वजह से रोक दिया था, लेकिन हमने आने पर सभी को देर रात तक प्रवेश पत्र बटवाए हैं। सुबह भी जो बच्चे परीक्षा देने आ रहे हैं। उन्हें प्रवेश पत्र दिया जा रहा है, अभी 10 से 15 बच्चे प्रवेश पत्र ले जाने से शेष रह गए हैं।

लखनऊ की इंदिरा नहर में उतराता मिला युवक का शव,पुलिस कर रही थी तलाश 2 फरवरी को गुमशुदगी दर्ज हुई थी

लखनऊ। लखनऊ के गोसाईगंज थाना क्षेत्र स्थित इंदिरा नहर में

मंगलवार शाम एक युवक का शव मिला। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस को मंगलवार शाम करीब 5:30 बजे इंदिरा नहर में एक युवक का शव बहता हुआ दिखाई देने की सूचना मिली थी। सूचना पर गोसाईगंज पुलिस मौके पर पहुंची। शव को बाहर निकाला। मौके पर मृतक के परिजन भी मौजूद थे, जिन्होंने शव की पहचान प्रियांशु (21) पुत्र सुधीर कुमार के रूप में की। प्रियांशु कबीरपुर, गोसाईगंज, लखनऊ का निवासी था। प्रियांशु के भाई सुधीर कुमार ने 2 फरवरी, 2026 को गोसाईगंज थाने में उसकी गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस ने शव का पंचायतनामा भरकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। मामले में आगे की विधिक कार्रवाई की जा रही है।

यात्री के बैग से .32 बोर कारतूस मिला,लखनऊ एयरपोर्ट पर लाइसेंस दिखाने के बाद पुलिस ने छोड़ा फ्लाइट छूटी

लखनऊ। लखनऊ के चौधरी चरण सिंह एयरपोर्ट पर सोमवार को सुरक्षा जांच के दौरान एक यात्री के बैग से .32 बोर का जिंदा कारतूस बरामद हुआ। सीआईएसएफ ने यात्री को हिरासत में ले लिया और बाद में सरोजनी नगर पुलिस को सौंप दिया। हालांकि, यात्री ने अपना शस्त्र लाइसेंस दिखाने के बाद पुलिस स्टेशन से रिहाई पा ली, लेकिन इस प्रक्रिया में उसकी गोवा जाने वाली उड़ान छूट गई। एयरपोर्ट सूत्रों के अनुसार, कानपुर निवासी आकाश कुमार अपनी नवविवाहित पत्नी के साथ इंडिगो की उड़ान (6ई 399) से गोवा घूमने जा रहे थे। उनकी शादी 11 फरवरी को हुई थी। दोपहर करीब 3:30 बजे उन्हें लखनऊ एयरपोर्ट से गोवा के लिए रवाना होना था।

सुरक्षा जांच के दौरान, सीआईएसएफ जवानों को आकाश के बैग से .32 बोर का एक जिंदा कारतूस मिला। इसके बाद उन्हें हिरासत में ले लिया गया और पूछताछ के लिए सरोजनी नगर पुलिस के हवाले कर दिया गया। सरोजनी नगर थाने में आकाश कुमार ने अपना शस्त्र लाइसेंस प्रस्तुत किया। पूछताछ में उन्होंने बताया कि कारतूस गलती से उनके बैग में चला आया था। लाइसेंस की पुष्टि होने के बाद पुलिस ने उन्हें छोड़ दिया।हालांकि, इस पूरी प्रक्रिया में काफी समय लग गया,जिसके कारण आकाश अपनी निर्धारित उड़ान से यात्रा नहीं कर पाए।

गंगा में नहाते समय 4 छात्र डूबे, एक की मौत दो बचाए गए, एक लापता

प्रयागराज। झूंसी में गंगा स्नान करते वक्त आठवीं और दसवीं कक्षा के चार छात्र गहराई में जाकर डूबने लगे। इनमें से दो को सकुशल बचा लिया गया, लेकिन एक छात्र की मौत हो गई। इसके साथ ही एक छात्र लापता हो गया। देर रात तक सर्च ऑपरेशन चलाए जाने के बाद भी उसकी कोई खबर नहीं मिली। बुधवार को एक बार फिर से नए सिरे से तलाश की जाएगी। यह हादसा मंगलवार को झूंसी क्षेत्र में माघ मेला के पांच नंबर पीपा पुल के पास हुआ। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, 14 से 16 साल के चार बच्चे गंगा में नहा रहे थे। नहाने के दौरान ही वह आगे बढ़ गए और इसी दौरान एक बच्चा गहराई में जाकर डूबने लगा। उसका साथी उसे बचाने के लिए आगे बढ़ा तो

वह भी गहराई में चला गया। यह देख उनके दो साथी भी आगे बढ़े और वह भी गहराई में चले गए। चारों को डूबता देख आसपास मौजूद लोगों ने शोर मचाया तो किसी तरह दो को बाहर निकाल लिया गया। हालांकि उनके दो साथी देखते ही देखते पानी में समा गए।सूचना मिली तो पुलिस और फिर गोताखोर भी आ गए। करीब घंटे भर की मशक्कत के बाद एक बच्चे को बाहर निकाला गया लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। बाहर मौजूद उनके दो साथियों ने बताया कि मृतक 15 साल का आदित्य पटेल है जो कटका झूंसी में अपने मामा के घर रहता था।वह लाला मनमोहन दास अग्रवाल इंटर कॉलेज में आठवीं कक्षा का छात्र था। जबकि लापता छात्र 16 साल का कार्तिक यादव है जो मूल रूप से फतेहगंज का रहने वाला है वह मौजूदा समय में अपनी बहन के साथ बदरा सोनौटी, झूंसी में किराए के कमरे में रहकर 10वीं की पढ़ाई कर रहा है। जबकि बाहर मौजूद दोनों छात्रों ने अपने नाम शिवम निवासी मल्लाही टोला और सत्यम निवासी कटका बताया।

एसआईआर ड्यूटी में तैनात महिला बीएलओ को आया हार्ट अटैक, घरवाले बोले- काम का बहुत प्रेशर था

बांदा। उत्तर प्रदेश में पिछले कई महीने से मतदाता सूची सत्यापन का काम चल रहा है। बांदा में

एसआईआर ड्यूटी में लगी एक महिला बीएलओ को दिल का दौरा पड़ गया। हालत गंभीर होने पर उन्हें बांदा से ग्वालियर रेफर किया गया, जहां वह आईसीयू में जिंदगी और मौत के बीच जूझ रही हैं। परिजनों ने काम का दबाव होने का आरोप लगाया है। सदर विधानसभा क्षेत्र के कहला गांव में बीएलओ की जिम्मेदारी संभाल रहीं अनीता रावत प्राथमिक विद्यालय गंछा में शिक्षामित्र के पद पर तैनात हैं। परिजनों का कहना है कि मतदाता सूची के पुनरीक्षण कार्य के भारी दबाव के कारण वह पिछले काफी समय से मानसिक तनाव से गुजर रही थीं। सोमवार की शाम अचानक उनके सीने में तेज दर्द उठा। परिजन उन्हें तुरंत जिला अस्पताल ले गए, जहां से डॉक्टरों ने उनकी नाजुक स्थिति को देखते हुए ग्वालियर रेफर कर दिया। अनीता के देवर सुरेश रावत ने विभागीय अधिकारियों की कार्यशैली पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने आरोप लगाया टारगेट पूरा न होने का हवाला देकर अधिकारियों ने अनीता को अलग-अलग तारीखों पर तीन बार कारण बताओ नोटिस थमाए। समीक्षा बैठकों में भी उन्हें सार्वजनिक रूप से अपमानित किया जाता था। सुरेश के मुताबिक, अनीता ने अपनी खराब सेहत और काम के भारी दबाव का जिक्र करते हुए कुछ दिन पहले बीआरसी (खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय) में एक प्रार्थना पत्र भी दिया था। आरोप है कि इस गुहार पर कोई राहत देने के बजाय खंड शिक्षा अधिकारी और सहायक निर्वाचन अधिकारी ने उन्हें और जलील किया तथा काम का दबाव बनाए रखा। दूसरी तरफ, प्रशासनिक महकमा इन आरोपों से इनकार कर रहा है। एसडीएम अमित शुक्ला का कहना है कि अगर बीएलओ की तबीयत खराब थी तो उन्हें इसकी जानकारी उच्चाधिकारियों को देनी चाहिए थी, प्रशासन उनकी पूरी मदद करता। वहीं, बीएसए अव्यक्तराम तिवारी ने बीमारी से जुड़े किसी भी प्रार्थना पत्र के मिलने की बात से साफ इनकार किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि चुनाव आयोग के निर्देशानुसार यह काम एक तय समय-सीमा के भीतर करना अनिवार्य होता है। हालांकि, उन्होंने भी यही कहा कि यदि बीमारी की जानकारी दी जाती तो निश्चित रूप से उन्हें राहत दी जाती।

गोंडा में 59 पुलिसकर्मियों का तबादला,रूपाली गुप्ता मॉनिटरिंग सेल भेजी गईं

गोंडा। गोंडा के पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल ने देर रात बड़े पैमाने पर 59 पुलिसकर्मियों के तबादले किए हैं। इनमें आरक्षी, मुख्य आरक्षी और महिला आरक्षी शामिल हैं। सभी पुलिसकर्मियों को तत्काल प्रभाव से अपने-अपने थानों और कार्यालयों में पहुंचकर ड्यूटी ज्वाइन करने के निर्देश दिए गए हैं। तबादला सूची के अनुसार, आरक्षी संजय कुमार तिवारी को कोतवाली नगर, रूपाली गुप्ता को मॉनिटरिंग सेल, संदीप कुमार सिंह को कोतवाली नगर और नीलम यादव को कोतवाली नगर भेजा गया है। जयप्रकाश, राकेश कुमार यादव और धर्मेंद्र गौड़ को कोतवाली देहात में नई तैनाती मिली है। उदय भानु मिश्रा को क्षेत्राधिकारी कार्यालय मनकापुर, ऋषि कुमार, संजीव कुमार गौड़ और अखिलेश कुमार यादव को थाना मनकापुर भेजा गया है। अभिषेक दीक्षित और सौरभ दुबे को सीसीटीएनएस थाना धानेपुर, श्रीचंद्र शर्मा और भीम नारायण पासवान को न्यायालय सुरक्षा में तैनात किया गया है।

विनय कुमार वर्मा को क्षेत्राधिकारी नगर कार्यालय और राजेश कुमार को न्यायालय सम्मन सेल में स्थानांतरित किया गया है। इसके अतिरिक्त, शैलेश प्रताप चौहान, वंदना चौहान और चंद्रशेखर मौर्य को खोडारे भेजा गया है। राजेश प्रसाद, विकास कुमार गौड़, बैजनाथ गौड़ और नरेंद्र कुमार चौधरी को थाना छपिया में तैनाती मिली है। जान मोहम्मद और घनश्याम यादव को थाना उमरी बेगमगंज, किरण सरोज को नफीस सेल, कमलेश यादव को ए.एच.टी.यू थाना गोंडा, अनिल कुमार को पारपत्र शाखा गोंडा और अंकुर पांडे को क्षेत्राधिकारी कार्यालय कर्नलगंज में स्थानांतरित किया गया है।

तिलकोत्सव में हर्ष फायरिंग, गोली लगने से आबकारी सिपाही गंभीर

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर में तिलकोत्सव कार्यक्रम के दौरान हर्ष फायरिंग में आबकारी विभाग का सिपाही गंभीर रूप से घायल हो गया। गोली साथी सिपाही

की पिस्टल से चली और सीधे उसकी कमर में जा लगी। यह घटना मोतिगरपुर थाना क्षेत्र के करमाजितपुर गांव में हुई।

पुलिस ने हर्ष फायरिंग के आरोपी आबकारी सिपाही सुरेंद्र यादव को गिरफ्तार कर लिया है। इस मामले में मोतिगरपुर थाने के दो सिपाहियों सनोज यादव और सिंटू यादव को निलंबित भी किया गया है। जानकारी के अनुसार, करमाजितपुर निवासी रामशरण शुक्ला के छोटे पुत्र अंकुर शुक्ला के तिलकोत्सव में उनके विभागीय साथी शामिल होने आए थे। अंकुर शुक्ला लखनऊ में आबकारी विभाग में सिपाही के पद पर तैनात हैं। कार्यक्रम में रायबरेली से आए सिपाही सुरेंद्र यादव (निवासी उमरपुर, थाना बाघराय, प्रतापगढ़) हर्ष फायरिंग कर रहे थे। इसी दौरान चली गोली साथी सिपाही विनीत मिश्र (36), निवासी मल्हीपुर थाना चांदा, की कमर में जा लगी। सुरेंद्र और विनीत दोनों ही रायबरेली में आबकारी विभाग में तैनात बताए जा रहे हैं। घटना के तुरंत बाद अन्य साथियों ने घायल विनीत को सुल्तानपुर मेडिकल कॉलेज पहुंचाया। बताया जाता है कि वहां ट्रॉमा में भर्ती कराने के बजाय सामान्य मरीज की तरह पर्चा बनवाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें प्रयागराज के एक निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां रात करीब दो बजे उनका ऑपरेशन किया गया।

फिलहाल घायल सिपाही खतरे से बाहर बताया जा रहा है। घटना के बाद देर तक मामले को दबाने की भी चर्चा रही।

हालांकि, मामले की गंभीरता को देखते हुए मोतिगरपुर पुलिस ने देर रात कार्रवाई की। आरोपी सुरेंद्र यादव के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 109 और 7 सीएलए एक्ट के तहत हत्या के प्रयास का मुकदमा दर्ज किया गया है। सीओ जयसिंहपुर रामकृष्ण चतुर्वेदी ने ने बताया कि उपनिरीक्षक श्रीराम मिश्र की तहरीर पर केस दर्ज कर लिया गया है।

10 दिनों से भी अधिक समय तक वेंटिलेटर पर रहे 9-वर्षीय बच्चे ने जीती जिंदगी की बाजी

कूल्हे के गंभीर इंफेक्शन को दी पटखनी

आधुनिक समाचार नोएडा। नोएडा फोर्टिस हॉस्पीटल ग्रेटर नोएडा के डॉक्टरों ने क्लीनिकल निर्णय और मल्टीडिसीप्लीनरी तालमेल का शानदार परिचय देते हुए, गंभीर किस्म के बोन इंफेक्शन से पीड़ित 9-वर्षीय बच्चे का

सफलतापूर्वक उपचार कर उसे नया जीवनदान दिया है। इस बच्चे का इंफेक्शन इतना बिगड़ चुका था कि मरीज सेप्टिक शॉक में चला गया था और ऐसे में उसे बचाने के लिए अगले 10 दिनों तक वेंटिलेटर सपोर्ट और इंटेंसिव केयर में रखा गया। इस बच्चे को जब अस्पताल लाया गया तो वह लगातार बुखार, और करीब एक हफ्ते से चलने-फिरने में परेशानी महसूस होने तथा दांए पैर के निचले हिस्से तथा कूल्हे में सूजन और दर्द से जूझ रहा था। इससे पहले, 4-5 दिनों तक अलग-अलग अस्पतालों में इलाज करवाने (ओपीडी और आईपीडी) के बावजूद, मरीज की हालत में कोई सुधार होने की बजाय उसकी हालत लगातार बिगड़ रही थी। फोर्टिस हॉस्पीटल ग्रेटर नोएडा में भर्ती के बाद, इस बच्चे की हालत लगातार बिगड़ती गई, जबकि उसे दवाएं दी जा रही थीं। उसकी सांस तेज चलने लगी, और हृदय गति भी बढ़ गई जबकि पल्स कमजोर पड़ रही थी और पेशाब की मात्रा कम हो गई थी तथा ब्लड प्रेशर बॉर्डरलाइन पर था।

जांच से पता चला कि उसका इंफेक्शन काफी बढ़ चुका था। विस्तृत जांच में उसके दाएं कूल्हे में ऑस्टियोमायलिटिस (बोन इंफेक्शन) की पुष्टि हुई और जोड़ में मवाद भर चुका था। मरीज को तत्काल पिडियाट्रिक इंटेंसिव केयर यूनिट (पीआईसीयू) में शिफ्ट किया गया जहां डॉ कुशाग्र गुप्ता, कंसल्टेंट - पिडियाट्रिक्स, फोर्टिस हॉस्पीटल ग्रेटर नोएडा की देखरेख में इलाज शुरू हुआ। मामले की गंभीरता को भांपते ही, डॉ भरत गोस्वामी, कंसल्टेंट ऑर्थोपिडिक्स, फोर्टिस हॉस्पीटल ग्रेटर नोएडा ने एनेस्थीसिया टीम, जिसमें डॉ भूप सिंह, एडिशनल डायरेक्टर एनेस्थीसियोलॉजी, फोर्टिस ग्रेटर नोएडा और डॉ स्वयंभू शुभम, अटेंडिंग कंसल्टेंट, इंटरवेंशनल रेडियोलॉजी, फोर्टिस ग्रेटर नोएडा शामिल थे, के साथ मिलकर तत्काल इमरजेंसी सर्जरी शुरू की। मरीज के दांए कूल्हे के जोड़ से करीब 200 मिली मवाद निकाला गया। लेकिन जंग में जीत अभी दूर थी। इस सर्जरी के बाद, मरीज को पीआईसीयू में गहन चिकित्सा के लिए ले जाया गया।

मरीज को अगले पांच दिनों तक वेंटिलेटर सपोर्ट पर रखा गया और ब्लड प्रेशर तथा उनके फेफड़ों और सांस को स्थिर करने के लिए कई प्रकार की दवाएं दी गईं। पिडियाट्रिक और क्रिटिकल केयर टीमों ने गंभीर सेप्सिस और इंफेक्शन को दूर करने के लिए चौबीसों घंटे कड़ी मेहनत की। आखिरकार 10 दिनों तक गहन निगरानी और उपचार के बाद, इस बच्चे की हालत धीरे-धीरे स्थिर होने लगी। उसे वेंटिलेटर से हटाने के बाद क्लीनिकल सुधार भी होने लगा। स्वास्थ्य लाभ और हालत स्थिर होने के बाद मरीज को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई और एंटी-ट्यूबरक्युलर थेरेपी (एटीटी) के साथ-साथ एंटीबायोटिक एवं सपोर्टिव केयर की सलाह दी गई है। इस मामले की और जानकारी देते हुए, डॉ कुशाग्र गुप्ता, कंसल्टेंट - पिडियाट्रिक्स, फोर्टिस हॉस्पीटल ग्रेटर नोएडा ने कहा, 'बच्चों में बोन इंफेक्शन तेजी से बढ़ सकता है और यदि समय पर उपचार न किया जाए तो यह जीवनघाती भी होता है। शुरूआत में ही पहचान करने, तत्काल सर्जिकल सहायता मिलने और इंटेंसिव केयर मैनेजमेंट में तालमेल के चलते इस बच्चे का जीवन बचाने में सफलता मिली। इस मामले ने एक बार फिर जटिल किस्म की पिडियाट्रिक इमरजेंसी से निपटने में मल्टीडिसीप्लीनरी टीमों के बीच आपसी तालमेल के महत्व को उजागर किया है।' डॉ भरत गोस्वामी, कंसल्टेंट ऑर्थोपिडिक्स, फोर्टिस हॉस्पीटल ग्रेटर नोएडा ने कहा, 'हमें सर्जरी के दौरान जिस मात्रा में मवाद और इंफेक्शन दिखायी दिया उससे हमें अंदाजा हुआ कि मरीज का रोग किस हद तक आक्रामक हो चुका था।

तत्काल मवाद निकालने और इंटेंसिव पोस्ट-ऑपरेटिव केयर ने इस बच्चे के जोड़ का स्थायी क्षरण होने और इंफेक्शन को घातक होने से रोक दिया। इस मामले ने बच्चों में बोन इंफेक्शन का समय पर उपचार न करने के चलते उत्पन्न होने वाले खतरों की ओर इशारा किया है। बोन इंफेक्शन के चलते सेप्टिक आर्थराइटिस, ऑस्टियोमायलिटिस, सेप्टिक शॉक तथा कई बार दीर्घकालिक विकलांगता भी पैदा हो सकती है। इलाज के बाद यह मरीज सुरक्षित तरीके से अपने घर लौट चुका है, धीरे-धीरे स्वास्थ्यलाभ कर रहा है - जो कि इस बात का प्रमाण है कि समय पर मेडिकल सहायता, एडवांस क्रिटिकल केयर और फोर्टिस हॉस्पीटल ग्रेटर नोएडा में टीमों के बीच तालमेल ने उसकी रिकवरी में योगदान दिया।

' सिद्धार्थ निगम, फेसिलिटी डायरेक्टर, फोर्टिस हॉस्पीटल ग्रेटर नोएडा ने कहा, 'इस मामले ने फोर्टिस हॉस्पीटल ग्रेटर नोएडा के इमरजेंसी रिस्पॉन्स सिस्टम्स और विभिन्न स्पेश्यलिटीज़ के बीच तालमेल को दर्शाया है। जब कोई बच्चा तेजी से बिगड़ती कंडीशन के साथ आता है, तो हमारी टीमें तत्काल, सटीकता और एक साझा उद्देश्य को ध्यान में रखकर काम में जुट जाती हैं।

इस कम उम्र के मरीज के गंभीर सेप्सिस के उपचार के लिए न सिर्फ क्लीनिकल विशेषज्ञता की आवश्यकता थी बल्कि एडवांस क्रिटिकल केयर इंफ्रास्ट्रक्चर और समन्वित टीमवर्क भी जरूरी था। हमें गर्व है कि समय पर हस्तक्षेप और चौबीसों घंटे समर्पण भाव से उपचार कर हम इस बच्चे को स्वस्थ जीवन जीने का एक नया अवसर देने में सक्षम हुए हैं। हमारे अस्पताल में आने वाले हर मरीज के लिए वर्ल्ड-क्लास और दयाभाव से भरपूर देखभाल की हमारी प्रतिबद्धता अटूट है।'

जीएल बजाज के तीन स्टार्टअप्स का विश्व के प्रतिष्ठित एआई इम्पैक्ट समिट 2026 में चयन

आधुनिक समाचार नोएडा। जीएल बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट को यह

घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है कि जीएल बजाज सेंटर फॉर रिसर्च एंड इन्क्यूबेशन द्वारा इनक्यूबेट किए गए तीन स्टार्टअप्स का चयन एआई इम्पैक्ट समिट 2026 में अपने नवाचार प्रस्तुत करने हेतु किया गया है। यह समिट 16 से 20 फरवरी, भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित होगा। यह समिट विश्व के सबसे बड़े मंचों में से एक है, जहाँ वैश्विक नेता, सीईओ, नीति निर्माता, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के भविष्य और उसके प्रभाव पर चर्चा करते हैं। इस प्रतिष्ठित मंच पर जीएल बजाज का प्रतिनिधित्व करने वाले स्टार्टअप्स हैं: आदित्य त्रिपाठी - एकलव्य इंडिया टेक प्राइवेट लिमिटेड आनंदिता मिश्रा - ईस्पेस एआई टेक प्राइवेट लिमिटेड संध्या श्रीवास्तव - फ्लोगार्ड - आईवी फ्लूड मैनेजमेंट सिस्टम यह उपलब्धि नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए जीएल बजाज द्वारा प्रदान किए जा रहे मजबूत इन्क्यूबेशन समर्थन को दर्शाती है। संस्थान अपने इनक्यूबेटीज़ को मेंटरशिप, संसाधन, उद्योग संपर्क और मार्गदर्शन प्रदान करता है ताकि वे अपने विचारों को सफल उद्यमों में बदल सकें। श्री पंकज अग्रवाल, उपाध्यक्ष, जीएल बजाज एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस, ने कहा: 'जीएल बजाज में हम मानते हैं कि सही माहौल मिलने पर नवाचार तेजी से विकसित होता है। हमारे स्टार्टअप्स का वैश्विक मंच पर चयन हमारे विज़न की सफलता का प्रमाण है।' श्री कार्तिकेय अग्रवाल, सीईओ, जीएल बजाज एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस, ने कहा: 'हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों को विचार से प्रभाव तक की यात्रा में सहयोग देना है। यह उपलब्धि दर्शाती है कि हमारे कैंपस से निकलने वाले नवाचार वैश्विक स्तर पर प्रभाव डाल रहे हैं।' यह उपलब्धि जीएल बजाज को नवाचार और उद्यमिता के अग्रणी केंद्र के रूप में और मजबूत करती है।

उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल द्वारा उद्योग एवं व्यापार से संबंधित मुद्दों पर हुई बैठक

आधुनिक समाचार नोएडा। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल (जिला गौतमबुद्ध नगर) द्वारा उद्योग एवं व्यापार से संबंधित मुद्दों एवं उनके

समाधान पर एक सामूहिक बैठक का आयोजन डॉ पीयूष द्विवेदी चेयरमैन के नेतृत्व में उनके कार्यालय सेक्टर 63 नोएडा में किया गया जिसमें संजय जैन अध्यक्ष, अमित अग्रवाल वरिष्ठ महासचिव, नरेश बंसल कोषाध्यक्ष, राहुल भाटिया महासचिव, डॉ विकास बंसल वरिष्ठ उपाध्यक्ष, के.के. अग्रवाल उपाध्यक्ष, संजय कोहली उपाध्यक्ष, सुनील वर्मा सचिव समेत व्यापार मंडल के सभी पदाधिकारीयों ने बैठक में सम्मिलित हो जन समस्याओं पर अपने-अपने विचार रखें।व्यापार मंडल द्वारा नोएडा प्राधिकरण संबंधित पुलिस प्रशासन संबंधित जीएसटी डिपार्मेंट संबंधित समस्याओं पर विस्तृत चर्चा की गई एवं जल्दी ही व्यापार मंडल का एक प्रतिनिधि मंडल संबंधित विभागों से संपर्क कर समस्याओं के समाधान हेतु प्रयास करेगा।

एनडी यूनिवर्सिटी ने विकसित की 'विलायती कद्दू' की नई प्रजाति, किसानों की आय बढ़ाने में होगी मदद

अयोध्या। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय अयोध्या के सब्जी विज्ञान विभाग

ने 'चप्पन कद्दू' (विलायती कद्दू) की एक नई और उन्नत प्रजाति विकसित की है। यह सब्जी कैंसर रोधी गुणों से भरपूर होने के साथ-साथ कम क्षेत्र और ऑफ-सीजन में उत्पादन देकर किसानों की आर्थिक आय बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएगी। यूनिवर्सिटी के सब्जी विज्ञान विभाग में विकसित इस नई प्रजाति को इसी साल सब्जी किस्म रिलीज कमेटी से अप्रूवल दिलाकर पूर्वांचल की प्रमुख सब्जी के रूप में जारी करने की तैयारी है। इस प्रजाति पर शोध कर रहे असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. आस्तिक झा ने बताया कि चप्पन कद्दू सामान्य कद्दू से बिल्कुल अलग है। यह लता विहीन होता है और केवल डेढ़ फुट क्षेत्र में फैलता है। एक पौधे में 4 से 5 फल लगते हैं, जिनका वजन लगभग एक-एक किलो तक होता है। फल लंबे आकार के होते हैं, जिससे बाजार में इसकी मांग अधिक रहती है। डॉ. झा के अनुसार, शोध में सामने आया है कि चप्पन कद्दू में कैंसर रोधी तत्व मौजूद हैं। इसमें पोटैशियम, फॉस्फोरस, आयरन, विटामिन-ए और विटामिन-सी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। साथ ही इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट शरीर को कई गंभीर बीमारियों से बचाने में सहायक हैं। डॉ. आस्तिक झा ने बताया कि इस कद्दू की बुवाई अक्टूबर महीने में की जाती है और यह 70 दिनों में फल देना शुरू कर देता है। सर्दियों के मौसम में जब आमतौर पर कद्दू जैसी सब्जियां बाजार में नहीं मिलतीं, उस समय यह किस्म किसानों के लिए बेहतर विकल्प साबित होगी। कम क्षेत्र में अधिक उपज मिलने से किसानों को बेहतर मुनाफा होगा। डॉ. झा ने बताया कि इस प्रजाति पर पिछले तीन वर्षों से शोध कार्य चल रहा है। अब तक लगभग 50 उन्नत जर्मप्लाज्म लाइनें विकसित की जा चुकी हैं, जिनमें फलों की संख्या अधिक, उपज बेहतर और फल विभिन्न रंगों में पाए जाते हैं। उन्होंने बताया कि 2022 में यूनिवर्सिटी जॉइन करने के बाद से उनका फोकस नई सब्जी प्रजातियों के विकास पर है। फिलहाल केरल में प्रचलित क्लोव बीम और पंखी सेम पर भी शोध चल रहा है, जो हाई कोलेस्ट्रॉल, ब्लड प्रेशर और शुगर जैसी बीमारियों में औषधीय गुण रखती हैं।

ये लीग इन खिलाड़ियों के लिए वर्ल्ड कप के समान - मनिंदर सिंह

आधुनिक समाचार नोएडा। महर्षि यूनिवर्सिटी ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (MUIT) द्वारा आयोजित महर्षि प्रीमियर लीग

(MPL) - सीजन 5 का भव्य समापन एक बेहद रोमांचक और यादगार फाइनल मुकाबले के साथ हुआ। दिल्ली-एनसीआर के इस प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी क्रिकेट टूर्नामेंट के अंतिम दिन दर्शकों को शानदार खेल और जबरदस्त प्रतिस्पर्धा देखने को मिली। फाइनल मुकाबले में बैनेट यूनिवर्सिटी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए महर्षि यूनिवर्सिटी के सामने 156 रनों का चुनौतीपूर्ण लक्ष्य रखा। जवाब में महर्षि यूनिवर्सिटी की टीम ने संयम और आक्रामकता का शानदार संतुलन दिखाते हुए 7 गेंदें शेष रहते 3 विकेट से जीत दर्ज कर ली। आखिरी ओवरों में मुकाबला बेहद रोमांचक हो गया था और दर्शकों की सांसें थमी हुई थीं, लेकिन अंततः महर्षि यूनिवर्सिटी ने शानदार जीत अपने नाम की। मुकाबले में महर्षि यूनिवर्सिटी के खिलाड़ी मोहित ने 54 रनों की शानदार पारी खेली और साथ ही एक महत्वपूर्ण विकेट भी हासिल किया। उनके हरफनमौला प्रदर्शन के लिए उन्हें 'मैन ऑफ द मैच' घोषित किया गया।फाइनल मुकाबले को देखने के लिए मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व भारतीय क्रिकेटर मनिंदर सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने दोनों टीमों के खेल की सराहना की और खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि इस तरह के विश्वविद्यालय स्तरीय टूर्नामेंट युवा प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का बड़ा मंच प्रदान करते हैं। इस अवसर पर महर्षि यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति श्री अजय प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि महर्षि प्रीमियर लीग वर्ष दर वर्ष अपना स्तर ऊंचा कर रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि अगले सीजन में यह टूर्नामेंट और भी बड़ा रूप लेगा तथा दिल्ली-एनसीआर की 16 के स्थान पर 24 टीमों की भागीदारी के साथ खेला जाएगा। एमपीएल-सीजन 5 ने न केवल खेल भावना और प्रतिस्पर्धा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया, बल्कि युवाओं में टीमवर्क, नेतृत्व और आत्मविश्वास को भी बढ़ावा दिया। टूर्नामेंट के सफल आयोजन के साथ ही अब सभी की निगाहें अगले सीजन पर टिक गई हैं, जो और भी भव्य और विस्तृत होने की उम्मीद है।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

प्रदेश के समाज कल्याण मंत्री भिखारी बाबा आश्रम पहुंचे, लिया आशीर्वाद,भगवान शंकर का पूजन-अर्चन कर गौशाला में गौ माता को गुड़ खिलाया

आश्रम के संचालन में हर संभव दिया जाएगा सहयोग-संजय गौंड़, भिखारी भोले सेवा ट्रस्ट की ओर से मंत्री जी को अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया

आधुनिक समाचार सोनभद्र। रामगढ़ कसारी स्थित भिखारी बाबा आश्रम पर शिवरात्रि की रात्रि में प्रदेश के समाज कल्याण मंत्री संजय गौड़ जा पहुंचे और बाबा का आशीर्वाद लिया। इसके अलावा भगवान शंकर का पूजन-अर्चन किया और गौशाला में जाकर गौ माता को गुड़ खिलाया। भिखारी भोले सेवा ट्रस्ट की ओर से मंत्री जी को अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। मंत्री जी ने आश्रम की सराहना करते हुए संचालन में हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया। भिखारी बाबा ने बताया कि मंत्री जी की आश्रम पर आने की इच्छा बहुत दिनों से थी। जब प्रभु का बुलावा आया तो शिवरात्रि के अवसर पर मंत्री जी का आगमन आश्रम पर हुआ। उन्होंने भगवान शंकर का पूजन-अर्चन किया, उसके बाद आश्रम के गौशाला में जाकर गौ माता को गुड़ खिलाया। मंत्री जी ने आश्रम की सराहना करते हुए कहा कि आश्रम के संचालन में हर संभव सहयोग दिया जाएगा। मंत्री जी का भिखारी भोले सेवा ट्रस्ट के द्वारा अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया। इसके अलावा साथ में पहुंचे इंजीनियर रमेश पटेल व पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अमरेश पटेल का भी अंगवस्त्र देकर सम्मान किया गया। इस मौके पर वरिष्ठ समाज सेवी विशाल मौर्या, रामबाबू मोदनवाल, अरविंद उमर बैस, परमानंद महराज, सूरज जी महराज,इंद्रपती पांडे जी महराज, शुखराम जी महराज, भिखारी बाबा आश्रम की उत्तराधिकारी साध्वी कृष्णावती, विनीता गुप्ता, मधु उमर बैस, आकाश केसरी, देव उमर बैस, सोनू जायसवाल, सविता मिश्रा, कलावती चौबे, भिखारी भोले सेवा ट्रस्ट की उपाध्यक्ष चिंता मौर्या आदि मौजूद रही।

साइबर क्राइम पुलिस थाना - सोनभद्र द्वारा साइबर फ्रॉड के रु52,731/- रुपये कराए गए वापस

आधुनिक समाचार सोनभद्र। अवगत कराना है कि आवेदक 01. राजेश कुमार सिंह निवासी बी-55 एनसीएल खाड़िया, शक्तिनगर जनपद सोनभद्र तथा संजय कुमार जायसवाल पुत्र लालचन्द निवासी आर्य नगर थाना रॉबर्ट्सगंज जनपद सोनभद्र के साथ अज्ञात साइबर अपराधियों द्वारा Stock Recommendation के नाम पर धनराशि ट्रांसफर कर धोखाधड़ी की गई थी। साथ ही एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस से संबंधित भ्रामक सूचना देकर फोनपे ऐप के माध्यम से धनराशि आहरित कर ली गई थी।उक्त प्रकरण के संबंध में थाना साइबर क्राइम, सोनभद्र पर शिकायत दर्ज की गई।

पुलिस अधीक्षक सोनभद्र श्री अभिषेक वर्मा के निर्देशन में साइबर अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान के क्रम में, अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) के निर्देशन तथा प्रभारी निरीक्षक साइबर क्राइम थाना के नेतृत्व में साइबर टीम द्वारा त्वरित तकनीकी एवं वैधानिक कार्यवाही की गई। संबंधित बैंकों से समन्वय स्थापित कर न्यायालय से होल्ड धनराशि वापसी आदेश प्राप्त कर कुल रु52,731/- रुपये आवेदकों के मूल खातों में सफलतापूर्वक वापस कराए गए। आवेदकगण को वापस कराई गई धनराशि का विवरण - राजेश कुमार सिंह को रु2,186/- रुपये संजय कुमार जायसवाल को रु50,545/- रुपये धनराशि वापस कराने वाली टीम- प्र0नि0 धीरेन्द्र कुमार चौधरी, साइबर क्राइम पुलिस थाना, सोनभद्र। हे0का0 संजय वर्मा, साइबर क्राइम पुलिस थाना, सोनभद्र। का0आप0 विकास मौर्य, साइबर क्राइम पुलिस थाना, सोनभद्र। . म0का0 शारदा, साइबर क्राइम पुलिस थाना, सोनभद्र।

क्षेत्राधिकारी नगर की अध्यक्षता में रिजर्व पुलिस लाइन चुर्क सभागार में एसजेपीयू एवं एएचटीयू की मासिक समीक्षा एवं समन्वय बैठक संपन्न

बालकों के विरुद्ध हो रहे अपराधों की रोकथाम हेतु प्रभावी कार्ययोजना तैयार

आधुनिक समाचार सोनभद्र। श्रीमान पुलिस महानिदेशक, महिला सम्मान प्रकोष्ठ उ0प्र0, लखनऊ के आदेश के क्रम में तथा पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के निर्देशन में आज दिनांक 18.02.2026 को रिजर्व पुलिस लाइन चुर्क, जनपद सोनभद्र के सभागार कक्ष में क्षेत्राधिकारी नगर रणधीर मिश्रा की अध्यक्षता में स्पेशल जुवेनाइल पुलिस यूनिट एवं एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट की मासिक समीक्षा एवं समन्वय बैठक आयोजित की गई। बैठक में कानून का उल्लंघन करने वाले बालकों, देखरेख एवं संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चों, गुमशुदा/लापता बालकों की त्वरित बरामदगी, किशोर न्याय (जे0जे0) अधिनियम एवं पॉक्सो अधिनियम से संबंधित प्रकरणों की प्रभावी विवेचना एवं पीड़ित बालकों को समयबद्ध रूप से बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत किए जाने की प्रक्रिया की गहन समीक्षा की गई। विशेष रूप से पॉक्सो मामलों में प्रारूप (क) एवं प्रारूप (ख) को शुद्ध एवं समयबद्ध रूप से पूर्ण करने, किशोर न्याय बोर्ड से निर्गत सम्मनों की समय पर तामिला सुनिश्चित करने, तथा बाल कल्याण पुलिस अधिकारियों/विवेचकों के समक्ष आ रही व्यावहारिक समस्याओं के समाधान पर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श किया गया।बैठक में बाल अधिकारों की सुरक्षा, बाल तस्करी की रोकथाम, विद्यालयों एवं सार्वजनिक स्थलों पर जागरूकता कार्यक्रम संचालित करने, तथा विभिन्न विभागों के मध्य बेहतर समन्वय स्थापित करने हेतु ठोस कार्ययोजना तैयार की गई। इस अवसर पर अध्यक्ष/सदस्य बाल कल्याण समिति, अभियोजन अधिकारी, जिला बाल संरक्षण इकाई, किशोर न्याय बोर्ड के सदस्यगण, चाइल्ड हेल्पलाइन प्रतिनिधि, श्रम विभाग, वन स्टॉप सेंटर, थाना एएचटीयू एवं एसजेपीयू के अधिकारी/कर्मचारी तथा जनपद के समस्त थानों के बाल कल्याण पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे।

मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत महिला सुरक्षा एवं साइबर सतर्कता अभियान सफलतापूर्वक सम्पन्न

आधुनिक समाचार सोनभद्र। जनपद सोनभद्र में महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं सशक्तिकरण के उद्देश्य से मिशन शक्ति 5.0 के तहत व्यापक जागरूकता अभियान चलाया गया। इस अभियान का मुख्य फोकस महिला सुरक्षा, आत्मरक्षा प्रशिक्षण, विधिक अधिकारों की जानकारी एवं साइबर अपराधों से बचाव रहा। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अभिषेक वर्मा के निर्देशन में चारु द्विवेदी (सहायक नोडल अधिकारी, मिशन शक्ति 5.0) के नेतृत्व में जनपद के समस्त थाना क्षेत्रों में पुलिस टीमों द्वारा विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों के अंतर्गत विद्यालयों, महाविद्यालयों, कोचिंग संस्थानों, बाजारों एवं ग्राम सभाओं में महिलाओं एवं बालिकाओं के साथ संवाद स्थापित कर उन्हें सुरक्षा संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गईं। अभियान के दौरान गुड टच-बैड टच, आत्मरक्षा के सरल उपाय, महिला उत्पीड़न से संबंधित विधिक प्रावधानों, हेल्पलाइन सेवाओं एवं साइबर अपराधों के विभिन्न तरीकों के बारे में विस्तार से बताया गया। साथ ही ऑनलाइन फ्रॉड, फर्जी कॉल/लिंक, सोशल मीडिया दुरुपयोग, बैंकिंग धोखाधड़ी एवं ओटीपी साझा न करने के संबंध में विशेष सतर्कता बरतने की अपील की गई। पुलिस द्वारा यह भी अवगत कराया गया कि किसी भी प्रकार की छेड़छाड़, उत्पीड़न, घरेलू हिंसा या साइबर अपराध की स्थिति में तत्काल पुलिस या संबंधित हेल्पलाइन नंबरों पर संपर्क करें। प्रत्येक शिकायत पर त्वरित एवं विधिक कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। महत्वपूर्ण हेल्पलाइन नंबर- 112 - आपातकालीन सेवा, 1090 / 1091 - महिला सुरक्षा हेल्पलाइन, 181 - महिला हेल्पलाइन, 1930 - साइबर अपराध हेल्पलाइन, 1076 - मुख्यमंत्री हेल्पलाइन, सोनभद्र पुलिस महिला सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्ध है एवं मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत यह अभियान सतत रूप से संचालित किया जाता रहेगा।

ब्रज के रंग में रंगा शहरः रासलीला के तीसरे दिन 'माटी चोरी' और 'ऊखल बंधन' लीला ने मोहा भक्तों का मन

आधुनिक समाचार सोनभद्र। जनपद सोनभद्र में महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं सशक्तिकरण के उद्देश्य से मिशन शक्ति 5.0 के तहत व्यापक जागरूकता अभियान चलाया गया। इस अभियान का मुख्य फोकस महिला सुरक्षा, आत्मरक्षा प्रशिक्षण, विधिक अधिकारों की जानकारी एवं साइबर अपराधों से बचाव रहा। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अभिषेक वर्मा के निर्देशन में तथा क्षेत्राधिकारी यातायात डॉ. चारु द्विवेदी (सहायक नोडल अधिकारी, मिशन शक्ति 5.0) के नेतृत्व में जनपद के समस्त थाना क्षेत्रों में पुलिस टीमों द्वारा विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों के अंतर्गत विद्यालयों, महाविद्यालयों, कोचिंग संस्थानों, बाजारों एवं ग्राम सभाओं में महिलाओं एवं बालिकाओं के साथ संवाद स्थापित कर उन्हें सुरक्षा संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गईं। अभियान के दौरान गुड टच-बैड टच, आत्मरक्षा के सरल उपाय, महिला उत्पीड़न से संबंधित विधिक प्रावधानों, हेल्पलाइन सेवाओं एवं साइबर अपराधों के विभिन्न तरीकों के बारे में विस्तार से बताया गया। साथ ही ऑनलाइन फ्रॉड, फर्जी कॉल/लिंक, सोशल मीडिया दुरुपयोग, बैंकिंग धोखाधड़ी एवं ओटीपी साझा न करने के संबंध में विशेष सतर्कता बरतने की अपील की गई।

पुलिस द्वारा यह भी अवगत कराया गया कि किसी भी प्रकार की छेड़छाड़, उत्पीड़न, घरेलू हिंसा या साइबर अपराध की स्थिति में तत्काल पुलिस या संबंधित हेल्पलाइन नंबरों पर संपर्क करें। प्रत्येक शिकायत पर त्वरित एवं विधिक कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। महत्वपूर्ण हेल्पलाइन नंबर- 112 - आपातकालीन सेवा, 1090 / 1091 - महिला सुरक्षा हेल्पलाइन, 181 - महिला हेल्पलाइन, 1930 - साइबर अपराध हेल्पलाइन, 1076 - मुख्यमंत्री हेल्पलाइन, सोनभद्र पुलिस महिला सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्ध है एवं मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत यह अभियान सतत रूप से संचालित किया जाता रहेगा।

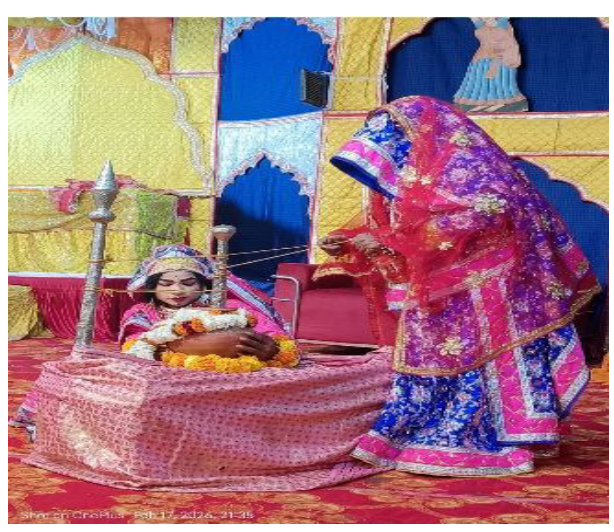

जनता की आवाज़ को प्राथमिकता

पुलिस अधीक्षक सोनभद्र ने जनता दर्शन में समस्याएं सुनकर दिए त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण के निर्देश

आधुनिक समाचार सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अभिषेक वर्मा द्वारा पुलिस कार्यालय में आयोजित जनता दर्शन कार्यक्रम के दौरान जनपद के विभिन्न थाना क्षेत्रों से आए फरियादियों की समस्याओं को गंभीरता, संवेदनशीलता एवं पूर्ण धैर्य के साथ सुना गया। जनता दर्शन में उपस्थित नागरिकों द्वारा भूमि विवाद, पारिवारिक विवाद, मारपीट, गुमशुदगी, साइबर धोखाधड़ी, राजस्व एवं आपसी विवादों सहित अन्य पुलिस संबंधी समस्याओं से अवगत कराया गया। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र ने प्रत्येक प्रकरण को व्यक्तिगत रूप से सुनते हुए संबंधित क्षेत्राधिकारी/थाना प्रभारी को निष्पक्ष, पारदर्शी एवं समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करने के स्पष्ट निर्देश दिए। उन्होंने निर्देशित किया कि सभी शिकायतों पर गुणवत्ता पूर्ण जांच करते हुए पीड़ित पक्ष को संतोषजनक कार्यवाही से अवगत कराया जाए तथा किसी भी प्रकार की लापरवाही, विलंब या अनावश्यक उत्पीड़न कतई स्वीकार नहीं किया जाएगा। जिन प्रकरणों में त्वरित हस्तक्षेप अपेक्षित है, उनमें तत्काल प्रभाव से विधिक कार्यवाही सुनिश्चित करने के आदेश भी दिए गए। पुलिस अधीक्षक द्वारा यह भी कहा गया कि जनता दर्शन केवल शिकायत सुनने का माध्यम नहीं, बल्कि पुलिस और जनता के बीच विश्वास, पारदर्शिता एवं जवाबदेही को मजबूत करने का एक सशक्त मंच है। आमजन की समस्याओं का समयबद्ध समाधान ही पुलिस की प्राथमिकता है।

सोनभद्र में दो बाइक की टक्कर में युवक की मौत,हुए हादसे में दो गंभीर रूप से घायल, जिला अस्पताल रेफर

सोनभद्र। लगातार बढ़ रही दुर्घटनाओं के बाद अब सोनभद्र जिले के रायपुर थाना क्षेत्र में मंगलवार शाम एक सड़क हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। यह दुर्घटना खलियारी-करही मुख्य सड़क मार्ग पर हुई। जानकारी के अनुसार, मंगलवार शाम करीब 7 बजे खलियारी-करही मुख्य मार्ग पर स्थित ग्राम सभा तेंनुआ (करही मोड़) के पास दो बाइकों की आमने-सामने टक्कर हो गई। सरईगढ़ निवासी 35 वर्षीय जितेंद्र तिवारी और तेंदुआ निवासी 40 वर्षीय बुद्धिराम यादव एक बाइक पर सवार होकर सुअरसोत से खलियारी बाजार जा रहे थे। इसी दौरान सामने से आ रही एक अन्य बाइक, जिसे कैमूर (बिहार) के खामकला निवासी 25 वर्षीय हीरालाल यादव चला रहे थे, अनियंत्रित होकर उनसे टकरा गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि तीनों बाइक सवार सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना मिलने पर रायपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और एम्बुलेंस की मदद से घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र वैनी बाजार पहुंचाया। वहां डॉक्टरों ने हीरालाल यादव को मृत घोषित कर दिया। बुद्धिराम यादव और जितेंद्र तिवारी को प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए जिला चिकित्सालय लोढ़ी रेफर कर दिया गया है। पुलिस ने मृतक हीरालाल यादव के शव को कब्जे में लेकर पंचनामा की कार्रवाई पूरी की और पोस्टमार्टम के लिए लोढ़ी सोनभद्र स्थित मोर्चरी हाउस भेज दिया। दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को भी रायपुर थाने ले जाया गया है। मौके पर कानून व्यवस्था सामान्य है।

सोनभद्र में रसोइयों ने किया प्रदर्शन,पर्मानेंट की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा

सोनभद्र। परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत रसोइयों ने अपनी लंबित मांगों को लेकर जिला कलेक्टर कार्यालय पर प्रदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री को संबोधित एक ज्ञापन जिलाधिकारी के माध्यम से भेजा। रसोइयों ने न्यूनतम मानदेय में वृद्धि, स्थायीकरण और अन्य कल्याणकारी योजनाओं को शीघ्र लागू करने की मांग की।

माध्यमिक भारतीय रसोईया वेलफेयर एसोसिएशन उत्तर प्रदेश ने बताया कि वर्ष 2004 से न्यूनतम मानदेय के अंतर बकाया का भुगतान नहीं हुआ है। संगठन ने रसोइयों से 11 माह के बजाय पूरे 12 माह कार्य लेने और तदनुसार मानदेय देने की मांग की है। प्रदर्शनकारी रसोइयों का कहना है कि वे प्रधानमंत्री पोषण योजना के तहत बहुत कम मानदेय पर काम कर रहे हैं, जिससे उनका जीविकोपार्जन मुश्किल हो गया है। इतने कम मानदेय में परिवार का भरण-पोषण करना कठिन है। ज्ञापन में रसोइयों के स्वतः नवीनीकरण, प्रस्तावित प्रतिबंधों को समाप्त करने, मातृत्व अवकाश, मेडिकल सुविधा और 14 आकस्मिक अवकाश प्रदान करने की भी मांग की गई है। इसके अतिरिक्त, मृतक रसोइयों के स्थान पर उनके परिवार के सदस्य को नियुक्ति तथा न्याय पंचायत स्तर पर स्थानांतरण की व्यवस्था सुनिश्चित करने की अपील की गई है।

एसोसिएशन के संस्थापक संरक्षक तईयब अंसारी ने बताया कि उन्हें उम्मीद थी कि 2026-27 के बजट में रसोइयों के लिए न्यूनतम मानदेय की घोषणा की जाएगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सरकार उनकी मांगों पर मानवीय दृष्टिकोण नहीं अपनाती और भारत सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मानदेय प्रदान नहीं करती, तो संगठन देशव्यापी आंदोलन और हड़ताल करने को बाध्य होगा।

अंसारी ने यह भी उल्लेख किया कि आशा, आंगनबाड़ी, बेसिक और शिक्षामित्रों के मानदेय बढ़ाने की चर्चाएं सामने आई हैं, लेकिन रसोइयों के मानदेय वृद्धि पर कोई बात नहीं हुई। हालांकि, संगठन ने शासन द्वारा समय-समय पर जारी आदेशों और कैशलेस सुविधा के प्रयासों के लिए सरकार का आभार भी व्यक्त किया।

सोनभद्र में यूपी बोर्ड परीक्षा शुरू,हाईस्कूल मे 80 केंद्रों पर पहले दिन कुल दो हजार से अधिक परीक्षार्थियों ने छोड़ी परीक्षा

सोनभद्र। सोनभद्र में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपी बोर्ड) की 10वीं और 12वीं कक्षा की परीक्षाएं 18 फरवरी से शुरू हो गईं। जिले के कुल 80 परीक्षा केंद्रों पर हाईस्कूल और इंटरमीडिएट के 48,325 परीक्षार्थी इम्तिहान दे रहे हैं। पहले दिन बुधवार को पहली पारी मे हाईस्कूल के हिंदी विषय की परीक्षा आयोजित की गई। इसमें 27,150 परीक्षार्थी शामिल हुए, जिनमें 13,455 छात्र और 13,695 छात्राएं थीं। हिंदी की परीक्षा में कुल 2,115 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे; इनमें 1,254 छात्र और 861 छात्राएं शामिल हैं। परीक्षाओं को नकलविहीन और सुचारु रूप से संपन्न कराने के लिए शिक्षा विभाग ने व्यापक इंतजाम किए हैं। परीक्षा केंद्रों के लिए 6 रूट बनाए गए हैं, जिन पर 6 सचल दस्ते (फ्लाइंग स्क्वॉड) तैनात किए गए हैं। सभी परीक्षा केंद्र सीसीटीवी कैमरे और वॉइस रिकॉर्डर से लैस हैं, जिनकी निगरानी जनपद कंट्रोल रूम से की जा रही है। जिला विद्यालय निरीक्षक जयराम सिंह ने बताया कि सभी केंद्रों पर सेंटर मजिस्ट्रेट, स्टेटिक मजिस्ट्रेट और पुलिस बल तैनात किए गए हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जिले में कोई भी परीक्षा केंद्र संवेदनशील या अति संवेदनशील नहीं है, जिससे परीक्षाएं शांतिपूर्ण और नकलविहीन माहौल में संपन्न हो सकें।

बेलवादह डैम में ट्यूब से नदी पार करते समय हादसा, महिला और उसके बच्चे की डूबकर मौत

सोनभद्र के बेलवादह डैम में ट्यूब के सहारे नदी पार करते समय बड़ा हादसा हो गया. पति, पत्नी और चार वर्षीय मासूम बच्ची नदी में गिर गए. पति किसी तरह तैरकर किनारे पहुंच गया, लेकिन पत्नी और बच्ची गहरे पानी में डूब गईं. जिसके बाद पति राहुल ने डायल 112 पर दी. मौके पर पहुंची पुलिस और स्थानीय मछुआरों ने काफी देर तक तलाश की, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली।

हाई हील्स से टेढ़े हो सकते हैं पैर,दुनिया के 23फीसदी लोगों को बूनियन डिजीज

नयी दिल्ली। बूनियन पैरों की एक कॉमन समस्या है, जिसमें पैर के अंगूठे के पास हड्डी जैसा उभार आ जाता है। अंगूठा उंगलियों की तरफ मुड़ जाता है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, पूरी दुनिया में लगभग 23फीसदी एडल्ट्स को यह समस्या है। महिलाओं में यह खतरा पुरुषों की अपेक्षा 2 से 10 गुना ज्यादा होता है। टाइट और पॉइंटेड शूज, खासकर हाई हील्स पहनने से पैरों पर दबाव पड़ता है। अगर समय पर ध्यान न दिया जाए, तो यह दर्दनाक हो सकता है। चलने में तकलीफ, जूते पहनने में परेशानी और यहां तक कि आस्टियोआर्थराइटिस भी हो सकता है। बूनियन कोई नई समस्या नहीं है। यह जेनेटिक कारणों से भी हो सकता है या फिर गलत जूते-चप्पल पहनने से हो सकता है। हालांकि, सही जूते चुनकर, एक्सरसाइज करके और डॉक्टर की सलाह से इसे मैनेज किया जा सकता है। आज बूनियन डिजीज के बारे में बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- बूनियन क्या है और इसे कैसे पहचानें? यह क्यों होता है और इसके खतरे क्या हैं? इसे कैसे मैनेज करें और कैसे इलाज करें? बूनियन क्या है? बूनियन पैर के बड़े अंगूठे के जोड़ पर होने वाला एक उभार है। यह हड्डी की गांठ जैसा बन जाता है, जो पैर के अंदर की तरफ बढ़ता है। मेडिसिन की भाषा में इसे हेलक्स वैल्गस भी कहते हैं। अंगूठे पर बूनियन सबसे कॉमन है। इसमें अंगूठे के आधार पर उभार हो जाता है। हालांकि, बूनियन सिर्फ अंगूठे में नहीं, छोटी उंगली में भी हो सकता है। यह जन्म से, टीनएज में या उम्र बढ़ने पर धीरे-धीरे विकसित होता है। बूनियनेटः छोटी उंगली के आधार पर, टाइट जूतों से। कॉन्जेनाइटल बूनियनः जन्म से ही बच्चों में।जुवेनाइल बूनियनः 18 साल से कम उम्र में। बूनियन को कैसे पहचानेंगे? बूनियन की शुरुआत धीमी होती है। पहले तो बस हल्का उभार नजर आता है, लेकिन धीरे-धीरे दर्द बढ़ता जाता है। अगर आपका बड़ा अंगूठा दूसरी उंगलियों की तरफ मुड़ रहा है, या जूते पहनने पर रगड़ लगती है, तो सावधान हो जाएं। कई लोग सोचते हैं कि यह बस थकान है, लेकिन असल में यह बूनियन का संकेत हो सकता है। लक्षणों को

इग्नोर न करें, क्योंकि समय के साथ यह बदतर हो जाता है। चलने में लंगड़ाहट आ सकती है, या पैर सुन्न पड़ सकते हैं। महिलाएं ज्यादा प्रभावित होती हैं, क्योंकि फैशन के चक्कर में वे असुविधाजनक जूते चुनती हैं। एक दोस्त ने बताया कि उसकी मां को हाई हील्स की वजह से इतना दर्द हुआ कि वे घर पर भी चप्पल नहीं पहन पाती थीं। बूनियन कोई एक वजह से नहीं होता। कई फैक्टर मिलकर इसे ट्रिगर करते हैं। सबसे बड़ी वजह है गलत जूते। हाई हील्स या नुकीले टिप वाले शूज पैरों पर अतिरिक्त दबाव डालते हैं, जिससे अंगूठा अपनी जगह से हट जाता है। जेनेटिक्स भी रोल प्ले करता है- अगर परिवार में किसी को है, तो आपको भी हो सकता है। इसके अलावा, पैर की बनावट, जैसे फ्लैट फुट या हाई आर्च, खतरा बढ़ाते हैं। गठिया जैसी बीमारियां, चोट लगना या ज्यादा देर खड़े रहना भी कारण बन सकता है। महिलाओं में हॉर्मोनल बदलाव, जैसे प्रेग्नेंसी, इसे और खराब कर देते हैं। एक स्टडी कहती है कि 70इ से ज्यादा मामलों में फैमिली हिस्ट्री जुड़ी होती है। सो, अगर आपका वजन ज्यादा है या काम ऐसा है कि पैरों पर जोर पड़ता है, तो सतर्क रहें। अगर बूनियन का इलाज न किया जाए, तो यह सिर्फ दर्द तक सीमित नहीं रहता। यह बर्साइटिस का कारण बन सकता है, जिसमें जोड़ों के आसपास सूजन आ जाती है। हैमर-टो की समस्या हो सकती है, जहां उंगलियां मुड़ जाती हैं। लंबे समय में आस्टियोआर्थराइटिस हो सकता है, जो जोड़ों को कमजोर कर देता है। चलना-फिरना मुश्किल हो जाता है, और रोजमर्रा के काम प्रभावित होते हैं। कुछ मामलों में पैर सुन्न पड़ जाते हैं या इन्फेक्शन का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए, शुरू में ही डॉक्टर से मिलें। मेरी सलाह है कि दर्द को नजरअंदाज न करें, क्योंकि बाद में सर्जरी की नौबत आ सकती है। डॉक्टर पहले पैर की जांच करते हैं। वे उभार देखते हैं, दर्द पूछते हैं और चलने का तरीका चेक करते हैं। अगर जरूरी हो, तो एक्स-रे करवाते हैं, जो हड्डियों की एलाइन्मेंट दिखाता है। किसी पोडियाट्रिस्ट से मिलना अच्छा रहता है। वे बताते हैं कि समस्या कितनी गंभीर है। ज्यादातर मामलों में सर्जरी की जरूरत नहीं पड़ती है। शुरू में लाइफस्टाइल बदलाव से ही कंट्रोल हो जाता है। सबसे पहले जूते बदलें- चौड़े और आरामदायक शूज चुनें, जिनमें टो बॉक्स बड़ा हो। बूनियन पैड्स या टेपिंग से दबाव कम करें। दर्द कम करने के लिए डॉक्टर से पूछकर पेन किलर ले सकते हैं। बर्फ से सिंकाई करें, इससे सूजन कम होती है। ऑर्थोटिक्स (शू इंसर्ट) पैरों को सपोर्ट देते हैं। फिजिकल थेरेपी से एक्सरसाइज सीखें, जो पैरों को मजबूत बनाती हैं। अगर दर्द बहुत ज्यादा है, तो कोरटीकोस्टरॉयड इंजेक्शन लगवाएं। अगर ये सब काम न करें, तो सर्जरी ऑप्शन हो सकता है। इसमें हड्डी को सही जगह पर लाया जाता है। सर्जरी के बाद 2-3 महीने में नॉर्मल लाइफ पर लौट सकते हैं। लेकिन सर्जरी आखिरी विकल्प है। प्रिवेंशन इलाज से बेहतर है। सही जूते चुनें- नुकीले या टाइट वाले अवॉइड करें। दिन के अंत में जूते ट्राई करें, क्योंकि पैर थोड़े सूज जाते हैं। अगर पैरों में कोई समस्या है, जैसे फ्लैट फुट, तो ऑर्थोटिक्स यूज करें। वजन कंट्रोल में रखें, क्योंकि एक्स्ट्रा वेट पैरों पर दबाव डालता है। रोज पैरों की एक्सरसाइज करें, जैसे अंगूठे को स्ट्रेच करना। महिलाएं हाई हील्स कम पहनें, और अगर पहनें तो ज्यादा देर न रहें। बच्चों में अगर संकेत दिखें, तो जल्दी डॉक्टर दिखाएं। सवालः क्या बूनियन अपने आप ठीक हो सकता है? जवाबः नहीं, बूनियन खुद से नहीं जाता। लेकिन सही मैनेजमेंट से लक्षण कंट्रोल हो सकते हैं। डॉक्टर से मिलें। सवालः महिलाओं को यह समस्या ज्यादा क्यों होती है? जवाबः महिलाएं हाई हील्स और टाइट शूज ज्यादा पहनती हैं, जो पैरों पर दबाव डालते हैं। हॉर्मोनल बदलाव भी रोल प्ले करते हैं। सवालः सर्जरी कब जरूरी होती है? जवाबः जब दर्द बहुत ज्यादा हो, चलना मुश्किल हो या अन्य तरीके काम न करें। डॉक्टर तय करेंगे। सवालः बूनियन से बचने के लिए क्या करें?जवाबः आरामदायक जूते पहनें, वजन कंट्रोल रखें, पैरों को रेस्ट दें और एक्सरसाइज करें। अगर फैमिली हिस्ट्री है, तो रेगुलर चेकअप करवाएं। बूनियन कोई बड़ी बीमारी नहीं, लेकिन इग्नोर करने से परेशानी बढ़ सकती है। सही जानकारी और छोटे बदलाव से इसे मैनेज कर सकते हैं। अगर लक्षण दिखें, तो डॉक्टर से बात करें। पैरों की सेहत अच्छी रखें, क्योंकि ये हमें हर कदम पर साथ देते हैं।

बाहर के कपड़े पहनकर सीधा बेड पर? न करें ये गलती, घर आते ही पहले बदलें कपड़े, डर्मेटोलॉजिस्ट से जानें ये क्यों जरूरी

नयी दिल्ली। दिनभर की थकान के बाद घर लौटते ही पहला ख्याल यह आता है कि बिस्तर मिले और लेट जाएं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि जिन कपड़ों को पहनकर आप ऑफिस, बाजार या मेट्रो से गुजरते हैं, वही कपड़े सीधे आपके बिस्तर पर पहुंच जाएं तो क्या होगा? कई लोग इसे बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करते और मानते हैं कि बाहर के कपड़े गंदगी और कीटाणु लेकर आते हैं, जो नींद और स्वास्थ्य दोनों को प्रभावित कर सकते हैं। वहीं कुछ लोग कहते हैं कि यह बिल्कुल सामान्य बात है। इससे कोई खतरा नहीं है। समझते हैं सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- क्या सच में बाहर के कपड़े इतने गंदे होते हैं? जवाब- हां, बाहर पहने गए कपड़े घर के मुकाबले ज्यादा गंदे हो सकते हैं। जब आप सड़कों, ऑफिस, बाजार या पब्लिक प्लेस से होकर गुजरते हैं तो आपके कपड़े धूल, मिट्टी और बैक्टीरिया के संपर्क में आते हैं जो हमें नंगी आंखों से नहीं दिखते हैं। इंटरनेशनल लेवल पर हाइजीन से जुड़े काम देखने वाली संस्था ने घ्एँ छोटे से प्रयोग में पाया गया कि साफ पायजामे की तुलना में बाहर पहने गए जिम कपड़ों या ऑफिस के कपड़ों पर ज्यादा बैक्टीरिया पनपते हैं। यानी, साफ दिखने के बावजूद कपड़ों पर गंदगी मौजूद रहती है। सवाल- बाहर के कपड़ों में कौन-कौन से कीटाणु या गंदगी बिस्तर तक पहुंच सकती है? जवाब- बाहर बहुत सारी गंदगी हवा में उड़ती रहती है, जो हमारे कपड़ों में चिक जाती है। साथ ही पब्लिक प्लेस पर बहुत सारे लोग आते जाते रहते हैं। उनके संपर्क में आने से उनके बैक्टीरिया भी हमारे संपर्क में आ सकते हैं। जैसे मेट्रो स्टेशन के लिफ्ट की स्विच, नल का टैप, ऑफिस के दरवाजे का हैंडल आदि।

बाहर के कपड़े मुख्य रूप से तीन तरह के संक्रमण या गंदगी ला सकते हैं।

सवाल- क्या इससे एलर्जी या स्किन प्रॉब्लम हो सकती है?जवाब- हां, बाहर के कपड़े पहनकर बिस्तर पर जाने से एलर्जी या त्वचा संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।

जिन लोगों को धूल या परागकण से एलर्जी है, उनके लिए यह समस्या और बढ़ सकती है। बैक्टीरिया और पसीने के कारण कपड़े स्किन पर रैशेज, खुजली या फंगल इंफेक्शन तक पैदा कर सकते हैं।

संवेदनशील त्वचा वाले लोगों के लिए यह और ज्यादा परेशान करने वाला होता है। हालांकि, सामान्य रूप से स्वस्थ लोगों के लिए यह खतरा बहुत बड़ा नहीं है, लेकिन समय के साथ यह असहजता और स्किन प्रॉब्लम्स बढ़ा सकता है। सवाल- किन लोगों को सबसे ज्यादा सावधानी बरतनी चाहिए? जवाब- हर किसी को सफाई का ध्यान रखना चाहिए, लेकिन कुछ लोगों के लिए यह और भी जरूरी है।

आइए इसे ग्राफिक के जरिए समझते हैं। सवाल- बाहर से लौटकर तुरंत कपड़े बदलना क्यों जरूरी है? जवाब- बाहर के कपड़े बदलने से आप धूल, बैक्टीरिया और एलर्जन को अपने बिस्तर और सोफे तक पहुंचने से रोकते हैं।

इससे बिस्तर ज्यादा समय तक साफ और ताजा बना रहता है।मानसिक सुकून भी मिलता है क्योंकि आपको लगता है कि आप एक साफ माहौल में आराम कर रहे हैं। कई एक्सपर्ट मानते हैं कि साफ कपड़ों में सोने से नींद की गुणवत्ता बेहतर हो जाती है।

सवाल- क्या कभी-कभी झपकी लेने के लिए बाहर के कपड़ों में बिस्तर पर जाना गलत है?जवाब- नहीं इससे बिस्तर जल्दी गंदा होगा और एलर्जी का खतरा बढ़ सकता है।

मानसिक रूप से भी साफ कपड़ों में लेटना ज्यादा आरामदायक महसूस होता है। सवाल- घर और बिस्तर को साफ-सुथरा रखने के लिए कौन-सी बेसिक हाइजीन अपनानी चाहिए?

जवाब- घर और बिस्तर को साफ-सुथरा रखने के लिए कुछ बेसिक हाइजीन का ख्याल रखना जरूरी है। सवाल- रोजमर्रा के कपड़े जैसे चादर-ब्लैंकेट कितनी बार धोना चाहिए ताकि संक्रमण से बचा जा सके? जवाब- रोजमर्रा के कपड़े 2-3 बार पहनने के बाद धोने चाहिए। जिम या पसीने वाले कपड़े हर बार धोना जरूरी है। चादर और तकिये का कवर हफ्ते में कम से कम एक बार धोना चाहिए। अगर घर में एलर्जी वाले लोग हैं तो हफ्ते में दो बार भी धो सकते हैं। कंबल और रजाई जैसे कपड़ों की क्लीनिंग सीजन में कम से कम दो से तीन बार होनी चाहिए।

गुड हैबिट्स- भोजन में ढेर सारी सब्जियां खाने की आदतःसब्जी खाने से दिमाग होता तेज, बढ़ती उम्र, कब्ज, अपच, बीमारियां दूर रहती हैं

नयी दिल्ली। दुनिया में 5 ब्लू जोन हैं। यहां के लोगों की औसत उम्र 100 साल से ज्यादा है। ये लोग लंबे जीवन के लिए 9 नियम

अपनाते हैं। उनमें सबसे खास है कि प्लांट बेस्ड खाना ही खाएंगे। ऐसी सभी चीजें खाएंगे, जो पेड़-पौधों के रूप में प्रकृति ने हमें दी हैं। ये खाने में ज्यादा-से-ज्यादा सब्जियां शामिल करते हैं। इसमें कोशिश ये होती है कि जितने ज्यादा रंगों की सब्जियां खाने में शामिल कर सकें। सब्जियां विटामिन्स, मिनरल्स और फाइबर से भरपूर होती हैं। इनसे मिले न्यूट्रिएंट्स से इम्यून सिस्टम मजबूत होता है और डाइजेस्टिव सिस्टम बेहतर होता है। इससे हार्ट डिजीज, स्ट्रोक और टाइप-2 डायबिटीज जैसी क्रॉनिक बीमारियों का जोखिम कम हो जाता है। खास बात ये है कि इनमें कैलोरी और फाइबर कम होता है। आज 'गुड हैबिट्स' कॉलम में ज्यादा सब्जियां खाने की आदत के बारे में जानेंगे। साथ ही जानेंगे कि- खाने में सब्जियां ज्यादा क्यों होनी चाहिए? ज्यादा केला, आलूबुखारा और टोमैटो प्यूरी खाएं। स्वाद और टेक्सचर की ढेरों वैरायटी- हर फल और सब्जी का स्वाद और बनावट अलग होती है। आप चाहें तो तीखे स्वाद वाले प्याज, जैतून और मिर्च ट्राई करें या फिर हल्के स्वाद वाले मशरूम और कॉर्न। मीठा खाने का मन हो तो अंगूर, अनन्नास और आलूबुखारा खाएं और खट्टे स्वाद के लिए नींबू और चकोतरा बढ़िया हैं। फाइबर से भरपूर- अधिकतर फल और सब्जियां फाइबर से भरपूर होते हैं, जो पेट भरने और पाचन को दुरुस्त रखने में मदद करते हैं। ज्यादा फाइबर वाली सब्जियां हैं- मटर, ब्रोकली और फूलगोभी। फाइबर वाले फल हैं- रसभरी, नाशपाती और सेब। कम कैलोरी, कम फैट- अमूमन फल और सब्जियां कम कैलोरी और फैट वाली होती हैं, इसलिए इन्हें ज्यादा मात्रा में खा सकते हैं बिना वजन बढ़ने की चिंता के। उदाहरण के तौर पर, आधा कप अंगूर खाने से आप एक चौथाई कप के मुकाबले 200 से ज्यादा कैलोरी बचा सकते हैं। हां,

एवोकाडो, जैतून और नारियल जैसे कुछ अपवाद भी हैं जिनमें थोड़ा ज्यादा फैट होता है। बीमारियों से बचाव- फल और सब्जियों में कुछ खास प्राकृतिक तत्व फाइटोकेमिकल्स होते हैं जो कई बीमारियों से बचाव करते हैं। इन्हें खाने से डायबिटीज टाइप 2, हार्ट अटैक, स्ट्रोक, हाई ब्लड प्रेशर और कैंसर का खतरा कम हो सकता है। खासकर ब्रोकली, पत्ता गोभी, सरसों और जलकुंभी जैसी क्रूसीफेरस सब्जियां कैंसर से बचाव में मददगार मानी जाती हैं। अच्छी सेहत में मददगार- इनमें सैचुरेटेड फैट, नमक और चीनी बहुत कम होती है, इसलिए ये बैलेंस्ड डाइट का हिस्सा बनती हैं। ये वजन कम करने या बढ़ने से बचाने में मदद करती हैं। साथ ही सूजन कम करने, कोलेस्ट्रॉल और ब्लड प्रेशर घटाने में भी असरदार हैं। बहुत कम सोडियम और कोलेस्ट्रॉल- ताजे फल और सब्जियों में सोडियम बहुत कम होता है। जैसे बहुत लोग मानते हैं कि सेलरी में सोडियम ज्यादा होता है, लेकिन एक डंठल में सिर्फ 30 मिलीग्राम होता है, जो सिर्फ 1फीसदी डेली वैल्यू है। सब्जियां कैसे खाएं? अब सवाल यह है कि सब्जियों को अपनी रोज की डाइट में कैसे शामिल करें। बहुत से लोग सोचते हैं कि सब्जियां

सब्जियां खाने के क्या फायदे हैं? सब्जियां क्यों हैं इतनी खास? सब्जियां हमारे शरीर के लिए एक सुपरफूड की तरह हैं। इनमें विटामिन्स, मिनरल्स, फाइबर और एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं, जो हमें अंदर से मजबूत बनाते हैं। लेकिन ऐसा क्या है जो इन्हें इतना जरूरी बनाता है? विटामिन और मिनरल्स का खजाना- फल और सब्जियां विटामिन ए,सी,ई और मिनरल्स जैसे मैग्नीशियम, जिंक, फॉस्फोरस और फोलिक एसिड से भरपूर होती हैं। पोटेशियम के लिए एवोकाडो, शकरकंद,

है सब्जियां कैलोरी में कम और पोषण में ज्यादा होती हैं, जिससे वजन बढ़ने का खतरा नहीं रहता और शरीर फिट रहता है। दिमाग की कार्यक्षमता बढ़ती है हरी सब्जियों में पाए जाने वाले विटामिन्स और मिनरल्स मस्तिष्क को सक्रिय रखते हैं और याददाश्त बेहतर बनाते हैं। त्वचा निखरती है- विटामिन ए और सी से भरपूर सब्जियां त्वचा को स्वस्थ, चमकदार और जवां बनाए रखने में मदद करती हैं। हर दिन कम से कम 2-3 कटोरी सब्जियां खानी चाहिए। इससे न सिर्फ शरीर स्वस्थ रहता है, बल्कि आपका मूड भी अच्छा रहता है। सब्जियां न खाने का नुकसान- अगर सब्जियां नहीं खाते, तो

खाना बोरिंग है, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। कुछ आसान तरीके हैं-सब्जियों को सलाद बनाएंः पालक, टमाटर, खीरा और गाजर को मिलाकर एक रंग-बिरंगा सलाद तैयार करें। थोड़ा नींबू और नमक डालें, मजा दोगुना हो जाएगा। सूप में डालकर खाएंः ठंड के दिनों में सब्जियों का सूप बनाएं। गाजर, मटर और ब्रोकली डालकर इसे सेहतमंद और स्वादिष्ट बनाएं। भूनकर खाएंः आलू, शिमला मिर्च और बैंगन को हल्का तेल लगाकर भून लें। यह नाश्ते के लिए भी बढ़िया है। स्मूदी ट्राई करेंः पालक या चुकंदर को फलों के साथ ब्लेंड करें। यह पीने में आसान और पोषण से भरपूर होता है। दाल में मिलाकर खाएंः अपनी रोज की दाल में थोड़ी सी सब्जियां डालें, जैसे लौकी या पालक। स्वाद और सेहत दोनों बेहतर होते हैं। सब्जियां खाने के फायदे - सब्जियां खाने से हमारे शरीर को ढेर सारे फायदे मिलते हैं। इसके कुछ खास फायदे हो सकते हैं- पेट की सेहत बेहतर रहती है सब्जियों में फाइबर भरपूर मात्रा में होता है, जो पाचन तंत्र को दुरुस्त रखता है और कब्ज की समस्या नहीं होने देता। बीमारियों से बचाव होता है सब्जियों में मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स शरीर की कोशिकाओं को नुकसान से बचाते हैं और इम्यून सिस्टम को मजबूत करते हैं। वजन कंट्रोल में रहता शरीर को जरूरी तत्व नहीं मिलते। इम्यूनिटी कमजोर होती है, पेट खराब रहता है और वजन बढ़ने का खतरा रहता है। लंबे समय तक ऐसा चला तो डायबिटीज और हार्ट की बीमारियां भी हो सकती हैं। आपके शरीर को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है- पाचन की दिक्कतः फाइबर की कमी से पेट खराब रहता है। कमजोरीः विटामिन्स न मिलने से थकान जल्दी होती है। बीमारियों का खतराः दिल और डायबिटीज जैसी बीमारियां बढ़ सकती हैं। वजन बढ़ता हैः सब्जियों की जगह जंक फूड खाने से मोटापा हो सकता है। सब्जियों को खाने में कैसे शामिल करें? सब्जियां खाना कोई मुश्किल काम नहीं है। बस थोड़ा सा दिमाग लगाएं और ये आपकी जिंदगी का हिस्सा बन जाएंगी। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। पहले मुझे पालक और भिंडी बिल्कुल पसंद नहीं थे। कुछ आसान तरीके आजमाएं और अब मेरी थाली में हर दिन कोई न कोई सब्जी जरूर होती है। सब्जियां खाना सिर्फ सेहत के लिए ही नहीं, पूरी जिंदगी के लिए फायदेमंद है। ये छोटी-सी आदत आपको लंबा और खुशहाल जीवन दे सकती है। आज से ही शुरू करें। अपनी थाली में रंग भरें और देखें कि आपका शरीर और मन दोनों कैसे खिल उठते हैं।

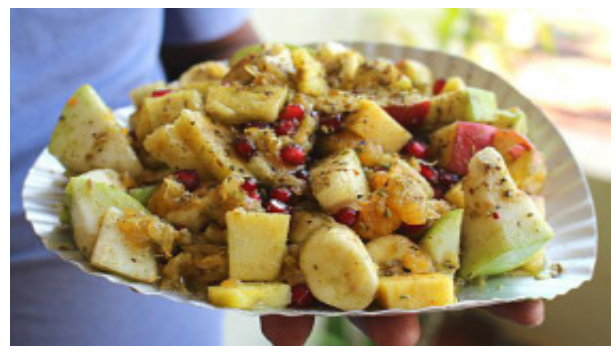

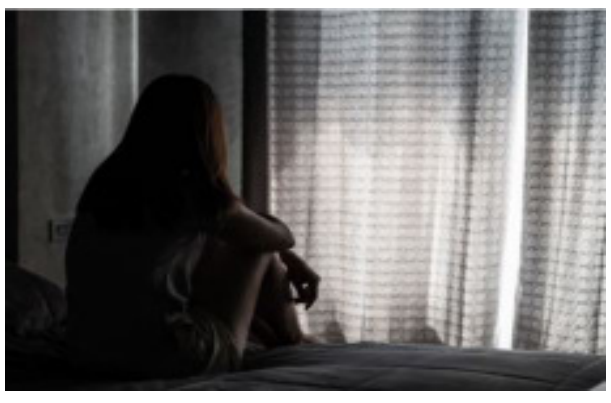

पूरा बचपन हॉस्टल में अकेले त्यौहार मनाया,आज भी त्योहार पर घर जाने का मन नहीं करता, बढ़ता डिप्रेशन, अकेलापन

नयी दिल्ली। त्योहार हमारे समाज में खुशी, अपनेपन और सामूहिकता का प्रतीक माने जाते हैं। लेकिन कई लोगों के लिए यह समय खुशी का न होकर उदासी, डिप्रेशन और अकेलेपन का होता

है। जब पूरी दुनिया परिवार के साथ मिलकर खुशियां मना रही होती है, कुछ लोगों के लिए ये वो वक्त होता है, जब पुराना ट्रॉमा और पुराने दर्द फिर से उभर जाते हैं। मनोविज्ञान में इसे 'फेस्टिव ब्लूज' कहा जाता है। विषय पर बात करेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी से और समझेंगे उपाय सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- बहुत पहले मैंने एक आर्टिकल में पढ़ा था फेस्टिव ब्लूज के बारे में। फेस्टिवल के समय

कुछ लोग डिप्रेशन और एंग्जाइटी महसूस करते हैं। वो आर्टिकल पढ़कर मुझे लगा कि मेरे साथ भी तो कुछ ऐसा ही होता है। खासकर दिवाली और होली के टाइम पर मैं बहुत डिप्रेशन महसूस करता हूं। शायद इसका कारण फैमिली के साथ मेरे डिफिकल्ट रिश्ते हैं। मैं पांच साल का था, जब मेरी मां की डेथ हो गई। पापा ने दूसरी शादी कर ली और दूसरी मां ने कभी मुझे और मेरी बहन को अपने बच्चों की तरह एक्सेप्ट नहीं किया। रहते हम एक ही घर में थे, लेकिन मुझे मां का प्यार महसूस नहीं हुआ। पापा भी हम बच्चों से बिल्कुल डिटैच ही रहते थे। 12 साल की उम्र में मैं हॉस्टल पढ़ने चला गया। दिवाली के समय जब सारे बच्चे अपने घर जाते थे, मैं हॉस्टल में ही रहता था। अब मेरी उम्र 33 साल है और मैं दिल्ली में जॉब करता हूं। अभी भी जब फेस्टिवल का टाइम आता है और मैं अपने कुलीग्स को घर जाते या घर पर फैमिली के साथ फेस्टिवल मनाते देखता हूं तो मुझे बहुत डिप्रेशन महसूस होता है। दिवाली के दिन मैं घर पर अकेले ही रहता हूं और देर रात तक ड्रिंक करता रहता हूं। क्या आप मुझे कुछ सुझाव दे सकते हैं कि मैं अवसाद और उदासी की इस फीलिंग से कैसे बाहर निकलूं? बचपन में त्योहार का मतलब सिर्फ पटाखे, मिठाई या छुट्टियों तक सीमित नहीं रहता। यह वह समय होता है, जब बच्चा सबसे ज्यादा प्यार, अपनापन और सुरक्षा महसूस करता है। बच्चे के दिमाग में फेस्टिवल के साथ ये सारी मेमोरीज जुड़ जाती हैं- मम्मी प्यार कर रही हैं।पापा के साथ मिलकर पटाखे फोड़ रहे हैं। मां तरह-तरह के पकवान बना रही हैं। घर में दोस्त-रिश्तेदार आ रहे हैं। चारों तरफ रौनक और चहल-पहल है। ब्रेन में यह मेमोरी सेव हो गई है कि फेस्टिवल मतलब खुशी और प्यार। अब उस बच्चे की कल्पना करिए, जिसके मन में फेस्टिवल की ऐसी कोई मेमोरी नहीं है। वो त्योहार के दिन स्कूल के हॉस्टल में अकेला है। मेस का खाना खा रहा है। हॉस्टल के बाकी सारे बच्चे घर जा चुके हैं। एकाध टीचर, मेस वर्कर ही बचे हैं। उसके ब्रेन में फेस्टिवल की मेमोरी उदासी और अकेलेपन की है। कोई भी बच्चा जब उपेक्षा और दूरी महसूस करता है, तो त्योहार उसके लिए खालीपन और असहायता का प्रतीक बन जाते हैं। जैसेकि- मां को जल्दी खो देनाः जब बच्चा पांच साल की उम्र में मां को खो दे, तो त्योहारों पर सबसे बड़ी कमी मां की अनुपस्थिति के रूप में सामने आती है। दीपावली की पूजा हो या होली की तैयारी, सब अधूरा लगता है। सौतेली मां से दूरीः अगर नई मां बच्चे को अपनेपन से न अपनाए, तो त्योहार के समय जब बाकी बच्चे सजाए-संवारे जाते हैं, उन्हें तोहफे और मिठाई मिलती है, वहीं उपेक्षित बच्चा भीतर से टूट जाता है। पिता का इमोशनली डिटैच होनाः जब पिता खुद भी भावनात्मक रूप से दूर हों, तो बच्चा पूरी तरह अकेला महसूस करता है। त्योहारों पर उसके लिए कोई सुरक्षित कोना नहीं होता। हॉस्टल में अकेलापनः जब 12 साल की उम्र से ही बच्चा त्योहारों पर हॉस्टल में रह जाए, जबकि बाकी बच्चे घर जा रहे हों, तो उसके मन को एक गहरी चोट लगती है कि 'मैं अलग हूं, मेरे पास कोई नहीं है।'इन अनुभवों से त्योहार बच्चे के लिए 'खुशियों' की नहीं बल्कि 'खोई हुई चीजों की याद' बन जाते हैं। एडल्ट लाइफ में फेस्टिव ब्लूज- अमूमन लोग बचपन के ट्रॉमा को एडल्ट जीवन में भी कैरी करते रहते हैं। बच्चा जब बड़ा होता है, जॉब करता है और इंडीपेंडेंट होता है, तब भी त्योहार पर वही पुराना ट्रॉमा ट्रिगर होता है। ऑफिस कुलीग्स परिवार के साथ त्योहार मनाते हैं, सोशल मीडिया पर तस्वीरें डालते हैं। यह सब देखकर उसके भीतर का पुराना खालीपन और गहरा हो जाता है। बचपन का पैटर्न फिर से एक्टिव हो जाता हैः त्योहार, अकेलापन, उपेक्षा, तुलना। नतीजा ये होता है कि त्योहार के दिन वह अकेले अपने कमरे में रहता है, देर रात तक शराब पीता है और डिप्रेशन महसूस करता है। यह केवल एक दिन की बात नहीं है। धीरे-धीरे यह सोच मन में पक्की हो जाती है कि 'त्योहार मेरे लिए नहीं हैं' और व्यक्ति जीवन के सुखद पलों को भी खो देता है।गाइडलाइंस बताती हैं कि बचपन की नकारात्मक भावनात्मक यादें वयस्कता में डिप्रेशन और एंग्जाइटी का सबसे बड़ा ट्रिगर हो सकती हैं। सीबीटी की मदद से सेल्फ हेल्प- त्योहारों के मायने बदलें, नई यादें बनाएं याद रखिए, हम अतीत की घटनाओं को नहीं बदल सकते, लेकिन उनसे जुड़ा अर्थ जरूर बदल सकते हैं। यही सीबीटी (कॉग्निटिव बिहेवियरल थेरेपी) की बुनियादी सोच है।

माइक्रो लर्निंग एप्स उपयोगी हैं, किन्तु ज्ञान का विकल्प नहीं

इस हफ्ते मैं ट्रेन से, मध्यप्रदेश के बीना में बीपीसीएल फैक्ट्री विजिट पर गया था। मेरे सामने वाली सीट पर एक पेशेवर युवा बैठा था, पहले कुछ घंटे वह कुछ ज्यादा नहीं बोला। उसने मुस्कराकर अभिवादन किया और मैंने भी वैसे ही जवाब दिया। वह 'डूम स्क्रॉलिंग' में व्यस्त था, जिसका मतलब वह अपने फोन पर अंतहीन ऑनलाइन कंटेंट स्क्रॉल किए जा रहा था। मैंने भी अपने ज्ञान को ताजा करने के लिए एक पुरानी किताब फिर से पढ़नी शुरू की। पुरानी किताब- सर जॉन विटमोर की कोचिंग फॉर परफॉर्मेंस- का जाहिराना तौर पर रंग फीका पड़ गया था। अचानक उसने मेरी ओर देखा और कहा 'सर, क्या यह वही 'ग्रो मॉडल' है, जो कोचिंग के लिए महत्वपूर्ण टूल जैसा है और बातचीत एवं विकास को आसान बनाने के लिए एक स्ट्रक्चर्ड अप्रोच मुहैया कराता है?' मैंने किताब बंद की और अचम्भे से उसकी ओर देखा। मैंने खुद से कहा 'वाह, इतनी छोटी उम्र में इसने बहुत पढ़ा है।' इस विचार के चलते मेरी उस युवा में उत्सुकता जागी और मैंने कहा, 'आपने कब ये पुस्तक पढ़ी? दरअसल, मैंने इस पुस्तक को दो दशक पहले खरीदा था।' उसने तपाक से कहा 'आप इस पुस्तक का चौथा संस्करण पढ़ रहे हो। मैंने इसके

छठे संस्करण के कुछ चुनिंदा समरी प्वाइंट पढ़े हैं।' और उसने अपने मोबाइल में दिखाते हुए पुस्तक के छठे संस्करण में जोड़े नए कॉन्सेप्ट को दोहराया। उसने इसी यात्रा में माइक्रो लर्निंग एप पर सर्फिंग करते हुए इस पुस्तक के बारे में जानकारी हासिल की थी। तब मुझे एहसास हुआ कि उसके जैसे कई लोग खुद में सुधार की लहर पर सवार हैं, एक नया वर्ग उन माइक्रो लर्निंग एप से सीखता है, जो किताब का निवालाभर सारांश देकर 15 मिनट में किसी को स्मार्ट बनाने का दावा करते हैं। मैंने कहा, 'निश्चित ही ये मात्रात्मक तौर पर अधिक जानकारी लेने का बढ़िया तरीका हो, किंतु गुणवत्ता के संदर्भ में नहीं।' और बिना किसी बहस के उसने भी इस पर सहमति दी। उसने प्रतिउत्तर में कहा, 'आपकी पीढ़ी को छोड़कर कोई भी गहरे ज्ञान में रुचि नहीं रखता और ये माइक्रो लर्निंग एप कम से कम हमें बोर्ड मीटिंग जैसे नाजुक मौकों से पार पाने में मदद करते हैं, जहां किसी को भी ज्ञान का प्रदर्शन करना होता है। ये एप पूरी किताब पढ़ने से पहले उपयोगी प्रीव्यू देते हैं।' और वो तर्क में सही था। एमएनसी में काम करने वाले व्यस्त एग्जीक्यूटिव को 260 पन्नों की भारी भरकम किताब क्यों पढ़नी चाहिए, जिसे मैं पढ़ रहा था? वो जो कर रहा था, उसमें स्मार्ट था। धीरे-धीरे हम एक दूसरे के बारे में और जानने लगे। वह किताब के बारे में मेरी बातों को पूरे ध्यान से सुनने लगा। लेकिन जब मैंने उससे पूछा कि 'अगर तुम्हें समरी रुचिकर लगती है तो क्या वास्तव में तुम किताब खरीदकर विषय को और गहराई से समझना चाहते हो? यहां पर उसने शर्माते हुए स्वीकार किया कि 'नहीं, मैं ऐसा नहीं करता।' यहीं पर मुझे लगा कि माइक्रो लर्निंग एप में कोई बात तो है। जब आपके पास ध्यान देने के लिए महज 3-4 मिनट ही हों, ऐसे में ये आपको अधिक उपलब्धि का अहसास करा सकता है। यदि कंटेंट सही से गढ़ा हो, तो यह एक समय पर दिमाग में बहुत अधिक सूचनाएं आने से पड़ने वाले भार को भी कम कर सकता है। खासकर उस युवा जैसे व्यस्त एग्जीक्यूटिव्स को त्वरित उपलब्धि का अहसास भी कराता है, जो देखकर, सुनकर व तार्किक तरीके से सूचनाओं को ग्रहण करना पसंद करते हैं। एप्लाइड साइकोलॉजी एंड ह्यूमन डेवलपमेंट विभाग के प्रोफेसर्स कहते हैं कि तात्कालिक उपयोग के लिए माइक्रो लर्निंग एप अच्छे हैं।ये साबित हुआ है कि किसी एक विषय पर एक किताब के सारांश से दूसरे पर कूदने की तुलना में लंबे समय का अध्ययन अधिक समग्रता वाली समझ व ज्ञान विकसित करता है। यह आपको तत्काल बौद्धिक समृद्धता का अहसास कराता है। लेकिन इन प्रोफेसरों का कहना है कि 'विशेषतः जो लोग लंबे समय तक ढेर सारे एप का इस्तेमाल करते हैं, उन्हें जरूरत के वक्त महत्वपूर्ण सूचना की कमी का अहसास होता है। फंडा यह है कि माइक्रो लर्निंग एप्स उपयोगी हैं, लेकिन तभी, जब उन्हें ज्ञान के विकल्प के बजाय ज्ञान में सहायक के तौर पर उपयोग किया जाए।

बच्चों के लिए ऐसे खिलौने चुनें, जो तुरंत फेंक न दिए जाएं

मुझे पता है, आप क्या सोच रहे हैं? दरअसल, ये कहना आसान है और करना मुश्किल। खासकर तब जब कोई व्यक्ति ट्रेन की बोगी में कई सारी गेंदें और गुड़िया

लटकाए घूम रहा है और बार-बार आकर कह रहा है कि कौन मुन्ना रो रहा है? मैं उसे दो सेकंड में खुश कर दूंगा और वह एक रबर की पारदर्शी गेंद रेलवे बर्थ के बीच फेंकता है और गेंद अचानक कई रंगों में चमकने लगती है।

और बच्चा कहता है कि 'मुझे वो बॉल चाहिए।' बच्चे को समझाने की कोशिश करें कि यह 48 घंटे से ज्यादा काम नहीं करेगी तो सेल्समैन आप पर टूट पड़ता है कि सर, मैं गारंटी देता हूं कि मुन्ना आपकी वापसी की यात्रा में भी इसी से खेलेगा।मैं हमेशा इसी ट्रेन में रहता हूं। अगली गर्मियों में भी यदि ये गेंद काम नहीं करे आप आकर इसे वापस कर सकते हो। मैं बिना कोई सवाल पूछे इसे बदल दूंगा।

' इस बीच आप देखेंगे कि बच्चा पहले ही बॉल से खेलने लग गया है और उसे दूसरी बर्थों पर लुढ़काने लगा है।आपके पास इसे खरीदने के अलावा कोई चारा नहीं रहता। और ऐसी खरीदारी कर चुके आपमें से अधिकांश लोग मुझसे सहमत होंगे कि ऐसी गेंदें एक यात्रा में भी नहीं चल पाती। या तो बच्चा इसे खो देता है या फिर गेंद की वो चमकीली लाइटें बंद हो जाती है, जो फर्श पर मारने के बाद बच्चे को आकर्षित करती थीं।ज्यादातर दूसरा वाला कारण अधिक सामान्य है। अब यह बॉल आपके बैग में रखी हुई एसी कार से घर वापसी की यात्रा कर रही है। और घर पर ये बॉल या तो भुला दी गई है या किसी कोने में अव्यवस्थित सी पड़ी है और कुछ समय बाद कूड़ेदान में चली जाती है!

अगर आपके घर में बच्चे हैं तो मुझसे यह मत कहिएगा कि आपके घर में ऐसा कुछ नहीं हुआ। यही कारण है कि मैंने इस हैडलाइन के साथ शुरूआत की थी कि बच्चों के लिए ऐसे खिलौने चुनें, जो तुरंत फेंक न दिए जाएं।

उपहार विशेषज्ञ इस बात पर जोर देते हैं कि कैसे उपयोगिता, बच्चे के विकास और खुशी को प्राथमिकता दी जाए। वे ऐसे गिफ्ट की सलाह देते हैं, जो खेल और रचनात्मकता को बढ़ावा दे और प्लास्टिक से बचने की राय देते हैं।

यहां उम्र के अनुसार कुछ सुझाव पेश हैं।4 वर्ष उम्र वालों के लिएः हिसार में एक स्कूल चलाने वाले मेरे दोस्त हरिपाल पिलानिया ने मुझे लकड़ी के क्यूब्स दिए, जिनसे बच्चे रूबिक क्यूब बना सकते हैं। यकीन मानें, यह गेम आज भी मेरे घर पर 10 साल से है और जो बच्चे मेरे घर आते हैं, बिना थके इससे खेले हैं, चाहे फिर वह 10 साल के हों।6 वर्ष उम्र वालों के लिएः कैट एंड रैट थीम वाले कार्ड गेम।

मैंने इसे अमेरिका से खरीदा था। बच्चे ताश खेलने वाले बड़ों की नकल पसंद करते हैं। अकेली बिल्ली किसी चूहे पर भारी पड़ जाए या चूहों का एक समूह बिल्ली को घेर ले, यह वाकई मजेदार खेल है। यहां तक कि हमारी उम्र के लोग भी इसे खेल सकते हैं। मुझे बताओ कि ' रैट-ए-टैट कैट' जैसे गेम खेलने का किसका मन नहीं करेगा?

8 वर्ष उम्र वालों के लिएः कई सारे ऐसे कलरफुल जर्नल्स हैं, जो प्रश्नों से भरे होते हैं, उनमें इलस्ट्रेशन और ड्रॉइंग के लिए संकेत होते हैं- उदाहरण के लिए 'यदि मेरे पास एक रोबोट होता तो मैं इसे प्रोग्राम करने के लिए कहता.(ऐसी चीजें मेरे दिमाग में है)

10 वर्ष उम्र वालों के लिएः नए बेकर्स और उत्सुक कुक्स के लिए शेफ इन ट्रेनिंग एक गेम है। इसमें मिनी व्हिस्क, स्पेचुला, नापने वाला कप और कई सारी चीजें होती हैं। यह उन्हें अंडे फेंटने और सलाद सजाने जैसे कुछ काम सीखने में मदद करता है।

फंडा यह है कि अलग-अलग उम्र के लिए ऐसा सही उपहार चुनना, जिसे वे संभाल कर रखें और ये आसान काम नहीं है। सबसे पहले हमें खुद को रचनात्मक होना पड़ेगा और उससे अधिक उपयोगिता के बारे में सोचना होगा कि वह गिफ्ट उसे बोर ना करे।

यदि आपके पास कुछ सुझाव हैं, तो शेयर करें, ताकि मैं सभी पाठकों को इस बारे में बता सकूं।

देश आने वाले कल की नई कृषि-व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है

कृषि क्षेत्र करोड़ों लोगों को

आजीविका देता है। साथ ही, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण विकास का प्रमुख आधार भी है। ऐसे में राष्ट्र की प्रगति के लिए हमारे किसान भाइयों-बहनों की उन्नति आवश्यक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने कृषि और किसान कल्याण को नीति-निर्माण की सर्वोच्च प्राथमिकता में स्थान दिया है। किसानों की मेहनत को उचित सम्मान मिले, उनकी फसल को सही दाम मिले और उनका जीवन खुशहाली से भरा हो, इसके लिए केंद्र सरकार संकल्पित है। बीते दशक में केंद्र सरकार ने किसान कल्याण के लिए ऐतिहासिक कदम उठाए हैं, जिनसे न केवल किसानों की आय बढ़ी, बल्कि उनका आत्मविश्वास भी सुदृढ़ हुआ है। चाहे न्यूनतम समर्थन मूल्य में अभूतपूर्व वृद्धि हो, फसलों की खरीद में रिकॉर्ड बढ़ोतरी हो या तकनीकी नवाचारों के माध्यम से खेती को आधुनिक बनाने का प्रयास; सरकार ने हर क्षेत्र में किसानों के लिए दिन-रात काम किया है। किसान हितैषी नीतियों, तकनीकी के उपयोग, नवाचार और बाजार तक सुगम पहुंच के माध्यम से भारत टिकाऊ, समावेशी और भविष्य-उन्मुख कृषि-व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है। पहले के समय में हमारे किसान फसल लागत से नाममात्र का लाभ कमा पाते थे, पर प्रधानमंत्री ने स्पष्ट नीति बनाई कि हर फसल पर उसकी लागत से ऊपर, कम से कम 50इ मुनाफा सुनिश्चित होगा। आज खरीफ व रबी की प्रमुख फसलों के एमएसपी में 1.8 से 3.3 गुना तक की वृद्धि की गई है। इससे किसानों को उनकी मेहनत का पूरा दाम मिलना सुनिश्चित हुआ है। 2004-14 के मुकाबले 2014-2025 के दौरान एमएसपी पर खरीदी गई फसलों की मात्रा और भुगतान में भी रिकॉर्ड वृद्धि हुई है। सरकार ने केवल एमएसपी बढ़ाने तक ही खुद को सीमित नहीं रखा, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि यह लाभ सीधे किसानों के खाते में पहुंचे। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) के माध्यम से हमने पारदर्शिता और गति के साथ किसानों को उनकी मेहनत का पूरा दाम दिलाया है। यह एक ऐसी कृषि क्रांति है, जो हमारे किसान भाइयों-बहनों का जीवन व खेती की दशा-दिशा बदल रही है। अब किसान निश्चिंत होकर खेती करता है, क्योंकि उसे पता है कि उसकी फसल का उचित मूल्य व समय पर भुगतान सुनिश्चित मिलना है। आज केंद्र सरकार बीज से बाजार तक, हर कदम पर किसानों के साथ खड़ी है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड से किसानों को अपनी मिट्टी की सेहत जानने और सही फसल चुनने में मदद मिल रही है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना प्राकृतिक आपदाओं से आर्थिक सुरक्षा दे रही है। ई-नाम के जरिए डिजिटल बाजार से जुड़कर किसानों को बेहतर दाम मिल रहा है। ड्रोन और स्मार्ट सिंचाई तकनीक खेती को आसान और आधुनिक बना रहे हैं। इसके साथ ही, प्राकृतिक खेती, फसल विविधीकरण और कृषि यंत्रों पर अनुदान के माध्यम से हमने किसानों को आत्मनिर्भर बनाने का हरसंभव प्रयास किया है। सरकार ने किसानों को ब्याज सहायता के तहत किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से 3 लाख रुपए तक का अल्पकालिक ऋण 7फीसदी ब्याज पर उपलब्ध कराया है। यह समय से चुकाने पर 3फीसदी अतिरिक्त छूट मिलती है, जिससे प्रभावी ब्याज दर 4फीसदी रह जाती है। देश में 7.75 करोड़ से अधिक केसीसी खाते हैं, जिससे किसानों को सस्ता व सुलभ ऋण मिल रहा है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड, ई-नाम, ड्रोन, स्मार्ट सिंचाई, प्राकृतिक खेती, कृषि यंत्रों पर अनुदान आदि के माध्यम से खेती को आधुनिक-टिकाऊ बनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान के तहत मूल्य समर्थन योजना, मूल्य न्यूनता भुगतान योजना, बाजार हस्तक्षेप योजना और मूल्य स्थिरीकरण निधि को लागू किया गया है। मूल्य स्थिरीकरण निधि के तहत दलहन, तिलहन व कोपरा की एमएसपी पर खरीद सीधे किसानों से की जाती है। 2024-25 में सोयाबीन की 19.97 लाख मीट्रिक टन व मूंगफली की 17.73 लाख मीट्रिक टन खरीद की गई, जो अब तक की सबसे अधिक है। तकनीकी नवाचारों के साथ ये पहलें किसानों को आत्मनिर्भर, समृद्ध व खुशहाल बनाने की दिशा में मील का पत्थर हैं। (ये लेखक के अपने विचार हैं) (शिवराज सिंह चौहान)

हालात पहले से बेहतर पर हमें अभी और आगे बढ़ना है

मुल्क का वजूद उसके पुरुषार्थ-संकल्प से बनता है। न भूलें, बमुश्किल एक दशक पहले की हकीकत। अंग्रेजों का छोड़ा श्रेष्ठ डिफेंस इन्फ्रास्ट्रक्चर यहां था। पुरानी 41 ऑर्डिनेंस फैक्ट्रियां थीं। रक्षा क्षेत्र की सार्वजनिक 51 कंपनियां। फिर भी जवानों के पास बुलेटप्रूफ जैकेट और नाइट विजन ग्लासेस नहीं थे।कैग की टिप्पणी थी, वायु, रक्षा व आर्टिलरी के पास अति-आवश्यक हथियारों की कमी है। हथियार खरीदने (थल सेना) को 1500-2000 करोड़ ही बचते थे। रक्षा संसदीय समिति (2012, अप्रैल) ने स्वीकारा कि हथियारों की क्रिटिकल स्थिति है। कमेटी (2012-13) स्तब्ध थी कि नई खरीद के लिए बजट में लगभग 5520 करोड़ ही थे। रक्षा मंत्री (फरवरी 2014) का बयान था- नो मनी, मेजर डील्स विल हैव टु वेट। आजादी की 66वीं वर्षगांठ पर केरन-सांबा क्षेत्र में पाकिस्तानी घुसे। भारतीय जवानों की हत्या कर कुछेक का सिर काट ले गए। रक्षा मंत्री ने संसद में गलत सूचना के लिए माफी मांगी। खबर दबाई गई। अमेरिकी आदेश पर भारतीय प्रधानमंत्री पाकिस्तानी प्रधानमंत्री से मिल रहे थे।वॉशिंगटन में। प्रधानमंत्री ने ओबामा से शिकायत की। नवाज शरीफ ने इसे 'देहाती औरत का रिरियाना' कहा। फिर पाक ने खंडन किया। इसके पहले के हालात (मुंबई ब्लास्ट वगैरह) समझने के लिए शिवशंकर मेनन की किताब है- 'चॉइसेस'। आज दुनिया ने (ऑपरेशन सिंदूर) में उसी भारत के स्वदेशी हथियारों की ताकत देखी। संसार की हथियार लॉबी, भारत के रक्षा कवच, इंटिग्रेटेड एयर कमान व

कंट्रोल सिस्टम देख हतप्रभ है। पाकिस्तान के हर घातक प्रहार को नाकाम करने वाली भारतीय स्वदेशी सुरक्षा तकनीक उन्होंने देखी। इसे विकसित किया है, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बेल) ने। इसी बेल की ईजाद अक्षयतीर एयरडिफेंस कंट्रोल सिस्टम है। यह है भारतीय वैज्ञानिकों की प्रतिभा-क्षमता व सामर्थ्य। 686 (2013-14) करोड़ रुपए के हथियार बेचने वाले भारत का आज रक्षा निर्यात 23622 करोड़ रुपए है। 2029 तक रक्षा निर्यात लक्ष्य 50000 करोड़ है। आज भारत कहां पहुंचा? ताजा रिपोर्ट (आईएमएफ) के मुताबिक दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था। भारत की जीडीपी अब 4.19 ट्रिलियन डॉलर है। 1971 में भारत व पाकिस्तान की जीडीपी में फर्क 57 अरब डॉलर था। आज 3.5 ट्रिलियन डॉलर है। पाकिस्तान पर 280 अरब डॉलर कर्ज है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारतीय वायुसेना, अमेरिकन गोल्डन डोम व इजराइल के आयरन डोम से श्रेष्ठ रक्षा कवच विकसित करने में जुटी है। पांचवीं पीढ़ी के स्टेल्थ स्वदेशी लड़ाकू विमान यहां बनने की घोषणा हुई है। हथियारों के प्रोडक्शन से आगे डिजाइन व डेवलपमेंट पर भारत कदम बढ़ा रहा है। जरूरत है कि हम अपने कामकाज की संस्कृति अव्वल बनाएं। वायुसेना चीफ की चिंता कि रक्षा प्रोजेक्ट समय से पूरे हों, वाजिब है। सेना, नौसेना, वायु सेना, अन्य एजेंसियां, इंडस्ट्री व डीआरडीओ एक बड़ी चेन की कड़ियां हैं। इनमें श्रेष्ठ समन्वय आज की जरूरत है। (ये लेखक के अपने विचार हैं) वक्त की जरूरत है। राष्ट्रीय चरित्र व प्रतिबद्धता से ही प्रभावी कार्यसंस्कृति बनेगी। अतीत ने देखा है कि निजी लाभ के लिए जयचंदों, मीर जाफरों, जगत सेठों वगैरह की संस्कृति यहां रही है। आज ज्योति मल्होत्रा, देवेंद्र सिंह व अरमानों की फौज मुल्क को कमजोर करने में लगी है। ब्रिटिश इतिहासकार जे.आर. सिली (1834-1895) की किताब है- 'द एक्सपांशन ऑफ इंग्लैंड'। उसमें लिखा है कि 'हमने (यानी अंग्रेजों ने) भारत को नहीं जीता, खुद भारतीयों ने ही देश को हमारी तश्तरी में रख दिया।' चौधरी चरण सिंह ने सिली की इस पुस्तक का अनुवाद बंटवाया था, ताकि हमारा राष्ट्रीय चरित्र निखरे। हम खुद का आत्मविश्लेषण करें। यह राष्ट्रीय चरित्र ही इतिहास लिखता है। भारत का स्वर्णिम इतिहास चरित्रवान, संकल्पवान व दूरदृष्टि वालों ने ही बनाया था। देश के वायुसेना प्रमुख की यह चिंता कि रक्षा प्रोजेक्ट समय से पूरे हों, पूरी तरह से वाजिब है। सेना, नौसेना, वायु सेना, अन्य एजेंसियां, इंडस्ट्री व डीआरडीओ एक बड़ी चेन की कड़ियां हैं। इनमें श्रेष्ठ समन्वय आज की जरूरत है। (ये लेखक के अपने विचार हैं)

क्या हम अब दो मोर्चों पर संघर्ष कर रहे हैं?

इतिहास हर एक जंग को एक नाम दे देता है। आधिकारिक तौर पर तो हाल के भारत-पाकिस्तान संघर्ष में विराम हो गया था, मगर लड़ाई 87 घंटे तक चली। भावी पीढ़ियों के लिए क्या इसे '87 घंटे की जंग' कहा जा सकता है? वैसे, मैं हैशटैग लायक कोई तीखा नाम देने की जगह विवरण देना चाहूंगा। जो कुछ हमने देखा, उसे दो मोर्चों पर जंग की शुरुआती चाल कहा जा सकता है। इसे आप ट्रेलर कह सकते हैं। ये चतुराई, धैर्य और सैन्य-ताकत के बूते चलने वाले लंबे युद्ध की पहली चालें हैं। चूंकि, पाकिस्तान ने इसकी शुरुआत की और वह पहलगाम में चीनी साजो-सामान, टेक्नोलॉजी और निर्देशन में लड़ा, इसलिए मैं कहूंगा कि वह सफेद मोहरों से खेल रहा था और चूंकि पहली चाल सफेद मोहरों वाला खिलाड़ी चलता है, इसलिए इस चाल को वह नाम दिया जा सकता है, जिसे शतरंज की भाषा में पहले पीके4 नाम दिया गया था और अब ई4 नाम दिया गया है। इसका मतलब यह हुआ कि प्यादे को बादशाह के सामने दो घर दूर लाकर खड़ा कर दिया गया और प्रतिद्वंद्वी को इस चाल का जवाब देने के लिए निमंत्रित किया गया। इस चाल के जवाब में विदेशी नामों वाली कई तरह की रणनीति अपनाई जा सकती है, मसलन : इटालियन गेम, स्कॉच गेम या रुई लोपेज। मुझे जो नाम ज्यादा उपयुक्त लगता है, वह है 'किंग्स गैंबिट' (बादशाह का दांव) क्योंकि यह रणनीति ज्यादा आक्रामक है और इसमें कई तरह की चालें चली जा सकती हैं। पाकिस्तान और चीन मिलकर यह खेल खेल रहे हैं और उन्होंने एक प्यादे को आगे बढ़ा दिया है। किंग और क्वीन की ताकत के साथ प्यादा पाकिस्तान ठीक सामने आ खड़ा हुआ है, बादशाह के घुड़सवार और काउंसेल यानी चीन नेपथ्य में हैं। वह अब भारत की चाल का इंतजार कर रहे हैं। आत्म-संतोष कोई रणनीति नहीं हो सकती। समय बीत रहा है। तमाम तरह की खबरें बता रही हैं कि सेना ने भी 'रेड टीम' गठित कर ली है, जिसमें तेजतर्रार अधिकारियों के एक समूह को दुश्मन की तरह सोचने और जवाबी कार्रवाई करने का काम सौंपा जाता है। 'रेड टीम' की तरह सोचिए, अगली चाल क्या हो सकती है। हमारी सोच का बुनियादी आधार यह है कि हम दो मोर्चों पर लड़ने की दुविधा को लेकर सोच-विचार तो करते रहे हैं, लेकिन कभी यह नहीं सोचा कि एक ही समय दो मोर्चों पर लड़ना पड़ सकता है। 1962 में पाकिस्तान अलग रहा, पर बिना शर्त नहीं। उसने कश्मीर पर बात करने की मांग रखी, जो अमेरिका-ब्रिटेन के दबाव में शुरू भी हुई। 1965 और 1971 में और कारगिल के बाद चीन अधिकतर अलग ही रहा है, लेकिन अब प्यादे को जिस तरह बादशाह के सामने दो घर दूर लाकर खड़ा किया गया है, उससे मामला बदल गया है। दो मोर्चों पर लड़ाई जारी है, सिवाय इसके कि चीन सीधी लड़ाई लड़ने की जरूरत नहीं महसूस कर रहा है। उसे पाकिस्तान के रूप में एक योग्य और अनुकूल 'प्रॉक्सी' (एजेंट) मिल गया है। वह इसे एक साल के अंदर कुछ खास, मसलन 5वीं जनरेशन के लड़ाकू विमानों के मामलों में भारत से आगे निकलने नहीं तो कम-से-कम बराबरी करने के लिए आधुनिक साजो-सामान बेचता रहेगा। उसके उपग्रह और दूसरे 'आईएसआर' (खुफियागिरी, निगरानी, टोही) संसाधन उसके आश्रित को उपलब्ध रहेंगे और मौके पर सलाह तो फौरन मिलती रहेगी ही। पाकिस्तान की ओर से अगली उकसाऊ कार्रवाई में हमेशा की तरह पांच-छह साल नहीं लगेंगे। यह इससे पहले ही की जाएगी, जनाब फील्ड मार्शल अपनी सियासी पूंजी गंवा दें इससे पहले। तार्किक रूप से 'रेड टीम' इस नतीजे पर पहुंच सकती है कि चीन को अब भारत से सीधी लड़ाई करने की जरूरत नहीं है। उसे सिर्फ पाकिस्तान को इतना कुछ देते रहना है कि वह उसकी ओर से लड़ता रहे। ऑपरेशन सिंदूर के बारे में कोई भी रिपोर्ट पढ़िए, एक महत्वपूर्ण रणनीतिक संकेत उभरता नजर आएगा। इस पूरे संघर्ष में आपने किसी अमेरिकी हथियार के इस्तेमाल की खबर नहीं पढ़ी होगी, एफ-16 विमानों के इस्तेमाल की भी नहीं। पूर्व चेतावनी और कंट्रोल सिस्टम से लैस स्वीडन के विमान चीनी इलेक्ट्रॉनिक्स से लदे हुए हैं। सो, इसे आप चीन बनाम भारत संघर्ष के रूप में देखें, जिसमें मोर्चे पर पाकिस्तानी सेना तैनात थी। दशकों से हम यही जानते रहे हैं कि चीन हमें दबाने के लिए पाकिस्तान का सस्ते में इस्तेमाल करता रहा है। यह रणनीति अब दो कदम आगे बढ़ चुकी है। पहला कदम यह था कि चीन पूर्वी लद्दाख तक आ धमका और हमने जो सेना पाकिस्तान के लिए रखी थी, उसके एक बड़े हिस्से को उसने वहां बांध दिया। दूसरा कदम पाकिस्तान की ओर से सीधी सैन्य चुनौती के रूप में उठाया गया। भारत ने जब इस 'पीके4' या 'ई4' वाली शतरंजी चाल का आक्रामक जवाब दिया तो दोनों पार्टनर पीछे हट गए। जैसा कि सीडीएस अनिल चौहान ने पुणे में दिए एक लेक्चर में कहा, उन दोनों ने सोचा होगा कि 9/10 मई की रात में उन्होंने रॉकेटों/मिसाइलों से जो हमले शुरू किए, वह भारत को घुटने टेकने पर मजबूर कर देंगे। यह दांव जब नाकाम रहा, उनके सभी रॉकेटों/मिसाइलों को मार गिराया गया और भारत की ओर से विध्वंसक जवाब ने पीएएफ को धूल चटा दी और उसके अड्डे तहस-नहस कर दिए, तब बुद्धिमानी संघर्ष विराम करने में ही थी। उनकी 'रेड टीम' अब सोच रही होगी कि अगले मुकाबले के लिए किस तरह तैयारी की जाए। अब उन्हें इन बातों के कारण चिंता होगी : भारत का बहुस्तरीय एयर डिफेंस, जिसकी अगुआई पीएएफ की मिसाइलों की पहुंच से काफी दूर एस-400 और ब्रह्मोस मिसाइलें करती हैं; चीनी एचक्यू-9 समेत उनकी अपनी एयर डिफेंस की कमजोरी और एंटी-रेडिएशन ड्रोनों के इस्तेमाल से उनकी मिसाइलों को नाकाम या नष्ट करने की भारत की क्षमता। निश्चित मानिए कि चीन और पाकिस्तान मिलकर इन खामियों को दूर करने की जुगत भिड़ा रहे होंगे! कह सकते हैं कि पाक अब चीन की पश्चिमी कमांड है ... चीन पाकिस्तान को अब अपने पश्चिमी थिएटर कमांड के रूप में देखता है। मैं तो यहां तक कहना चाहूंगा कि चीनी सेना पीएलए पाकिस्तान को अपने सबसे नए, छठे थिएटर कमांड के रूप में देखेगी। इसे भारत को उलझाए रखना होगा। (ये लेखक के अपने विचार हैं)

विवादों में घिरे यूट्यूब से जुड़े 5 पहलुओं की समझ जरूरी

चीनी उत्पादों के वर्चस्व पर चिंता के बीच सीसीटीवी कंपनियों से जासूसी रोकने के लिए कंपनियों को कैमरे का हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, सोर्स कोड सरकारी लैब में जांच के लिए देना पड़ सकता है। सूचना, संचार और मीडिया में अमेरिकी डिजिटल कंपनियों का कब्जा भी बेहद चिंताजनक है। इसी परिप्रेक्ष्य में विवादों में घिरे यूट्यूब से जुड़े 5 पहलुओं की समझ जरूरी है। विदेशी कंपनी : भारत में 49 करोड़ यूजर्स वाले यूट्यूब ने 2022-2024 में कंटेंट क्रिएटर्स को 21000 करोड़ रु. से ज्यादा का भुगतान किया। यह प्रिंट या टीवी मीडिया के किसी भी ग्रुप की कुल आमदनी से कई गुना ज्यादा है। केंद्र सरकार के नए नियम के अनुसार विदेशी फंडिंग लेने वाले एनजीओ अखबार नहीं छाप सकते। लेकिन भारत में सबसे बड़ा मीडिया साम्राज्य स्थापित करने वाले यूट्यूब का टीवी या अखबार जैसा कोई रजिस्ट्रेशन नहीं है। उपभोक्ता अदालत के फैसले के खिलाफ वॉट्सएप ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में अपील में कहा कि भारतीय अदालतों का अमेरिकी कंपनी पर क्षेत्राधिकार नहीं है। यूट्यूब भी अमेरिकी कानून से संचालित होकर भारत की पुलिस और अदालतों के क्षेत्राधिकार से बाहर रहने की कोशिश करता है। जासूसी : 4 यूट्यूब चैनलों में 41 करोड़ सब्स्क्राइबर्स वाले अमेरिका के मिस्टर बीस्ट के पास टॉम क्रूज और शाहरुख खान से ज्यादा संपत्ति है। यूट्यूब से कमाई को देखकर भारत में भी रील बनाने वालों की बाढ़ आई है। भारत में 15000 यूट्यूब चैनल ऐसे हैं, जिनमें से प्रत्येक के पास 10 लाख से ज्यादा सब्स्क्राइबर्स हैं। मुनाफे की अंधी दौड़ में इनमें से अनेक आपराधिक और देश-विरोधी गतिविधियों में भी लिप्त रहते हैं। शेयर मार्केट में इन्फ्लुएंसर्स से बढ़ रहे फ्रॉड और फर्जी कंटेंट को रोकने के लिए सेबी ने अनेक निर्देश जारी किए हैं। दिल्ली पुलिस, मेट्रो और रेलवे ने रील बनाने के खिलाफ सख्त निर्देश जारी किए हैं। गिरफ्तार यूट्यूबर्स की जासूसी से जुड़े मुकदमों में सरकार को अदालत में यह साबित करने में मुश्किल हो सकती है कि सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध जानकारी को विदेश में साझा करने से किस कानून का उल्लंघन हुआ है? कॉपीराइट : कंटेंट आईडी टूल के माध्यम से कॉपीराइट उल्लंघन का पता चलने पर तीन स्ट्राइक के बाद यूट्यूब खाते पर रोक लग सकती है। एएनआई के साथ विवाद पर यूट्यूबर्स के तीन तर्क हैं। कॉपीराइट कानून में फेयर यूज के अनुसार कम समय की वीडियो क्लिपिंग का इस्तेमाल हो सकता है। दूसरा, कॉपीराइट के उल्लंघन के मामले में एएनआई उस वीडियो की आमदनी पर दावा कर सकती है। तीसरा, यूट्यूब चैनल पर मनमाने तरीके से रोक लगाना अभिव्यक्ति की आजादी पर हमला है। अमेरिका में कॉपीराइट उल्लंघन के मामले में यूट्यूब चैनल को ब्लॉक नहीं किया जाता। यह भी समझना जरूरी है कि गूगल और सोशल मीडिया कंपनियों के सारे एआई प्लेटफॉर्म भारत में जनता और सरकार के डेटा का गैर-कानूनी तरीके से व्यावसायिक इस्तेमाल करके कॉपीराइट कानून को धता बता रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया की तर्ज पर यूट्यूब से हो रही आमदनी में भारत के पब्लिशर्स और सरकार के साथ टेक कंपनियों की रेवेन्यू शेयरिंग क्यों नहीं होनी चाहिए? टैक्स चोरी : साल 2016 में गूगल इंडिया ने भारत में नंबर एक कंपनी का दर्जा हासिल करने के लिए 4.29 लाख करोड़ की आमदनी का आंकड़ा दिया था। लेकिन दिल्ली हाईकोर्ट में केंद्र सरकार के हलफनामे के अनुसार गूगल इंडिया 5904 करोड़ की आमदनी पर ही टैक्स देती थी। विवाद बढ़ने के बाद गूगल ने अगले साल से रैंकिंग वाली कम्पनियों के चार्ट में आमदनी के आंकड़े देना बंद कर दिया। गौरतलब है कि ग्राहक फीस और विज्ञापन के अलावा भारत के 50 करोड़ लोगों के डेटा के कारोबार से अरबों डॉलर कमाने वाली टेक कंपनियां डेटा शेयरिंग के अनुबंधों पर जीएसटी और दूसरे टैक्सों का भुगतान नहीं करतीं। सरकारी कंटेंट : नेता, अफसर, सरकार और पार्टियों के यूट्यूब चैनल में अमूमन विज्ञापन नहीं होने की वजह से आमदनी नहीं होती। लेकिन ऐसे वीडियोज का इन्फ्लुएंसर और दूसरी कंपनियां इस्तेमाल करके बड़े पैमाने पर आमदनी करती हैं।

अमेरिकी सांसद बोले- कुत्तों-मुसलमानों में से एक को चुनना आसान, फिलिस्तीनी एक्टिविस्ट ने लिखा था- न्यूयॉर्क इस्लाम की ओर बढ़ रहा, कुत्ते घर में नहीं रखें

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी सांसद रैंडी फाइन के एक सोशल मीडिया पोस्ट से बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। उन्होंने मंगलवार को एक्स पर लिखा कि अगर कुत्तों और मुसलमानों में से एक को चुनना पड़े तो यह मुश्किल फैसला नहीं है। दरअसल, रैंडी फाइन ने यह टिप्पणी न्यूयॉर्क में एक फिलिस्तीनी-अमेरिकी एक्टिविस्ट नरदीन किसवानी की पोस्ट के जवाब में की थी। किसवानी ने लिखा था कि कुत्ते अपवित्र हैं। ऐसे समय में जब न्यूयॉर्क इस्लाम की ओर बढ़ रहा है, कुत्तों को घर के अंदर नहीं रखना चाहिए। इन्हें बैन करना चाहिए। इस पर फाइन ने कहा कि दुनिया में 57 ऐसे देश हैं, जहां शरिया कानून लागू है। अगर आप ऐसा चाहते हैं तो वहीं चले जाइए। अमेरिका 58वां मुस्लिम देश नहीं बनेगा। बाद में किसवानी ने कहा कि वह बस मजाक कर रही थीं। यह न्यूयॉर्क में सार्वजनिक जगहों पर कुत्तों की गंदगी को लेकर चल रही बहस से जुड़ा था। ऐसा उन लोगों के लिए कहा गया था, जो राजनीति में मुस्लिमों के बढ़ते प्रभाव को खतरा मानते हैं। किसवानी ने होमलैंड सिक्योरिटी सेक्रेटरी क्रिस्टी नोएम के पुराने बयान का भी जिक्र किया, जिसमें उन्होंने अपने फार्म पर एक कुत्ते को गोली मारने की बात कही थी। किसवानी ने लिखा, 'क्रिस्टी नोएम ने अपने ही कुत्ते को गोली मारने की बात कही और ज्यादातर लोगों ने ध्यान नहीं दिया। न्यूयॉर्क में एक मुस्लिम कह दे कि शहर पालतू जानवरों के लिए सही जगह नहीं है तो उसे मौत की धमकियां मिलने लगती हैं।' किसवानी ने फाइन पर फिलिस्तीनियों और मुसलमानों को अमानवीय दिखाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि निर्वाचित प्रतिनिधियों की ओर से आ रही मुस्लिम विरोधी भाषा पर कोई सख्त कार्रवाई नहीं होती। रैंडी फाइन के इस बयान पर वॉशिंगटन में भारी विरोध हुआ है। डेमोक्रेट्स, सिविल राइट्स ग्रुप्स और कई नेताओं ने इसे इस्लामोफोबिया और घृणा फैलाने वाला बताया। अमेरिकन-इस्लामिक रिलेशंस काउंसिल ने फाइन के खिलाफ कार्रवाई की मांग की और कहा कि उनके इस्तीफे की मांग पहले से चल रही है। यास्मीन अंसारी ने हाउस स्पीकर से तुरंत निंदा करने को कहा। कैलिफोर्निया के गवर्नर गेविन न्यूसम ने फाइन को नस्लवादी कहकर इस्तीफा देने को कहा। ब्रिटिश पत्रकार पीयर्स मॉर्गन ने भी उन्हें कड़ी फटकार लगाई। फाइन ने विरोध पर पलटवार किया और कहा कि असली समस्या किसवानी का बयान है, जो लिखित रूप में था। फाइन ने न्यूजमैक्स को दिए इंटरव्यू में कहा कि उनका पोस्ट किसवानी के बयान के जवाब में था, जो शरिया लॉ (इस्लामी कानून) थोपने की कोशिश है। उन्होंने कहा, 'अमेरिका में कुत्ते परिवार के सदस्य हैं, और हम यूरोप की तरह शर्मिंदा होकर हार नहीं मानेंगे।' उन्होंने कुत्तों की तस्वीरें शेयर कीं, जिन पर 'डोंट ट्रेड ऑन मी' (ऐतिहासिक गैड्सडेन फ्लैग का स्लोगन) लिखा था।इस पोस्ट को 42 मिलियन से ज्यादा व्यूज मिले, हजारों लाइक्स, रीपोस्ट्स और कमेंट्स। फाइन ने क्रिटिक्स को जवाब दिया कि किसवानी का बयान लिखित था और लाखों ने देखा। पोस्ट के तुरंत बाद वॉशिंगटन और पूरे अमेरिका में हंगामा मच गया। इसे इस्लामोफोबिया, कट्टरता और अमानवीयकरण कहा गया।फाइन पहले भी गाजा से जुड़े बयानों पर आलोचना झेल चुके हैं।

2025 में उन्होंने गाजा पर कहा था कि गाजावासियों को भूखा मरने दो जब तक इजराइली बंधक रिहा न हों। उन्होंने गाजा का हाल हिरोशिमा और नागासाकी जैसा करने की बात भी की थी। फाइन का कहना है कि यूरोप के लोग मुसलमानों के सामने शर्मिंदा होकर या दबाव में आकर अपनी संस्कृति, परंपराओं और आजादी को खो चुके हैं। वे नहीं चाहते कि अमेरिका में भी ऐसा हो। उनका कहना है कि अमेरिका, यूरोप जैसी कमजोरी नहीं दिखाएंगे।फाइन और उनके जैसे कई राइट-विंग ट्रम्प समर्थक अक्सर यह दावा करते हैं कि यूरोप में इस्लामिक टेकओवर हो रहा है। उनके अनुसार बड़े पैमाने पर मुस्लिम इमिग्रेशन से नो-गो जोन्स बन गए हैं, जहां स्थानीय कानून कमजोर पड़ गए हैं।यूरोपीय सरकारें पॉलिटिकल करेक्टनेस या मल्टीकल्चरलिज्म के नाम पर मुसलमानों की मांगों के आगे झुक रही हैं, जैसे कुत्तों पर प्रतिबंध या महिलाओं के अधिकारों में बदलाव। इसका नतीजा यह हो रहा है की यूरोप अपनी मूल संस्कृति और वैल्यूज खो रहा है और लोग शर्मिंदा होकर विरोध नहीं कर पा रहे।फाइन ने खुद कई बार कहा है कि शरिया अमेरिका में नहीं आएगी। अमेरिका इस्लामिक देश नहीं बनेगा। उन्होंने नो शरिया जैसा बिल भी पेश किया है। रैंडी फाइन एक अमेरिकी राजनेता हैं, जो रिपब्लिकन पार्टी से जुड़े हैं। उनका जन्म 20 अप्रैल 1974 को एरिजोना के ट्यूसन शहर में हुआ था। उन्होंने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से 1996 में एबी डिग्री और 1998 में एमबीए पूरा किया।पेशे से वे बिजनेस एक्जीक्यूटिव हैं और पहले जुआ इंडस्ट्री में काम कर चुके हैं। राजनीति में उन्होंने फ्लोरिडा स्टेट हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में 2016 से 2024 तक सेवा की, फिर फ्लोरिडा संसद में 2024-2025 तक रहे।अप्रैल 2025 में एक स्पेशल इलेक्शन में वे फ्लोरिडा के 6वें कांग्रेसनल डिस्ट्रिक्ट से यूएस हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स के लिए चुने गए। वे इजराइल के कट्टर समर्थक हैं और अक्सर फिलिस्तीन-इजरायल संघर्ष पर विवादास्पद बयान देते हैं। न्यूयॉर्क इस्लाम की ओर बढ़ रहा है, नरदीन किसवानी के इस बयान को न्यूयॉर्क शहर के मेयर जोहरान ममदानी से जोड़ कर देखा जा रहा है। दरअसल, ममदानी इस पद पर आने वाले पहले मुस्लिम हैं। हालांकि, किसवानी ने ममदानी का जिक्र नहीं किया।इन्होंने 2025 में मेयर चुनाव जीतकर इतिहास रचा था। वे शहर के पहले मुस्लिम और 100 साल से अधिक समय में सबसे युवा गवर्नर बने। उनका कार्यकाल 1 जनवरी 2026 से शुरू हुआ, जिसमें वे किराए पर रोक, निःशुल्क बस सेवा, किफायती आवास और शहर को अधिक सस्ता बनाने पर जोर दे रहे हैं।जोहरान ममदानी एक प्रमुख अमेरिकी राजनीतिज्ञ हैं। उनका जन्म 18 अक्टूबर 1991 को युगांडा की राजधानी कंपाला में हुआ था। वे प्रसिद्ध भारतीय-अमेरिकी फिल्म निर्देशक मीरा नायर के बेटे हैं।सात साल की उम्र में वे न्यूयॉर्क शहर आए थे और यहीं बड़े हुए। वे डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट्स ऑफ अमेरिका के सदस्य हैं और प्रगतिशील विचारधारा के समर्थक हैं।

दुनियाभर में यूट्यूब की सर्विस डेढ़ घंटे ठप रही, 'समथिंग वेंट रॉन्ग' का मैसेज दिखा

नयी दिल्ली। दुनिया का सबसे पॉपुलर वीडियो प्लेटफॉर्म यूट्यूब की सर्विस अचानक ठप हो गई। डाउनडिटेक्टर के मुताबिक, दुनियाभर में सुबह करीब 6 बजकर 20 मिनट से लगभग 8 बजे तक लाखों यूजर्स को इसे एक्सेस करने में परेशानी हो रही थी। सबसे ज्यादा दिक्कत इसके मोबाइल एप में आई जहां यूजर्स को समथिंग वेंट रॉन्ग मैसेज दिख रहा था। हालांकि जब इसे दो-तीन बार रिफ्रेश किया तो वीडियोज दिखने लगे थे। लेकिन पूरी तरह से ये काम नहीं कर रहा था। वहीं इसकी वेबसाइट एक्सेस हो रही थी। आउटेज ट्रैकिंग वेबसाइट डाउनडिटेक्टर के मुताबिक अमेरिका में करीब 2.83 लाख लोगों ने यूट्यूब न चलने की शिकायत की। भारत में आज सुबह 7 बजे के करीब डाउनडिटेक्टर पर शिकायतों का आंकड़ा 18 हजार को पार कर गया। यहां 71फीसदी यूजर्स एप इस्तेमाल में दिक्कत हुई। यूट्यूब की टीम ने इस आउटेज को लेकर आज सुबह 07:26 मिनट पर एक एक्स पोस्ट में कहा- अगर आपको अभी यूट्यूब चलाने में दिक्कत आ रही है, तो आप अकेले नहीं हैं। हमारी टीमें इस मामले की जांच कर रही हैं और जो भी अपडेट होगा, हम यहां जानकारी देंगे।इसके बाद एक और अपडेट में यूट्यूब ने कहा कि हमारे रिकमेंडेशन सिस्टम में एक खराबी की वजह से यूट्यूब के अलग-अलग प्लेटफॉर्म्स जैसे होमपेज, यूट्यूब एप, यूट्यूब म्यूजिक और यूट्यूब किड्स पर वीडियो नहीं दिख रहे थे। होमपेज अब ठीक हो गया है, लेकिन हम अभी भी इसे पूरी तरह ठीक करने पर काम कर रहे हैं। जल्द ही और जानकारी दी जाएगी! आउटेज एक ऐसी स्थिति होती है जब कोई सर्विस जैसे इंटरनेट, एप, वेबसाइट अचानक काम करना बंद कर देती है या उपलब्ध नहीं रहती। यह कुछ समय के लिए हो सकता है।जैसे कुछ मिनट से लेकर घंटों तक। इसका कारण सर्वर फेल होना, नेटवर्क समस्या, रखरखाव, मौसम की मार, हार्डवेयर खराबी या ज्यादा लोड पड़ना हो सकता हैं।

महिलाओं के पसंदीदा ब्यूटी ट्रीटमेंट पुरुष करवा रहे,लाखों के खर्च की भी चिंता नहीं

न्यू यॉर्क। न्यू जर्सी के रॉस कैटांजाराइट कभी दुबले-पतले थे, पर 20 की उम्र के बाद उनका वजन तेजी से बढ़ा। कैलोरी गिनने से लेकर नो-कार्ब डाइट और इंटरमिटेंट फास्टिंग तक सब कुछ आजमाया, पर वजन दोबारा बढ़ जाता था। चार बार ऐसा हुआ। आखिरकार 2019 में उन्होंने 13 लाख रुपए खर्च कर लिपोसक्शन के जरिए सीने, पेट व कमर के आसपास की चर्बी हटवाई। नतीजे से वे खुश हैं। कैटांजाराइट अकेले नहीं हैं। 2024 में अमेरिकी पुरुषों पर हुई प्लास्टिक सर्जरी में बड़ा हिस्सा लिपोसक्शन का रहा। 21 हजार से ज्यादा पुरुषों ने यह सर्जरी करवाई। सोशल मीडिया, एचडी वीडियो और ऑन-कैमरा एक्सपोजर ने पुरुषों को अपने लुक्स को लेकर सजग किया है। अब वे कॉस्मेटिक ट्रीटमेंट को संवरना नहीं, बल्कि फिटनेस और ग्रूमिंग जैसा मानते हैं।जाने-माने डॉ. एंथनी बर्लेट के मुताबिक, पुरुष अब कॉस्मेटिक सर्जरी को आत्मविश्वास बढ़ाने और शरीर को बेहतर बनाने का जरिया मानते हैं। वे लिपोसक्शन के लिए 3 लाख से 10 लाख रुपए तक खर्च कर रहे हैं। पहले यह धारणा थी कि ये सर्जरी सिर्फ महिलाओं के लिए होती है, लेकिन अब पुरुष भी इसे अपनाने लगे हैं। पोर्टलैंड के रॉबर्ट टाइस ने बैरियाट्रिक सर्जरी से 50 किलो वजन घटाया। फिर 2023 में टमी टक और 2024 में चेस्ट लिफ्ट करवाया। उन्होंने अब तक 25 लाख रुपए खर्च किए हैं। प्लास्टिक सर्जन डॉ. सीन मैकनैली कहते हैं, '20 से 30 साल के पुरुष जबड़े व ठुड्डी की बनावट सुधारने पर ध्यान देते हैं। 40 से 60 की उम्र में वे चेहरे की कसावट बनाए रखने के लिए सर्जरी कराते हैं। तेजी से वजन घटाने वाले पुरुष लिपोसक्शन पर ज्यादा भरोसा करने लगे हैं।' आंखों से लेकर झुर्रियां दूर करने तक पर ध्यान पुरुष रूप-रंग को लेकर जागरूक हो रहे हैं। आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए वे कई तरह की कॉस्मेटिक सर्जरी करा रहे हैं। इसमें सीने को मर्दाना आकार देने वाली गाइनेकोमास्टिया सर्जरी और गंजेपन के लिए हेयर ट्रांसप्लांट लोकप्रिय हैं। इसके अलावा, युवा दिखने के लिए ब्लेफेरोप्लास्टी (आंखों की सर्जरी), नाक के आकार के लिए राइनोप्लास्टी और चेहरे की झुर्रियों के लिए बोटॉक्स का इस्तेमाल बढ़ा है। सुडौल जबड़े के लिए जॉलाइन सर्जरी कराने वाले पुरुष भी बढ़े हैं।

अमेरिका के 50 फाइटर जेट मिडिल ईस्ट के लिए रवाना,इनमें एफ-22 एफ-35 और एफ-16 शामिल

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका ने मिडिल ईस्ट में पिछले 24 घंटों में 50 से ज्यादा फाइटर जेट भेजे हैं। इंडिपेंडेंट फ्लाइट-ट्रैकिंग डेटा और मिलिट्री एविएशन मॉनिटर्स ने कई एफ-22, एफ-35 और एफ-16 फाइटर जेट को मिडिल ईस्ट की ओर जाते हुए रिकॉर्ड किया है। यह जानकारी अमेरिका और ईरान के बीच मंगलवार को जिनेवा में हुई दूसरी दौर की बातचीत के दौरान सामने आई है। दोनों देशों के बीच परमाणु समझौते से जुड़े मुद्दों को लेकर मतभेद बने हुए हैं।

अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने कहा कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की तय की गई शर्तों को ईरान मानने को तैयार नहीं है। फॉक्स न्यूज को दिए इंटरव्यू में वेंस ने कहा कि बातचीत के कुछ हिस्से सकारात्मक रहे, लेकिन कई अहम मुद्दों पर अब भी सहमति नहीं बनी है। इन बयानों से साफ है कि ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर चल रही बातचीत अभी भी नाजुक दौर में है। ट्रम्प पहले ही कह चुके हैं कि अगर ईरान अमेरिकी मांगें नहीं मानता, तो अमेरिका ताकत का इस्तेमाल करेगा। अमेरिकी फाइटर जेट्स के साथ कई एरियल रिफ्यूलिंग टैंकर भी मिडिल ईस्ट की ओर जाते देखे गए हैं। इससे संकेत मिलता है कि विमान लंबे समय तक ऑपरेशन की तैयारी में हैं। इस बीच, अमेरिकी अधिकारी ने मीडिया को बताया कि यूएसएस जेराल्ड आर. फोर्ड एयरक्राफ्ट कैरियर स्ट्राइक ग्रुप कैरिबियन से रवाना होकर मिड-अटलांटिक में पहुंच चुका है और मिडिल ईस्ट की ओर बढ़ रहा है। अगले चार-पांच दिन में उसके पहुंचने की उम्मीद है।न्यूज एजेंसी एपी के मुताबिक, सुरक्षा कारणों से नाम न बताने की शर्त पर अधिकारी ने कहा कि फोर्ड के साथ तीन गाइडेड-मिसाइल डेस्ट्रॉयर, यूएसएस माहान, यूएसएस बैनब्रिज और यूएसएस विन्सटन चर्चिल भी हैं।

इससे पहले यूएसएस अब्राहम लिंकन और अन्य महत्वपूर्ण अमेरिकी एयर और नेवल एसेट्स भी इस साल की शुरुआत में क्षेत्र में तैनात किए जा चुके हैं। इससे अमेरिका की मिडिल ईस्ट में सैन्य मौजूदगी और मजबूत हुई है। ईरान ने मंगलवार को दुनिया के सबसे अहम तेल मार्गों में से एक हॉर्मुज जलडमरूमध्य के कुछ हिस्सों को अस्थायी रूप से बंद कर दिया। यह कदम लाइव-फायर सैन्य अभ्यास के दौरान उठाया गया। ईरान ने सोमवार को इस नए अभ्यास की घोषणा की थी। इसे 'स्मार्ट कंट्रोल ऑफ द स्ट्रेट ऑफ हॉर्मुज' नाम दिया गया।ईरानी न्यूज एजेंसियों के मुताबिक, फारस की खाड़ी के संकरे हिस्से में मिसाइल परीक्षण किए गए। ईरानी मीडिया ने सुरक्षा और समुद्री कारणों का हवाला देते हुए कहा कि यह बंदी कुछ घंटों के लिए रहेगी।

एसोसिएटेड प्रेस के मुताबिक, इसका मकसद खुफिया और ऑपरेशनल क्षमताओं की जांच करना है। समुद्री सुरक्षा कंपनी ईओएस रिस्क ग्रुप ने कहा कि इस इलाके से गुजरने वाले जहाजों को पहले ही रेडियो पर चेतावनी दी गई थी। जनवरी के अंत में हुए इसी तरह के अभ्यास के दौरान अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने कड़ा बयान जारी किया था।

उसने कहा था कि ईरान को अंतरराष्ट्रीय हवाई और समुद्री क्षेत्र में पेशेवर तरीके से काम करने का अधिकार है, लेकिन वह अमेरिकी वॉरशिप या ट्रेड जहाजों को परेशान न करें। हॉर्मुज जलडमरूमध्य अपनी सबसे संकरी जगह पर करीब 33 किलोमीटर (21 मील) चौड़ा है। यह फारस की खाड़ी को ओमान की खाड़ी और आगे वैश्विक बाजारों से जोड़ता है। दुनिया की करीब 20फीसदी तेल सप्लाई इसी रास्ते से गुजरती है। सऊदी अरब, कुवैत, इराक, कतर, बहरीन, यूएई और ईरान का तेल और गैस यहीं से बाहर जाता है। ज्यादातर खेप एशिया के लिए होती है। अमेरिकी एनर्जी इन्फॉर्मेशन एडमिनिस्ट्रेशन के अनुसार, इस रास्ते का कोई व्यावहारिक विकल्प नहीं है, हालांकि सऊदी अरब और यूएई ने कुछ पाइपलाइन बनाई हैं जो इस मार्ग को बायपास करती हैं। हालांकि जलडमरूमध्य को अंतरराष्ट्रीय जलमार्ग माना जाता है और सभी जहाजों के लिए खुला है, लेकिन इसके किनारों के क्षेत्रीय पानी पर ईरान और ओमान का नियंत्रण है। ईरान और अमेरिका के बीच चल रही परमाणु समझौते की बातचीत में बैलिस्टिक मिसाइल प्रोजेक्ट सबसे बड़ा विवाद का मुद्दा बन गया है।

ईरान इस पर बिल्कुल भी समझौता करने को तैयार नहीं है और इसे अपनी रेड लाइन मानता है।ईरान का कहना है कि यह उसके बैलिस्टिक मिसाइल प्रोग्राम रक्षा के लिए जरूरी है। ईरान का कहना है कि जून 2025 में इजराइल और अमेरिका ने ईरान के परमाणु साइटों पर हमला किया, तब ईरान की मिसाइलों ने ही उसकी रक्षा की। इसके साथ ही अमेरिका चाहता है कि ईरान हिजबुल्लाह, हूती जैसे प्रॉक्सी ग्रुप्स को समर्थन देना बंद करे।

अमेरिका इस मुद्दे को भी शामिल करना चाहता है, लेकिन ईरान मुख्य रूप से सिर्फ परमाणु मुद्दे पर फोकस रखना चाहता है।ईरानी अधिकारियों ने बार-बार कहा है कि मिसाइल कार्यक्रम पर कोई बात नहीं होगी। यह ईरान की रक्षात्मक क्षमता है और इसे छोड़ना मतलब खुद को कमजोर करना होगा। ईरान कहता है कि बातचीत सिर्फ परमाणु कार्यक्रम तक सीमित रहेगी, मिसाइल या क्षेत्रीय समूहों पर नहीं।

वेंस ने कहा कि बातचीत कितने समय तक जारी रखनी है, इसका अंतिम फैसला राष्ट्रपति ट्रम्प करेंगे। उन्होंने कहा- हम कोशिश जारी रखेंगे। लेकिन राष्ट्रपति के पास यह अधिकार है कि वे तय करें कि कूटनीति अपनी सीमा तक पहुंच गई है या नहीं। हमें उम्मीद है कि इस बार बातचीत बुरे अंजाम तक नहीं पहुंचेगी, लेकिन अगर पहुंचती है तो फैसला राष्ट्रपति ही करेंगे। अमेरिकी अधिकारियों के मुताबिक, ईरान अगले दो हफ्तों में ज्यादा बड़ा प्रस्ताव देगा, जिससे दोनों पक्षों के बीच मतभेद कम किए जा सकें। दूसरी ओर, ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अरागची ने बातचीत को लेकर उम्मीद जताई है।

उन्होंने कहा कि समझौते की दिशा में नई खिड़की खुली है। बातचीत के बाद संयुक्त राष्ट्र के सम्मेलन में अरागची ने कहा, 'हमें उम्मीद है कि बातचीत से टिकाऊ और सहमति वाला समाधान निकलेगा, जो सभी संबंधित पक्षों और पूरे क्षेत्र के हित में होगा।'हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि ईरान किसी भी खतरे या हमले का जवाब देने के लिए पूरी तरह तैयार है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर ईरान पर हमला हुआ तो इसके नतीजे अकेले वह नहीं भुगतेंगे, बल्कि दूसरों पर भी इसका असर पड़ेगा।

SC बोला-फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग लगाओ,पैकेट पर लिखा होगा- फूड हेल्दी या अनहेल्दी; जानें ये क्यों जरूरी

नयी दिल्ली। हम अक्सर चिप्स, कुकीज या नमकीन का पैकेट खरीदते हैं और खा लेते हैं। बहुत कम लोग पैकेट को पलटकर उसके पीछे देखते हैं कि जो फूड वो खा रहे हैं, उसकी न्यूट्रिशनल वैल्यू क्या है। उसमें कितना शुगर, नमक या फैट है। पैकेट पर लिखी ये इंफॉर्मेशन ही बताती है कि फूड कितना हेल्दी है या कितना अनहेल्दी। लेकिन अगर यह जानकारी पैकेट के फ्रंट पर रंगों और ग्राफिक्स के साथ आसान तरीके से लिखी हो तो एक ही नजर में बहुत आसानी से ये जानकारी हमें मिल जाएगी। हमारे लिए हेल्दी फूड का चुनाव भी आसान हो जाएगा। इसे 'फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग' कहते हैं। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण और केंद्र सरकार को एक जरूरी निर्देश दिया है। कोर्ट ने कहा है कि पैकेज्ड फूड पर 'फ्रंट-ऑफ-पैक वॉर्निंग लेबल' लगाने पर विचार किया जाए। यह लेबल पैकेट के सामने ही जरूरी जानकारी दिखाएगा ताकि कंज्यूमर खरीदने से पहले ही जान सकें कि उसमें कितना शुगर, नमक और फैट है। एक्सपर्टः डॉ. नरेंद्र कुमार सिंगला, प्रिंसिपल कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली से पूछने पर उन्होंने बताया सवाल जवाब के माध्यम से सवाल- 'फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग' क्या है? जवाब- फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग वह लेबल है, जो किसी फूड प्रोडक्ट के पैकेट के आगे के हिस्से में लिखा रहता है। इसमें खाने के मेन इंग्रीडिएंट्स जैसे शुगर, नमक और फैट की जानकारी को आसान और जल्दी समझ आने वाले तरीके से दिखाया जाता है। इसका मकसद ये है कि ग्राहक तुरंत समझ सके कि वो जो फूड खरीद रहा है, वह स्वास्थ्य के लिए कितना सही है। ये जानकारी पैकेट के बैक पर लिखे लंबे-चौड़े न्यूट्रिशनल फैक्ट्स से अलग होती है। इसमें सिर्फ जरूरी जानकारी को सरल ग्राफिक्स या रंगों के जरिए दिखाया जाता है। मौजूदा पैकेज्ड फूड पर फूड से जुड़ी न्यूट्रिशनल जानकारी कहां लिखी होती है? यह पूछने पर उन्होंने बताया - यह आमतौर पर पैकेज्ड फूड के पीछे या किनारे पर एक टेबल के फॉर्म में लिखी होती है। यह जानकारी प्रोडक्ट के 100 ग्राम, 100 मिलीलीटर या हर सर्विंग में मौजूद न्यूट्रिशनल वैल्यू जैसे- कैलोरी, फैट, प्रोटीन, शुगर और सोडियम की मात्रा बताती है। सवाल- 'फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग' से क्या पता चलता है? जवाब- फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग से पता चलता है कि फूड हेल्दी है या अनहेल्दी। उसमें कितनी कैलोरी, शुगर, नमक और फैट है और क्या वह स्वास्थ्य के लिए जोखिम पैदा कर सकता है। 'फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग' क्यों जरूरी है? जवाब- 'फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग' इसलिए जरूरी है ताकि लोग पैकेज्ड फूड खरीदते समय जल्दी और स्पष्ट रूप से उसके हेल्थ इम्पैक्ट को समझ सकें। इससे उनके लिए हेल्दी ऑप्शन्स चुनना आसान हो जाएगा और अनहेल्दी फूड के अधिक सेवन को रोका जा सकेगा।'फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग' से हमें क्या फायदा होगा? जवाब- फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग का मकसद न्यूट्रिशन की जटिल जानकारी को सरल बनाना है, ताकि ग्राहक खरीदते समय ही बेहतर फैसला ले सकें और अनहेल्दी विकल्पों से बच सकें।'फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग' से लोगों की सेहत पर क्या प्रभाव पड़ेगा? जवाब- न्यूट्रिशनल वैल्यू पढ़कर लोग तय कर पाएंगे कि उनके लिए वो फूड कितना हेल्दी है। साथ ही इससे कई गंभीर बीमारियों का रिस्क कम हो सकेगा, जैसेकि मोटापा, डायबिटीज, हार्ट डिजीज। यह हेल्दी ईटिंग हैबिट्स को भी बढ़ावा देगा। सुप्रीम कोर्ट ने भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण को यह निर्देश क्यों दिया है कि वह हरेक पैकेज्ड खाद्य पदार्थ पर 'फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग' लगाने पर विचार करें? जवाब- देश में लाइफस्टाइल बीमारियां तेजी से बढ़ रही है। इसकी बड़ी वजह अनहेल्दी खान-पान है। पैकेज्ड और अल्ट्राप्रोसेस्ड फूड में मौजूद अधिक शुगर, नमक और फैट की मात्रा इन बीमारियों का बड़ा कारण बन रही है।

इसी गंभीर स्थिति को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने इएएंघ से कहा है कि वह पैकेज्ड फूड पर 'फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग' लागू करने पर गंभीरता से विचार करे, ताकि लोग खरीदते समय ही संभावित हेल्थ रिस्क समझ सकें। 'फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग' से ये पता लगाने में कैसे मदद मिलेगी कि कोई पैकेज्ड फूड कितना हेल्दी है? जवाब- फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग फूड की हेल्थ ग्रेडिंग की तरह काम करती है। जैसे 'हाई शुगर' वाला लेबल आपको चेतावनी देता है कि यह फूड बार-बार खाने के लिए हेल्दी नहीं है। वहीं 'लो फैट/लो सॉल्ट' वाला संकेत हेल्दी विकल्प चुनने में मदद करता है। इस तरह ग्राहक को एक नजर में ही यह समझ आता है कि कोई पैकेज्ड फूड हेल्थ के लिए सुरक्षित, संतुलित या जोखिम भरा है। साथ ही कई देशों में 'फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग' को तीन अलग रंगों से दिखाया जाता है। जिस फूड में सॉल्ट, शुगर फैट की मात्रा ज्यादा होती है, उस पर रेड लेबल होता है और जिसमें कम होती है, उस पर ग्रीन लेबल होता है। ऐसे में लोग बिना न्यूट्रिशन डिटेल्स पढ़े सिर्फ रंग देखकर यह जान सकते हैं कि फूड हेल्दी है या अनहेल्दी। आंख मूंदकर वे ग्रीन लेबल वाले फूड खरीद सकते हैं या ये तय कर सकते हैं कि रेड लेबल वाले फूड महीने में एक-दो बार ही खाना है। क्या यह लेबलिंग मोटापा, डायबिटीज और हाई बीपी जैसी बीमारियों के जोखिम को कम करने में मदद कर सकती है? जवाब- लेबलिंग हमें सिर्फ जागरूक करने में मदद करती है। ये इस बात की गारंटी नहीं है कि अब गंभीर बीमारियां नहीं होंगी। लेबलिंग सिर्फ हमें यह बताएगी कि फूड अनहेल्दी है, लेकिन अगर फिर भी हम उसे खाते हैं तो हम बीमारियों का रिस्क बढ़ा रहे होंगे। ये जरूर कहा जा सकता है कि लोग जो भी फैसला करें, वह एक इंफॉर्म्ड फैसला होगा। पैकेज्ड फूड में वो कौन से तत्व होते हैं, जो सेहत के लिए सबसे ज्यादा हानिकारक हैं? जवाब- हर पैकेज्ड फूड हानिकारक नहीं होता, लेकिन कुछ तत्व ऐसे हैं, जिनका ज्यादा सेवन शरीर के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। कितनी मात्रा में पैकेज्ड फूड लेना सेफ है? जवाब- पैकेज्ड फूड को सीमित मात्रा में ही लेना चाहिए। महीने में एक बार या विशेष अवसरों पर ले सकते हैं। पैकेज्ड फूड के हेल्दी ऑप्शन क्या हैं? जवाब- पैकेज्ड और प्रोसेस्ड फूड के बजाय ऐसे विकल्प चुनना बेहतर है, जो कम प्रोसेस्ड, प्राकृतिक और पोषक तत्वों से भरपूर हों। ताजे फल, हरी सब्जियां खाएं।बिना नमक वाले नट्स और बीज खाएं। साबुत अनाज खाएं। घर का बना खाना खाएं। ये ऑप्शन शरीर को जरूरी विटामिन, फाइबर और मिनरल देते हैं। साथ ही अतिरिक्त शुगर, सोडियम और ट्रांस फैट से बचाते हैं।

ब्रेस्ट पकड़ना, नाड़ा तोड़ना रेप का प्रयास- सुप्रीम कोर्टःइलाहाबाद हाईकोर्ट ने रेप की कोशिश नहीं माना था, SC ने फैसला पलटा

प्रयागराज। सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस फैसले को पलट दिया, जिसमें कहा गया था कि किसी लड़की के पायजामे का नाड़ा तोड़ना और स्तनों को पकड़ना रेप के प्रयास के आरोप के लिए पर्याप्त नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने साफ कहा- इस तरह की हरकत रेप का प्रयास मानी जाएंगी। सुप्रीम कोर्ट में सीजेआई सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली बेंच ने बुधवार को यह फैसला सुनाया। मामला उत्तर प्रदेश के कासगंज जिले से जुड़ा है। साल 2022 में महिला ने शिकायत दर्ज कराई थी कि गांव के तीन युवकों ने उसकी नाबालिग बेटी को घर छोड़ने के बहाने रोका और उसके साथ गलत हरकत की। आरोपियों ने बच्ची के निजी अंगों को पकड़ा और पायजामे की डोरी तोड़ दी। पीड़िता की मां की शिकायत पर तीनों आरोपियों के खिलाफ पॉस्को एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया। कासगंज की विशेष पॉस्को अदालत ने 2023 में आरोपियों को समन जारी किया था। इसके बाद आरोपियों ने मामले को हाईकोर्ट में चुनौती दी।इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 17 मार्च, 2025 को दिए आदेश में कहा था कि ये कृत्य रेप या रेप के प्रयास की श्रेणी में नहीं आते, इसके बाद 'अटेम्प्ट टु रेप' का आरोप हटाने का निर्देश दिया। हाईकोर्ट का फैसला सामने आते ही विवाद बढ़ गया। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेते हुए हाईकोर्ट के आदेश पर 25 मार्च, 2025 को रोक लगा दी और अब उसे पूरी तरह रद्द कर दिया। कासगंज की एक महिला ने 12 जनवरी, 2022 को कोर्ट में एक शिकायत दर्ज कराई थी।

पार्टनर शादी की बात टाल देता है,कहीं ये कमिटमेंट फोबिया तो नहीं, मुझे तो शादी चाहिए, क्या मैं ब्रेकअप कर लूं

नयी दिल्ली। विषय पर बात को समझते हैं एक्सपर्टः डॉ. जया सुकुल, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नोएडा द्वारा सवाल जवाब के माधयम से।

सवालः मेरी उम्र 29 साल है और मैं दिल्ली में रहती हूं। मैं और मेरा बॉयफ्रेंड पिछले 5 सालों से रिलेशनशिप में हैं। मैं पहले जिस कंपनी में काम करती थी, वहीं हमारी मुलाकात हुई थी। फिर जॉब चेंज होने के बाद भी हमारा रिलेशनशिप कंटीन्यू रहा। मैं शुरू से ही ये बात कहती थी कि मुझे शादी करनी है। मुझे फैमिली और बच्चे चाहिए। इन 5 सालों में उसने कभी इस बात का विरोध नहीं किया। उल्टे वो भी कहता था कि उसे भी शादी करनी है। मुझे लगता था कि इस रिश्ते का अंत एक सुंदर शादी और परिवार में होगा। शुरू के तीन साल तो सिर्फ रोमांस और करियर की दौड़ में निकल गए। पिछले दो सालों से मैंने शादी के बारे में पूछना शुरू किया। पहले तो वो कहता था कि हां देखेंगे, करेंगे, जल्दी क्या है। लेकिन अब पिछले एक साल से मैं नोटिस कर रही हूं कि वो शादी की बात बिल्कुल इंटरटेन ही नहीं करता। तुरंत टॉपिंग बदल देता है, बात को टाल देता है, कुछ और करने लगता है।

शादी और परिवार की सोच रही हैं। यह बिल्कुल नॉर्मल है। लेकिन आपका पार्टनर जब भी शादी की बात पर टालमटोल करता है, तो मन में डर और शक आना स्वाभाविक है। क्या वो सच में कमिटमेंट से डर रहा है, या बस समय का बहाने बना रहा है? आप जो महसूस कर रही हैं, वो हजारों लड़कियों की कहानी है। आइए इस समस्या को एक-एक करके समझते हैं। हम चुनौतियों की बात करेंगे, उनके पीछे के कारण देखेंगे और फिर कुछ आसान तरीके जानेंगे जिनसे आप फैसला ले सकती हैं। साथ ही, हम यह भी देखेंगे कि पुरुष और महिलाएं इस स्थिति में अलग-अलग कैसे सोचते हैं और आपके पार्टनर को क्या सलाह देनी चाहिए। याद रखें, रिश्ते में भरोसा और बातचीत से बहुत कुछ सुलझ जाता है। जब रिश्ता लंबा चलता है लेकिन शादी की बात पर रुक जाता है, तो कई परेशानियां सामने आती हैं। ये वो मुश्किलें हैं जो आपके मन को परेशान करती हैं और रिश्ते पर असर डालती हैं।

वो हां भी नहीं करता और ना भी नहीं करता। कहीं उसे कमिटमेंट फोबिया तो नहीं। मैं कैसे बात करूं? क्या मुझे वेट करना चाहिए या अपने भविष्य के बारे में सख्त फैसला लेना चाहिए?

जवाबः सबसे पहले तो आपकी बात सुनकर लगता है कि आप एक मजबूत और समझदार इंसान हैं। 5 साल का रिश्ता चलाना कोई कल्पना करें कि आप अपने बॉयफ्रेंड के साथ एक अच्छा डिनर कर रही हैं और आप शादी का जिक्र करती हैं। वो मुस्कुराकर कहता है, अभी नहीं, बाद में सोचेंगे। लेकिन आपके मन में सवाल उठता है। क्या वो मुझे सिर्फ टाइम पास समझता है? 5 साल के रिश्ते में यह असुरक्षा आपकी रातों की नींद हराम कर सकती है।29 साल की उम्र में ज्यादा जोर देती हैं। अगर उसके घर में तलाक या झगड़े हुए हैं, तो वो शादी से डर सकता है। महिलाएं अक्सर इन अनुभवों से सीखकर बेहतर रिश्ता बनाना चाहती हैं, लेकिन पुरुष इन्हें बहाना बना लेते हैं। वो कहता है कि अभी सही समय नहीं है। यह भी हो सकता है कि वह करियर या खुद पर फोकस करना महिलाएं अक्सर बायोलॉजिकल क्लॉक के बारे में सोचती हैं। फैमिली और दोस्त पूछते हैं, शादी कब कर रही? यह प्रेशर आपको उदास या तनावग्रस्त कर देता है, जबकि पुरुषों के ऊपर यह दबाव कम होता है क्योंकि समाज में उनकी उम्र शादी के लिए ज्यादा फ्लेक्सिबल मानी जाती है। हर बार जब वो अभी समय नहीं कहता है, तो आपको लगता है कि शायद वो कभी तैयार नहीं होगा। यह शक रिश्ते को कमजोर करता है और आप सोचती रहती हैं कि क्या इंतजार करके अपना समय बर्बाद कर रही हूं?यह स्थिति छोटी-छोटी बातों पर बहस में बदल जाती है। आपका मूड खराब रहता है और वो सोचता है कि आप ज्यादा डिमांडिंग हो गई हैं। इससे रिश्ते में इमोशनल कनेक्शन कम हो जाता है। कई पुरुषों को शादी का मतलब जिम्मेदारियां लगता है, घर, बच्चे, फैमिली। वे सोचते हैं कि अभी फ्रीडम एंजॉय कर लें। महिलाएं अक्सर रिश्ते को जल्दी कमिटमेंट में बदलना चाहती हैं क्योंकि वे भावनात्मक सुरक्षा ढूंढती हैं।दिल्ली जैसे शहर में जिंदगी महंगी है। आपका बॉयफ्रेंड शायद सोचता है

कि शादी के बाद पैसे की दिक्कत न हो। पुरुष अक्सर खुद को प्रोवाइडर मानते हैं, जबकि महिलाएं रिश्ते की भावनात्मक मजबूती पर आपकी जिंदगी का हिस्सा है, लेकिन सबकुछ नहीं। अगर वो तैयार नहीं, तो क्या आप खुश रह सकती हैं? आपके पार्टनर के लिए सुझाव- आपका बॉयफ्रेंड भी इस स्थिति में परेशान हो सकता है। यहां उनके लिए कुछ टिप्स- धैर्य रखेंः आपकी फीलिंग्स को समझें और जल्दबाजी न करें। खुलकर बात करेंः अपने डर या कारण बताएं, जैसे फाइनेंशियल चिंता। समझौता करेंः अगर तैयार नहीं, तो वजह बताएं और प्लान शेयर करें।

साथ मिलकर फैसला लेंः यह रिश्ता दोनों का है, अकेले न सोचें। क्या इंतजार करना सही है? समय सब ठीक नहीं करता, बल्कि आपकी कोशिशें करती हैं। अगर 5 साल में वो तैयार नहीं हुआ, तो शायद आगे भी न हो। लेकिन अगर वो प्यार करता है, तो बातचीत से रास्ता निकलेगा। अगर जरूरत हो तो प्रोफेशनल मदद लें। याद रखें कि आपकी खुशी सबसे जरूरी है। 5 साल लंबा रिश्ता तोड़ना आसान नहीं होता, लेकिन अगर शादी आपकी प्राथमिकता है और वो तैयार नहीं है तो आपको सख्त फैसला लेना पड़ सकता है। हजारों लोग आपके जैसे सफर से गुजरे हैं और खुश हैं। खुद पर भरोसा करें और आगे बढ़ें।

जब पूनम से मिलने आधी रात चले जाते थे शत्रुघ्न सिन्हा,शादी में 3 घंटे देर से पहुंचे,रीना रॉय से भी रहा अफेयर

मुंबई। 1971 का दौर। भारत-पाक में जंग जारी थी। कर्फ्यू की वजह से रात को बंबई (अब मुंबई) बिल्कुल शांत हो जाती थी। ऐसी

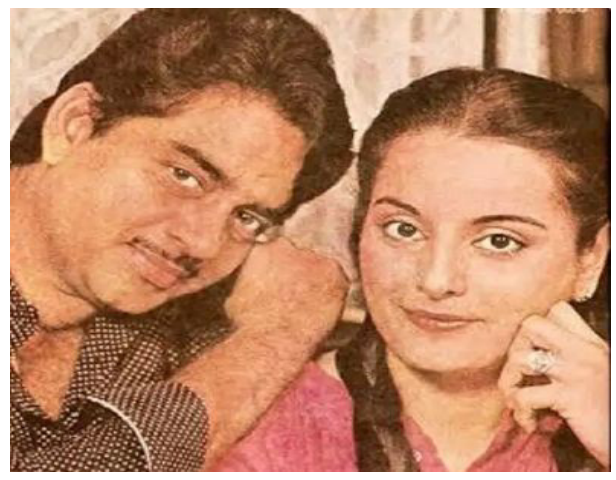

ही एक घुप्प रात को शत्रुघ्न सिन्हा अपनी गर्लफ्रेंड पूनम चंदीरमानी से मिलने उनके घर पहुंच गए। उन्होंने तय कर लिया था कि अगर पूनम के घरवालों ने पकड़ लिया, तो भागकर कोर्ट मैरिज कर लेंगे। इधर इंतजार में पूनम भी दरवाजों में तेल डाल रही थीं, ताकि शत्रुघ्न के आने पर ये आवाज न करें। शत्रुघ्न बताते हैं, 'उस रात क्या होगा, इसके बारे में मैंने बहुत सोचा था, लेकिन जब पूनम से मिला, तो सबसे पहले उन्होंने इतना इंतजार कराने के लिए हल्का थप्पड़ मार दिया।' कहानी में 6 साल पीछे चलते हैं। 1965 में जून की कोई तारीख थी। पटना रेलवे स्टेशन पर 19 साल के शत्रुघ्न सिन्हा बंबई जाने वाली ट्रेन में सवार हुए। उनका एडमिशन पुणे के चर्चित फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एफटीआईआई) में हो गया था। अपनी सीट पर बैठते ही शत्रुघ्न सिन्हा की नजर सामने स्कर्ट पहनी एक सुंदर लड़की पर पड़ी। वह अपने परिवार के साथ एक शादी में पटना आई थी और वापस बंबई लौट रही थी। लेखक भारती एस. प्रधान की किताब, 'एनिथिंग बट खामोशः द शत्रुघ्न सिन्हा बायोग्राफी' में शत्रुघ्न बताते हैं, 'पूनम को देखते ही मैं उनकी खूबसूरती का कायल हो गया था। मैंने देखा कि वे रो रही थीं। शायद उनके साथ आई बुआ ने उन्हें डांटा होगा। मैं भी घर छोड़कर जा रहा था, इसलिए रुआंसा था।' 'शत्रुघ्न अब पूनम से बातचीत की जुगत भिड़ाने लगे। शत्रुघ्न बताते हैं, 'प्रोमी

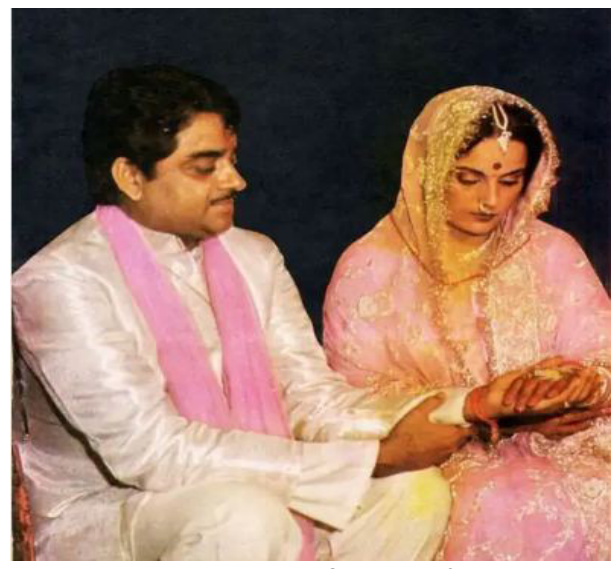

(पूनम का निक नेम) को रोते हुए देख, जिंदगी में पहली बार मैंने एक फिल्मी डायलॉग पर्ची पर लिखा- 'इतने सुंदर चेहरे पर आंखों में आंसू अच्छे नहीं लगते। रोना नहीं।' और इसे उस समय की फेमस माधुरी मैगजीन में रखकर दे दिया। मुझे लगा था कि ऐसा करने से वो मुझे हीरो समझेंगी, लेकिन उन्होंने तो मैगजीन ही खिड़की से बाहर फेंक दी।'' इसके बाद शत्रुघ्न की पूनम से बात करने की हिम्मत नहीं हुई, हालांकि वो इस बात से मन ही मन खुश हो रहे थे कि पूनम ने मैगजीन में चिट्ठी देने वाली बात अपनी बुआ को नहीं बताई। कल्याण स्टेशन पहुंचकर, पूनम अपने घर के लिए निकल गईं और शत्रुघ्न एफटीआईआई, पुणे के लिए दूसरी ट्रेन पकड़ने। 'एनिथिंग बट खामोश' में शत्रुघ्न बताते हैं, 'मुझे लगा था कि जाते हुए वह पलटकर मुझे जरूर देखेगी, जैसा फिल्मों में होता है, लेकिन शायद वह 'मुड़-मुड़ कर न देख मुड़-मुड़ के' गाने से प्रभावित थी, क्योंकि उसने एक बार भी पलटकर नहीं देखा।' दो दिनों के सफर के दौरान पूनम ने भले ही भाव न दिया हो, लेकिन शत्रुघ्न ने उनकी बुआ का भरोसा जीत लिया था। इसलिए जाते वक्त बुआ ने अपने घर का पता दे दिया और घर आने का न्योता भी। दरअसल, पूनम की बुआ के कोई बच्चे नहीं थे, इसलिए उन्होंने अपने भाई से पूनम को गोद ले लिया था। वह उन्हीं के साथ रहती थीं। 3 साल बाद 1968 में पूनम 'मिस यंग इंडिया' बन गईं, लेकिन शत्रुघ्न अभी भी एक स्ट्रगलिंग एक्टर ही थे। पूनम को फिल्मों के ऑफर भी आने लगे। पूनम के मिस इंडिया बनने के बाद सिन्हा उनके घर भी गए, लेकिन वो घर पर नहीं मिलीं। कुछ दिनों बाद शत्रुघ्न काम ढूंढने अंधेरी के एक फिल्म स्टूडियो पहुंचे। उस दिन वहां बहुत भीड़ लगी थी। कोई नई फिल्म शुरू होने वाली थी, इसलिए मीडिया के लोग भी थे। सिन्हा भी उसी भीड़ में शामिल हो गए। थोड़ी देर बाद, एक लड़की शत्रुघ्न से टकराई और बोली 'आई एम वेरी सॉरी।' दोनों ने एक-दूसरे को पहचान लिया और बातें करने लगे। वो लड़की उस फिल्म की हीरोइन पूनम चंदीरमानी थी। शत्रुघ्न के मुताबिक, 'किसी फिल्म की हीरोइन का इस तरह एक स्ट्रगलिंग एक्टर से बात करना बड़ी बात थी। इससे मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने पूनम और अपने बीच एक जुड़ाव महसूस किया।' 1970 के दशक में शत्रुघ्न को भी फिल्में मिलना शुरू हो गईं और दोनों की दोस्ती प्यार में बदल चुकी थी। 1971 में पूनम और शत्रुघ्न सिन्हा की फिल्म 'धरती की गोद में' आई। हालांकि इसमें पूनम हीरोइन और शत्रुघ्न विलेन के किरदार में थे। आगरा में इस फिल्म की शूटिंग के दौरान भीड़ ने हंगामा कर दिया था। लोग पत्थर तक फेंकने लगे थे। इस भगदड़ से बचने के लिए पूनम और शत्रुघ्न एक ही बाथरूम में बंद हो गए थे। धीरे-धीरे पूनम और शत्रुघ्न के अफेयर की बातें होने लगीं, तो पूनम की बुआ को बिल्कुल पसंद नहीं आया। इसलिए जब पूनम और शत्रुघ्न को साथ में एक और फिल्म ऑफर हुई, तो उनकी बुआ ने साफ इनकार कर दिया। पूनम की बुआ उन्हें शत्रुघ्न सिन्हा से मिलने नहीं दे रही थीं और उनकी शादी के लिए सिंधी लड़के तलाशे जा रहे थे, लेकिन अपने दोस्तों और घर में काम करने वाले स्टाफ की मदद से दोनों

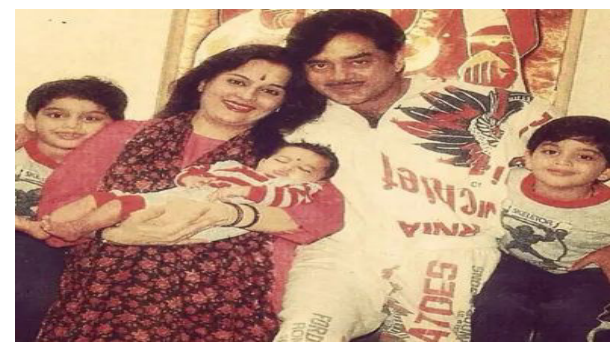

छिपकर मिल लिया करते थे।

शत्रुघ्न फिल्म थिएटर में अपना मुंह ढक कर और काले चश्मे पहनकर पूनम से मिलने जाते। पूनम भी किसी तरह थिएटर आ जातीं। दोनों एक दूसरे को चिट्ठियां लिखते। इस समय तक शत्रुघ्न ने अपनी मां और चचेरी बहन अन्नपूर्णा को भी उनके और पूनम के रिश्ते के बारे में बता दिया था। जब शत्रुघ्न सिन्हा की फिल्में हिट होने लगीं, तो उन्हें लगा कि अब बुआ शादी के लिए मान जाएंगी। उन्होंने अपने बड़े भाई राम और प्रोड्यूसर एन. एन. सिप्पी को रिश्ता मांगने भेजा। एन. एन. सिप्पी को भेजने की वजह यह थी कि वह भी पूनम की तरह सिंधी थे।

हालांकि पूनम की बुआ ने यह कहकर रिश्ता ठुकरा दिया कि- 'अपने भाई को देखो और मेरी बेटी को देखो। मेरी बेटी इतनी गोरी और सुंदर है कि अगर दोनों की कलर फोटो भी ली जाए तो वह ब्लैक एंड व्हाइट आए।' सिन्हा की फिल्मों की सफलता के बाद उन्हें चाहने वालों की गिनती बढ़ती जा रही थी। इसी बीच उनकी जिंदगी में एक दूसरी एक्ट्रेस आईं- रीना रॉय। एक बार एक शादी समारोह में पूनम अपनी बुआ के साथ पहुंची थीं। शत्रुघ्न भी यहां आए हुए थे। इस समय तक शत्रुघ्न सिन्हा बॉलीवुड में बड़े स्टार बन चुके थे। सिन्हा ने पूरी शादी में पूनम और उनकी बुआ का खूब ध्यान रखा। कार्यक्रम खत्म होने के बाद अपनी गाड़ी में खुद ड्राइव करके घर भी छोड़ने गए। करियर के इतने ऊंचे मकाम पर भी शत्रुघ्न का सम्मानजनक व्यवहार बुआ को भा गया। उन्होंने 1973 में आई 'सबक' फिल्म में पूनम को शत्रुघ्न के साथ काम करने से भी नहीं रोका। इधर धीरे-धीरे बॉलीवुड की सफलता और लड़कियों से मिलता अटेंशन, शत्रुघ्न के सिर चढ़ने लगा था। अब वह दोस्तों के साथ शराब भी पीने लगे थे। एनिथिंग बट खामोश में सिन्हा खुद मानते हैं, 'मैं संगत,

स्टारडम और अटेंशन के चक्कर में बहक गया था।' रीना रॉय से उनकी नजदीकी इतनी बढ़ गई थी कि बुआ के शादी के लिए राजी होने के बावजूद उन्होंने पूनम से सारे रिश्ते खत्म कर दिए। 'सबक' की शूटिंग के दौरान भी दोनों एक-दूसरे से बातचीत नहीं करते थे। शत्रुघ्न बताते हैं-'सबक के दौरान मैंने प्रोमी से रिश्ता तोड़ दिया था। वह मेरे लिए कुछ ज्यादा ही अच्छी थी। वह मुझसे बेहतर डिजर्व करती थी।' तीन साल तक शत्रुघ्न और पूनम के बीच कोई बातचीत ही नहीं हुई। ब्रेकअप के बाद भी पूनम शत्रुघ्न सिन्हा की मां के लगातार संपर्क में थीं। वो हर दिन शत्रुघ्न के घर फोन करके उनके स्टाफ से शत्रुघ्न का हाल पूछतीं, उनके खाने और दवा की याद दिलातीं। 'एनिथिंग बट खामोश' में शत्रुघ्न सिन्हा बताते हैं, 'उन दिनों प्रोमी बहुत रोती थी। उनका वजन भी कम हो गया था। वह शाकाहारी बन गई थीं और भगवान में उनकी आस्था बढ़ गई थी।

'फिल्म इंडस्ट्री पूनम और रीना दोनों अभिनेत्रियों की साइलेंट लड़ाई देख रही थी। एक बार पूनम 'एस' लेटर लिखी नोजपिन पहनकर किसी इवेंट में दिखीं तो एक बार रीना रॉय भी दोनों तरफ 'एसएस' लिखे सनग्लास पहने दिखाई दीं। 1980 में एक दिन पूनम और उनकी बुआ शत्रुघ्न सिन्हा के बंगले रामायण में उनकी मां से मिलने पहुंचे। सुबह 11 बजे से शाम के 7 बजे तक तीनों बातें करती रहीं। शत्रुघ्न को कोई अंदाजा नहीं था कि आखिर चल क्या रहा है। शाम को पूनम और बुआ वापस लौट गईं, तो मां ने शत्रुघ्न से सिर्फ एक सवाल किया- वह मेरे लिए ज्यादा ही अच्छी है का क्या मतलब है?' मां की दखलअंदाजी के बाद शत्रुघ्न सिन्हा ने पूनम से शादी करने का फैसला कर लिया। उन्होंने पूनम से पूछा, 'जो कुछ हुआ, उसके बाद भी क्या तुम मुझसे शादी करोगी?' इस पर पूनम ने कहा, 'अगर आप मुझे ठीक तरह से प्रपोज करते हैं, तो मैं जवाब दूंगी।' इसके बाद सिन्हा ने पूनम को रामायण के टेरेस पर घुटनों के बल बैठकर शादी के लिए प्रपोज किया, जिसे पूनम ने स्वीकार कर लिया।उस समय रीना रॉय और शत्रुघ्न सिन्हा के अफेयर के खूब चर्चे थे। ऐसे में उनके पूनम से शादी के फैसले ने सभी को चौंका दिया। शत्रुघ्न ने अपने दोस्त डॉ. उपेंद्र को पूनम से शादी करने की वजह बताई थी। उनके मुताबिक, 'शत्रुघ्न ने मुझे बताया था कि रीना उनसे प्यार करती हैं, लेकिन पूनम उनकी पूजा करती हैं।'जब शत्रुघ्न के दोस्त मुंबई में उनकी और पूनम की शादी के कार्ड बांट रहे थे, तब शत्रुघ्न लंदन में रीना रॉय के साथ स्टेज शो कर रहे थे। शादी के दो दिन पहले तक वे लंदन में ही थे। एक इंटरव्यू में शत्रुघ्न ने बताया था, 'मैं अपनी शादी में तीन घंटे लेट पहुंचा था। पूनम को लग रहा था कि मैं शादी से पीछे तो नहीं हट गयाष्ठ'शादी के बाद भी रीना रॉय के साथ शत्रुघ्न सिन्हा के संबंध खत्म नहीं हुए। एनिथिंग बट खामोश के मुताबिक, 'शादी के बाद भी सिन्हा कई सालों तक रीना से मिला-जुला करते थे। पूनम भी यह बात जानती थीं।' शत्रुघ्न सिन्हा ने खुद एक इंटरव्यू में बताया था कि वे और रीना 7 साल रिलेशनशिप में थे। एक समय तो ऐसा आया था जब शत्रुघ्न सिन्हा के बड़े भाई राम ने उन्हें रीना से दूसरी शादी करने के लिए कह दिया था। हालांकि सिन्हा ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। बाद में रीना ने 1983 में पाकिस्तानी क्रिकेटर मोहसिन खान से शादी कर ली और पाकिस्तान चली गईं। उनकी शादी ज्यादा दिन नहीं चली और 1992 में रीना तलाक लेकर भारत लौट आईं। उन दिनों यह बात खूब चली थी कि रीना को उनकी बेटी की कस्टडी दिलाने और भारत वापस लाने में शत्रुघ्न सिन्हा ने खूब मदद की थी।इस सब के बाद भी शत्रुघ्न और पूनम की शादी को 35 साल हो गए। और इन 35 सालों में वे एक सुखी कपल की तरह ही रहे। शत्रुघ्न सिन्हा के मुताबिक पूनम के सपोर्ट की वजह से ही वे अपने फिल्मी और पॉलिटिकल करियर की ओर ध्यान दे पाए। एनिथिंग बट खामोश में वे बताते हैं, 'यह सच है कि बहुत सी हीरोइनों से मेरी नजदीकियां थीं।

उस समय मैंने पूनम को बहुत दुख पहुंचाया। इसके लिए मैं हमेशा शर्मिंदा रहूंगा।'शादी के 11 साल बाद 1991 में शत्रुघ्न सिन्हा राजनीति में आए। उन्होंने पटना साहिब से बीजेपी के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ा और जीत दर्ज की। 1996 और 1998 में फिर चुनाव लड़ा, लेकिन इस बार उन्हें सफलता नहीं मिल पाई।

2000 में राज्यसभा गए। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में केंद्रीय मंत्री भी रहे। 2009 और 2014 में फिर पटना से लोकसभा चुनाव लड़ा और जीत दर्ज की, लेकिन इसके बाद सिन्हा और बीजेपी में दूरियां पैदा हो गईं। 2019 में वे कांग्रेस में शामिल हुए। इसी समय पूनम की भी राजनीति में एंट्री हुई और उन्होंने समाजवादी पार्टी जॉइन कर ली। शत्रुघ्न पटना से तो पूनम लखनऊ से चुनाव लड़ीं, लेकिन दोनों की हार हुई।

अंतरिम जमानत के बाद जेल से बाहर आए राजपाल यादव,कहा- हर जगह जवाब देने के लिए उपलब्ध हूं

मुंबई। नई दिल्ली में बॉलीवुड एक्टर राजपाल यादव को चेक बाउंस मामले में हाई कोर्ट से अंतरिम जमानत मिलने के बाद तिहाड़ जेल से रिहा कर दिया

गया। मंगलवार को रिहाई की औपचारिकताएं पूरी करने के बाद वह जेल से बाहर आए, जिसके बाद उन्होंने उन्हें मिले लोगों के सपोर्ट का आभार जताया। बता दें कि चेक बाउंस मामले में राजपाल यादव ने 5 फरवरी को दिल्ली की तिहाड़ जेल में सरेंडर किया था। मीडिया से बातचीत में राजपाल यादव ने कानूनी सवालों पर सीधे कमेंट करने से बचते हुए कहा कि पूरी जानकारी के लिए उनके वकील भास्कर उपाध्याय से पूछा जा सकता है। राजपाल यादव ने कहा कि वह पिछले 30 सालों से बॉलीवुड का हिस्सा हैं।

इस दौरान उन्हें इंडस्ट्री और दर्शकों का भरपूर साथ और प्यार मिला, जिसकी बदौलत वह करीब 250 फिल्मों में काम कर सके।उन्होंने कहा कि बीते सालों में अदालत के आदेशों का पालन करते हुए वह नियमित रूप से पेश होते रहे हैं और भविष्य में भी जहां आदेश होगा, वहां उपस्थित रहेंगे।

राजपाल ने अपने फैंस का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सोशल मीडिया पर और उसके बाहर भी उन्हें लोगों का समर्थन मिला है। एक्टर ने कहा कि यदि उनके खिलाफ कोई आरोप है, तो वह 100 प्रतिशत हर जगह जवाब देने के लिए उपलब्ध हैं।

बातचीत के अंत में उन्होंने हाई कोर्ट का धन्यवाद करते हुए कहा कि अदालत ने उन्हें अपनी बात रखने का अवसर दिया। साल 2010 में राजपाल यादव ने फिल्म अता पता लापता बनाने के लिए प्राइवेट कंपनी मुरली प्रोजेक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड से 5 करोड़ रुपए का कर्ज लिया था। ये फिल्म फ्लॉप रही और राजपाल यादव को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा।

राजपाल समय रहते कर्ज की रकम नहीं लौटा सके। लोन लेते समय राजपाल ने जो चेक कंपनी को दिए थे वो बाउंस हो गए, जिसके बाद एक्टर के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई गई।

दोनों पार्टी के बीच समझौते के बावजूद पूरी पेमेंट नहीं हुई और समय के साथ ब्याज जुड़ता गया, जिससे कुल कर्ज काफी बढ़ गया। साल 2018 में दिल्ली की कड़कड़डूमा कोर्ट ने राजपाल यादव को दोषी ठहराया और उन्हें छह महीने की जेल की सजा सुनाई। इसके बाद उन्होंने हाई कोर्ट में अपील की, जहां उन्हें कई बार राहत मिली, क्योंकि उन्होंने भुगतान और समझौते का भरोसा दिया था।

हालांकि, फरवरी की शुरुआत में दिल्ली हाई कोर्ट ने एक्टर को पूर्व में दी गई रियायतों और समय सीमा को बढ़ाने से इनकार कर दिया था।

कोर्ट ने उन्हें 4 फरवरी तक सरेंडर करने का आदेश दिया था, जिसके बाद उन्होंने 5 फरवरी को शाम लगभग 4 बजे आत्मसमर्पण किया।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज से प्रकाशित।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।